डेनमार्क की लोक कथाऐं–1

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Denmark Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Denmark-1)
Cover Page picture: A Scene of Denmark, Europe
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Norse Countries

Norse, or Nordic, or Scandinavian countries include 5 countries of Europe – Denmark, Finland, Iceland, Norway, and Sweden

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

डेनमार्क की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से पहले आता है। यूरोप की बहुत सारी लोक कथाऐं अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाती हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में काफी मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं ही हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है क्योंकि इनके बिना दुनियाँ का लोक कथा साहित्य अधूरा लगता है। इस महाद्वीप में कुल मिला कर **50** से ज़्यादा देश है पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं जैसे ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं।

इस महाद्वीप के सुदूर उत्तर में स्थित पाँच देशों को स्कैन्डेनैवियन या नौर्स या नौरडिक देशों[1] के नाम से पुकारा जाता है। इन पाँच देशों के नाम हैं – डेनमार्क, आइसलैंड, फ़िनलैंड, नौर्वे और स्वीडन। इन देशों की संस्कृति यूरोप के दूसरे देशों की संस्कृति से बिल्कुल अलग है।

इस पुस्तक में हम इन्हीं पाँच देशों में से एक देश डेनमार्क की लोक कथाऐं दे रहे हैं। क्योंकि इन देशों की लोक कथाऐं भी काफी हैं इसलिये हम इसके पहले संकलन में केवल डेनमार्क की लोक कथाऐं ही दे रहे हैं – "डेनमार्क की लोक कथाऐं–1"। यह देश अपने माँस और मक्खन के उत्पादन के लिये बहुत प्रसिद्ध है।

यहाँ के देशों की लोक कथाओं में "उत्तरी हवा" भी एक मुख्य चरित्र है। इन देशों में इसकी कई कथाऐं प्रचलित हैं।

आशा है इस लोक कथा संग्रह का हिन्दी साहित्य जगत में भव्य स्वागत होगा।

---

[1] The Scandinavian or Nordic or Norse countries are a geographical and cultural region of five countries – Denmmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden in the far Northern Europe and North Atlantic. Politically they do not form a separate entity.

संसार के सात महाद्वीप
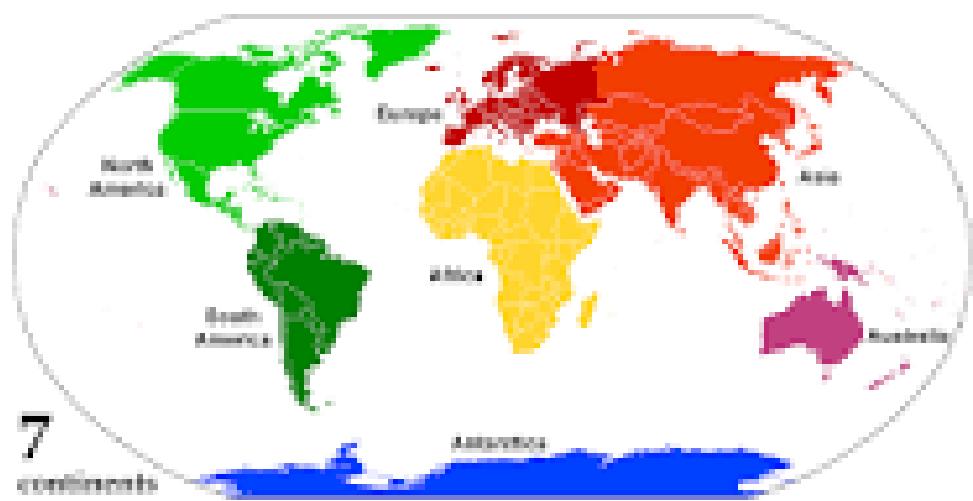
1 सबसे अच्छी इच्छा[2]

कुछ समय पुरानी बात है कि डेनमार्क देश में तीन भाई रहते थे। यह तो पता नहीं कि यह सब कैसे हुआ पर एक बार उन तीनों भाइयों को एक एक वरदान मिला।

दोनों बड़े भाइयों ने तो यह वरदान माँगने में ज़रा भी देर नहीं की। उन्होंने तुरन्त ही यह इच्छा प्रगट की कि वे जब भी अपनी जेब में हाथ डालें तो उन्हें उसमें धन मिल जाये, यानी कि जब भी उनको पैसे की जरूरत हो तो उनकी जेब में हमेशा पैसे रहें।

लेकिन सबसे छोटा भाई जिसका नाम बूट्स[3] था, उसने किसी दूसरे प्रकार की ही इच्छा प्रकट की। उसकी इच्छा थी कि जो भी स्त्री उसे देखे वही उसे प्रेम करने लगे। उन सबकी इच्छा पूरी हुई। पर कैसे□इसके लिये अब आगे की कहानी सुनो –

इन इच्छाओं के पाने के बाद दोनों बड़े भाइयों ने दुनियाँ देखने का प्रोग्राम बनाया। बूट्स ने उनसे पूछा कि क्या वह भी उनके साथ दुनियाँ घूमने चल सकता था।

परन्तु उन्होंने उसकी एक न सुनी और बोले — "हम तो जहाँ भी जायेंगे राजकुमार समझे जायेंगे मगर तुम एक बेवकूफ लड़के

[2] The Best Wish – a folktale from Denmark, Europe
[3] Boots – name of the third brother

समझे जाओगे। तुम्हारे पास तो एक पैनी भी नहीं है और न कभी होगी। और फिर तुम्हारी देखभाल भी कौन करेगा?"

पर बूट्स ने जिद की "कुछ भी सही, मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगा।"

काफी प्रार्थना के बाद वे दोनों बड़े भाई उसको अपने साथ ले चलने के लिये मान गये पर साथ में उन्होंने एक शर्त लगा दी कि वह उनका नौकर बन कर उनके साथ चलेगा। बूट्स मान गया सो वे तीनों चल पड़े।

एक दो दिन का सफर करने के बाद वे लोग एक सराय में आये।

दोनों बड़े भाइयों के पास तो खूब पैसा था सो उन्होंने बड़े शानदार खाने का आर्डर दिया, जैसे मुर्गा, मछली, गोश्त, ब्रान्डी आदि, मगर बूट्स को किसी ने अन्दर भी नहीं जाने दिया। उसे गाड़ी घोड़े और सामान की देखभाल के लिये सराय के बाहर ही छोड़ दिया गया।

उसने घोड़ों को अस्तबल में बाँधा, गाड़ी को धोया और फिर घोड़ों के खाने के लिये घास ले कर गया। जब वह यह सब कर रहा था तो सराय के मालिक की पत्नी उसे खिड़की से देख रही थी।

उसकी आँखें उस सुन्दर लड़के के चेहरे से हट ही नहीं पा रही थीं हालाँकि वह तो मेहमानों का केवल नौकर ही था। जितनी

अधिक देर तक वह उसे देखती रही उसे वह उतना ही अधिक सुन्दर दिखायी दे रहा था।

सराय का मालिक बोला — "अरे, तुम वहाँ खिड़की पर खड़ी खड़ी क्या कर रही हो, ज़रा जा कर देखो कि रसोई में खाना ठीक से बन रहा है कि नहीं। हमारे शाही मेहमान खाने का इन्तजार कर रहे हैं।"

पत्नी उधर से अपनी आँख हटाये बिना ही बोली — "ओह, अगर उनको खाना पसन्द नहीं भी आया तो न सही, मैं क्या करूँ। मैंने अभी तक इतना सुन्दर लड़का पहले कभी नहीं देखा। क्यों न हम उसको रसोई में बुला कर कुछ अच्छा सा खाना उसको खाने के लिये दे दें। ऐसा लगता है कि बेचारा काफी मेहनत करता है।"

"क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? रसोई में जाओ और अपना काम देखो।"

पत्नी ने पति से लड़ना ठीक नहीं समझा पर उसे एक विचार आया और वह एक कीमती चीज़ अपने ऐप्रन में छिपा कर सराय से बाहर आयी।

यह कीमती चीज़ थी एक कैंची। यह एक जादुई कैंची थी। इस जादुई कैंची का काम यह था कि इसको हवा में चलाने से जो भी कपड़ा जिस रंग में भी सोचो उसी रंग में कट जाता था।

वह बूट्स के पास आयी और बोली — "यह कैंची तुम रखो क्योंकि तुम बहुत सुन्दर हो। इस कैंची की खासियत यह है कि इसको हवा में चलाने से जो भी कपड़ा जिस रंग में भी सोचो उसी रंग में कट जाता है।"

बूट्स ने उसे नम्रता से धन्यवाद दिया और उससे वह कैंची ले कर अपनी जेब में रख ली।

बूट्स के भाइयों का जब खाना खत्म हो गया तो वे फिर चलने के लिये तैयार हुए और बूट्स गाड़ी के पीछे नौकर की जगह पर खड़ा हुआ।

फिर वे एक दूसरी सराय में आये। वे दोनों तो सराय के अन्दर चले गये और बूट्स बाहर ही सामान आदि की देखभाल करने के लिये खड़ा रहा।

भाइयों ने बूट्स को बताया कि "अगर कोई तुमसे यह पूछे कि तुम किसके नौकर हो तो तुम कहना कि "मैं दो विदेशी राजकुमारों का नौकर हूँ।"

"ठीक है।"

इस बार भी वही हुआ जो पिछली सराय में हुआ था। सराय के मालिक की पत्नी ने जब उसे देखा तो वह तो बस उसे देखती ही रह गयी।

पति ने जब अपनी पत्नी को बाहर झाँकते देखा तो उसने भी उससे कहा — "वहाँ तुम दरवाजे पर क्यों खड़ी हो? जाओ और

जा कर अपनी रसोई देखो। हमारी सराय में रोज रोज विदेशी राजकुमार नहीं आया करते।"

और जब वह अन्दर नहीं गयी तो वह उसको उसकी गर्दन पकड़ कर अन्दर ले गया।

इस बार सराय के मालिक की पत्नी ने उसको एक जादुई मेजपोश दिया जिसकी खूबी यह थी कि उसे बिछाने पर जो भी खाना सोचो वही खाना उस मेजपोश पर आ जाता था।

तीसरी सराय में भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही उस तीसरी सराय के मालिक की पत्नी ने बूट्स को देखा तो वह भी उसकी तरफ आकर्षित हो गयी।

उसने उसको लकड़ी की एक टोंटी दी जिसकी खूबी यह थी कि उसे खोलने पर जो भी पीने की चीज़ चाहो वही मिल सकती थी।

बूट्स ने उसको भी नम्रता पूर्वक धन्यवाद दिया और वह टोंटी उससे ले कर अपनी जेब में रख ली। एक बार फिर से वे लोग कड़ी सर्दी में अपने सफर पर चल दिये।

अबकी बार वे एक राजा के महल में पहुँचे। दोनों बड़े भाइयों ने अपना परिचय बादशाह के लड़कों के रूप में दिया क्योंकि उनके पास खूब पैसा था और बहुत कीमती कपड़े थे। राजा ने उनका

बहुत ज़ोर शोर से स्वागत किया और राजमहल में उन्हें इज़्ज़त से ठहराया गया।

मगर बूट्स बेचारा उन्हीं फटे कपड़ों में था जिनको पहन कर वह घर से निकला था। उस बेचारे की जेब में तो एक पैनी भी नहीं थी।

उसको राजा के नौकरों ने नाव में सवार करा कर एक टापू पर भेज दिया क्योंकि वहाँ का यही नियम था कि जो भी गरीब या भिखारी वहाँ आता उसको उसी टापू पर भेज दिया जाता।

राजा ने यह नियम इसलिये बना रखा था क्योंकि वह अपने स्वादिष्ट और अच्छे खाने और पहनने के बढ़िया कपड़ों को गरीबों की नजर से गन्दा नहीं करना चाहता था।

बचा हुआ खाना जो केवल ज़िन्दा रहने के लिये ही काफी होता था भिखारियों से और गरीबों से भरे उस टापू पर भेज दिया जाता था।

घमंडी भाइयों ने अपने भाई को ऐसी जगह जाते देखा मगर अनदेखा कर दिया, बल्कि वे लोग खुश ही हुए कि अच्छा हुआ उन्हें उससे छुटकारा मिल गया।

जब बूट्स उस टापू पर पहुँचा और उसने वहाँ के लोगों की हालत देखी तो उसे अपनी तीनों कीमती चीज़ों की याद आयी। सबसे पहले उसने कैंची निकाली और उसे हवा में चलाना शुरू कर दिया और हवा में से बढ़िया बढ़िया कपड़े कट कट कर गिरने लगे।

जल्दी ही भिखारियों के पास राजा और उन घमंडी भाइयों से भी अधिक कीमती और सुन्दर कपड़े आ गये। उन कपड़ों को पहन कर वे सब बहुत खुश हुए और नाचने लगे पर वे अब अपनी भूख के लिये क्या करें।

अब बूट्स ने अपना मेजपोश निकाला और उसे बिछा दिया। अब क्या था नाम लेते ही मेजपोश पर तरह तरह के स्वाददार खानों का ढेर लग गया।

भिखारियों ने ऐसा खाना कभी ज़िन्दगी में नहीं देखा था। उन्होंने खूब खाया और खूब खिलाया। ऐसी दावत तो राजा के महल में भी शायद कभी नहीं हुई होगी जैसी उन भिखारियों के टापू पर हो रही थी।

"अब तुम्हें प्यास भी लग रही होगी, सो लो जो चाहो पियो।" कह कर बूट्स ने अपनी लकड़ी की टोंटी निकाली और उसे खोल दिया। तरह तरह की शराब उसमें से निकलने लगी।

इस प्रकार भिखारियों ने बूट्स की मेहरबानी से वह सब कुछ पाया जो किसी राजा को भी नसीब होना मुश्किल था। क्या तुम सोच सकते हो कि यह सब कुछ देख कर वहाँ क्या खुशियाँ मनायीं जा रही होंगी?

अगली सुबह राजा के नौकर भिखारियों के लिये खाना ले कर आये। वे दलिया आदि की खुरचनें, कुछ पनीर के टुकड़े और

डबल रोटी के सूखे टुकड़े लाये थे। लेकिन आज भिखारियों ने उनको छुआ तक नहीं।

यह देख कर राजा के नौकरों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिस खाने के ऊपर वे रोज टूट पड़ते थे आज वे उसको छूने भी नहीं आये।

लेकिन इससे भी ज्यादा आश्चर्य उन्हें तब हुआ जब उन्होंने देखा कि सारे भिखारी राजकुमारों जैसे शाही कपड़े पहने हुए हैं। राजा के नौकरों को लगा कि वे शायद किसी गलत टापू पर आ गये हैं। पर नहीं, यह तो वही टापू था जिस पर वे रोज आते थे।

फिर उन्होंने सोचा कि शायद यह कल वाले भिखारी की करामात रही हो। पर यह सब उसने कैसे किया होगा यह उनके दिमाग में नहीं आया। वे महल लौट गये और उन्होंने टापू के बारे में कई सारी बातें राजा को बतायीं।

एक बोला — "उनको इतना घमंड हो गया है कि उन्होंने आज के खाने को छुआ तक नहीं।"

दूसरा बोला — "उस कल वाले लड़के ने सबको शाही कपड़े पहनने को दे दिये हैं। टापू पर रहने वालों का कहना है कि उस लड़के के पास एक ऐसी कैंची है जो हवा में चलाने से सिल्क और साटन के कपड़े काटती है।"

तीसरा बोला — "उनके पास बहुत तरह का खाना और शराब पड़ी थी इसलिये उन्होंने यह खाना छुआ तक नहीं।"

एक और बोला — "और मैंने तो उस नये भिखारी की जेब में एक टोंटी जैसी चीज़ भी देखी थी।"

राजा के एक बेटी थी। उसके कानों में भी ये बातें पड़ीं तो उसके मन में इस लड़के को देखने की इच्छा हो आयी कि अगर वह कैंची उसे बेच दे तो वह भी सिल्क और साटन के कपड़े पहन पायेगी।

उसने अपने पिता को चैन नहीं लेने दिया और राजा को उस लड़के को बुलाने के लिये एक आदमी उस टापू पर भेजना ही पड़ा।

जब वह लड़का महल में आया तो राजकुमारी ने देखा कि वह किसी राजकुमार से कम नहीं लग रहा था। उसने पूछा क्या यह सच है कि उसके पास जादू की कैंची है?

बूट्स बोला कि हॉ यह सच है कि उसके पास जादू की कैंची है। उसने अपनी जेब से जादू की कैचीं निकाली और हवा में चलाने लगा। सिल्क, साटन और मखमल के कपड़ों के ढेर लग गये, पीले, हरे, गुलाबी, नीले।

राजकुमारी ने कहा — "यह कैंची हमें बेच दो। तुम जो चाहोगे हम तुम्हें वही देंगे।"

बूट्स ने कहा — "नहीं, मैं इसे नहीं बेच सकता क्योंकि ऐसी कैंची मुझे दोबारा नहीं मिल सकती।"

जब वे लोग आपस में सौदेबाजी कर रहे थे तो राजकुमारी के साथ भी वही हुआ जो उन तीनों स्त्रियों यानी सराय के मालिकों की पत्नियों के साथ हुआ था।

उसे लगा कि इतना सुन्दर लड़का तो उसने पहले कभी देखा ही नहीं था। उसे लगा कि उस लड़के के बाल पीली साटन से भी ज़्यादा पीले हैं, उसकी ऑखें नीली मखमल से भी ज़्यादा नीली हैं और उसके गाल गुलाबी सिल्क से भी ज़्यादा गुलाबी हैं।

वह उसको जाने नहीं देना चाहती थी सो उसने सौदा छोड़ कर उससे कैंची देने के लिये प्रार्थना करनी शुरू कर दी जो बूट्स उसको किसी तरह भी देने के लिये राजी नहीं था। उसने उस लड़के से पूछा कि आखिर तुम्हें इसके लिये चाहिये क्या।

बूट्स ने कहा — "मैं अगर एक रात तुम्हारे कमरे के दरवाजे पर फर्श पर सो जाऊँ तो यह कैंची मैं तुम्हें ऐसे ही दे दूँगा। मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा लेकिन अगर तुम्हें मुझसे डर लगे तो तुम अपने भरोसे के दो चौकीदार रख सकती हो और रात भर कमरे में रोशनी भी रहने दे सकती हो।"

राजकुमारी को इसमें कोई परेशानी नहीं थी। सो बूट्स राजकुमारी के कमरे के दरवाजे के पास फर्श पर रात भर सोया, दो चौकीदार वहाँ रात भर रहे और कमरे में रोशनी रही।

पर राजकुमारी को नींद नहीं आयी क्योंकि वह जब भी अपनी ऑखें बन्द करती उसके सामने बूट्स की सूरत नाचने लगती और

फिर वह अपनी ऑखें खोल लेती। रात भर यही चलता रहा। वह उसे उन सब लड़कों से सुन्दर लग रहा था जो अब तक उससे शादी के उम्मीदवार रह चुके थे।

अगले दिन राजकुमारी ने कैंची ले ली और बूट्स को भिखारियों के टापू पर वापस भेज दिया। अब उसे कैंची से कोई काम नहीं था बस उसके मन में तो बूट्स की सुन्दर सूरत बसी हुई थी।

सो अब उसने उस अच्छे खाने के बारे में सोचा जो उस टापू पर बूट्स ने वहॉ के भिखारियों को दिया था। वह उसकी तह तक भी पहॅुचना चाहती थी। सो बूट्स को फिर महल में लाया गया।

जब राजकुमारी ने उन बढ़िया खानों के बारे में उससे पूछा तो उसने उसको मेजपोश के बारे में बताया और साथ में यह भी कहा कि वह उसको बेचेगा नहीं, लेकिन अपनी पुरानी शर्त पर उसको ऐसे ही दे सकता हैं।

राजकुमारी राजी हो गयी और बूट्स पहले दिन की तरह से फिर वैसे ही राजकुमारी के कमरे के दरवाजे के पास फर्श पर सोया।

इस रात राजकुमारी को और भी कम नींद आयी। वह रात भर बूट्स का चेहरा अपनी ऑखों के सामने देखती रही और फिर भी उसे रात छोटी लगी। अगले दिन बूट्स ने अपना जादू का मेजपोश राजकुमारी को दे दिया।

राजकुमारी ने राजा से बूट्स को महल में रखने की जिद की तो राजा ने कहा — "किसी चीज़ की कोई हद भी तो होती है, हम इस तरीके से उसे यहाँ नहीं रख सकते। उसे टापू पर जाना ही होगा।"

और अगले दिन राजकुमारी की इच्छा के खिलाफ उसको फिर उसी टापू पर भेज दिया गया। जाते जाते राजकुमारी से उसने कहा कि उसको उन दो राजकुमारों से अच्छा व्यवहार करना चाहिये जो उनके महल में ठहरे हुए हैं।

अबकी बार राजकुमारी को उसकी शराब की याद आयी तो वह फिर अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी, उसके पास अभी एक चीज़ और है जो मेरे पास होनी चाहिये इसलिये मेहरबानी कर के उसे एक बार और बुला दीजिये।"

राजा ने अनमने मन से उसको बुलवा दिया। इस बार जब बूट्स आया तो राजा ने भी उनकी बातें सुनी।

राजकुमारी ने पूछा — "क्या तुम्हारे पास कोई जादुई टोंटी भी है?"

बूट्स ने फिर वही जवाब दिया — "हाँ है। अगर राजा मुझे अपना आधा राज्य भी दे दें तो भी मैं उसे नहीं बेचूँगा पर अगर तुम मुझसे शादी करने को तैयार हो तो मैं तुमको वह ऐसे ही दे सकता हूँ।"

राजकुमारी मुँह फेर कर हँसी। फिर उसने अपने पिता की ओर देखा। पिता ने भी अपनी बेटी की ओर देखा तो उसको लगा कि उसकी बेटी इस लड़के को प्यार करती थी।

राजा ने बेटी से कहा — "ठीक है, हम तुम्हारी शादी इस लड़के से कर देंगे क्योंकि इसके पास ऐसी चीज़ें हैं जिनकी वजह से वह हमारे जितना ही धनी है।"

बस फिर क्या था बूट्स और राजकुमारी की शादी हो गयी। राजा ने अपना आधा राज्य उन दोनों को दे दिया। उसके भाइयों को भिखारियों के टापू पर भेज दिया गया। वे वहाँ उस टापू पर धन का क्या करते क्योंकि वहाँ तो खरीदने को कुछ था ही नहीं।

अगर बूट्स ने मेहरबानी कर के कोई नाव उन्हें लेने नहीं भेजी होगी तो हमें यकीन है कि वे लोग अभी भी वहीं होंगे। पर हम आशा करते हैं कि बूट्स ने उन्हें जरूर माफ कर दिया होगा।

पर जब तक वहाँ बूट्स का राज्य रहा उसने और उसकी रानी ने फिर किसी और को उस टापू पर नहीं भेजा।

2 आश्चर्यजनक बर्तन[4]

एक बार की बात है कि डेनमार्क देश में एक आदमी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ एक छोटे से घर में रहता था। वे बहुत मेहनत करते थे और बहुत ही सादा सी ज़िन्दगी गुजारते थे।
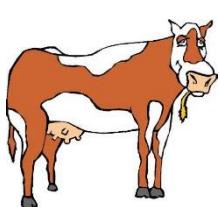
उनके खेतों पर उनकी सहायता करने के लिये उनके पास एक घोड़ा था। ताजा अंडों के लिये उनके पास कुछ मुर्गियॉ थीं। और उनके पास एक गाय थी जो उनके बच्चों के पीने के लिये काफी दूध दे देती थी और थोड़ा सा मक्खन भी।

उनके खेत में उनकी जरूरत को लायक गेंहू उग जाता था जिससे वे अपने घर के लिये रोटी बना लेते थे।

इस तरह गरीब होने के बावजूद वे खुश थे। फिर एक दिन वह हो गया जिसने उनकी ज़िन्दगी ही पलट दी।

उनके गॉव में एक बहुत ही अमीर और ताकतवर आदमी आया और उसने उन सबकी जमीनें ले ली। उसने उनसे उनके अपने ही घर में रहने का किराया लेना शुरू कर दिया। और उनका किराया भी बहुत ज़्यादा था। हालॉकि वह आदमी पहले से ही बहुत अमीर था पर वह और अमीर बनना चाहता था।

---

[4] The Wonderful Pot - a folktale from Denmark, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=218
Collected and retold by Mike Lockett

अपने घर में से न निकाले जाने के लिये उस आदमी और उसकी पत्नी ने उनके पास जो कुछ भी था करीब करीब सारा कुछ बेच दिया था।

उन्होंने अपनी मुर्गियाँ बेच दी थीं, उन्होंने अपना घोड़ा बेच दिया था। अब उस घर को अपने पास रखने के लिये गाय को बेचने की बारी थी।

सो उस आदमी ने अपनी गाय के गले में एक रस्सी बाँधी और दुखी मन से उसको बेचने के लिये ले चला।

सड़क पर एक अजनबी जा रहा था। उस अजनबी ने उस आदमी से पूछा — "क्या तुम यह गाय बेचने के लिये ले कर जा रहे हो?"

आदमी बोला — "हाँ, तुम इसका कितना दाम दोगे? मुझे यह पैसा अपने घर का किराया और अपने परिवार के लिये खाना खरीदने के लिये चाहिये।"

वह अजनबी बोला — "मैं अपना यह करामाती बर्तन तुमको इस गाय के बदले में देने को तैयार हूँ। यह बर्तन तुमको हर चीज़ देगा जो भी तुम इससे माँगोगे। यह बहुत ही आश्चर्यजनक बर्तन है।"

किसान ने उस बर्तन को देखा तो उसकी तीन टाँगें थीं, वह बहुत गन्दा था, और देखने में तो वह कुछ खास आश्चर्यजनक बर्तन भी नहीं लग रहा था।

वह उसको अभी खड़ा खड़ा देख ही रहा था कि वह बर्तन बोला — "खरीद लो मुझे, तुम जो भी चाहोगे वह तुम्हें मिल जायेगा।"

यह सुनते ही किसान बोला — "अरे यह तो बोलता भी है तब तो यह वाकई आश्चर्यजनक है।"

उसने खुशी खुशी अपनी गाय उस अजनबी को दे दी और उस गाय के बदले में वह बर्तन खरीद कर उसको अपने घर ले गया।

घर पहुँचते ही उसकी पत्नी ने बर्तन की तरफ देखते हुए पूछा — "कितने पैसे मिले गाय के? क्या इतने पैसे मिल गये कि हम अपने मकान का किराया दे सकें और परिवार के लिये खाना खरीद सकें?"

उसके पति ने कहा — "मैं उस गाय के बदले में यह बर्तन ले आया हूँ।"

पत्नी बोली — "लगता है तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। यह बर्तन तो इतना पुराना है कि इसमें तो हम अपना खाना भी नहीं पका सकते। अब हम क्या करेंगे?"

बर्तन बोला — "तुम मुझे साफ करो और आग पर रखो तो तुमको वह सब कुछ मिल जायेगा जो तुम्हें चाहिये।"

पत्नी तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी। यह बर्तन तो बोलता है तो फिर यह यकीनन आश्चर्यजनक भी होगा। उसने तुरन्त ही बर्तन साफ किया और उसे आग पर रख दिया।

बर्तन बोला — "मैं भागता हॅू, मैं भागता हॅू।"

पत्नी ने आश्चर्य से पूछा — "अरे तुम भागते कहॉ हो?"

बर्तन बोला — "मैं तुम लोगों के पेट भरने के लिये बाहर भागता हॅू।"

और इससे पहले कि पत्नी उसको रोक सके वह यह कह कर चूल्हे पर से उतर कर दरवाजे से बाहर भागा और सड़क पर निकल गया। पत्नी तो उसको भागता हुआ देख कर देखती की देखती ही रह गयी।

वह अपनी तीन छोटी टॉगों पर भी पत्नी की दो लम्बी टॉगों से भी कहीं ज़्यादा तेज़ी से भाग रहा था। वह बर्तन उस अमीर आदमी के घर में घुस गया जिसने गॉव वालों की जमीनें ले ली थीं और उसकी रसोई में चला गया।

अमीर आदमी की पत्नी ने उस बर्तन को देखा तो बोली — "आहा, लगता है कि मेरे पति ने मेरे लिये यह नया बर्तन खरीदा है। मैं इसमें आज एक नयी तरह की खीर बनाऊॅगी। मैं अपने अमीर परिवार के लिये बहुत ही बढ़िया स्वादिष्ट खीर बनाऊॅगी।"

उस अमीर आदमी की पत्नी ने खीर बनाने के लिये उस बर्तन में आटा, चीनी, मक्खन, किशमिश और बादाम आदि डाले। वह उनको चला कर आग पर रखने ही वाली थी कि बर्तन बोला — "मैं भागता हॅू, मैं भागता हॅू।"

यह कहता हुआ वह दरवाजे से बाहर निकला और सड़क पर आ गया। सब आने जाने वालों और गाड़ियों को हटाता हुआ वह भागा चला जा रहा था। अमीर आदमी की पत्नी तो बस उसको देखती ही रह गयी। वह तो उससे यह भी न पूछ सकी कि "तुम कहाँ भाग रहे हो?"

भागता भागता वह बर्तन उस गरीब आदमी के घर आ गया। गरीब परिवार ने जब उस बर्तन को अपने घर के दरवाजे में घुसते हुए देखा तो वह तो बहुत खुश हो गया।

उसने बर्तन में झाँक कर देखा तो वह बर्तन तो बहुत ही बढ़िया स्वादिष्ट खुशबूदार खीर से भरा हुआ था। जब वह बर्तन सीढ़ियाँ चढ़ रहा था तो वे आपस में बोले — "देखो न यह कितना आश्चर्यजनक बर्तन है।" और वह बर्तन जा कर फिर से चूल्हे पर बैठ गया।

उसमें परिवार के खाने के लिये बहुत सारी खीर थी। उनके अभी के खाने के बाद भी वह खीर उनके हफ्ते भर के लिये और पड़ोसियों को खिलाने के लिये भी बहुत थी।

अगले दिन उस बर्तन ने फिर कहा — "मुझे साफ करो और आग पर रखो।"

पति पत्नी दोनों ने मिल कर उस बर्तन को फिर से घिस घिस कर चमका कर साफ किया। साफ कर के उन्होंने उसे फिर आग पर रखा तो वह फिर बोला — "मैं भागता हूँ, मैं भागता हूँ।"

पति पत्नी ने पूछा — "अरे तुम कहाँ भागे जाते हो?"

बर्तन बोला — "मैं तुम्हारे अनाज रखने की जगह भरने के लिये भागा जाता हूँ।"

और यह कह कर वह फिर घर से बाहर सड़क पर भाग गया। वह फिर उसी अमीर आदमी के अनाजघर में गया और जा कर उसके दरवाजे पर बैठ गया।

वहाँ के एक काम करने वाले ने उस बर्तन को देखा तो बोला — "अरे इस चमकते हुए काले लोहे के बर्तन को तो देखो कितना सुन्दर है यह। देखते हैं कि इसमें कितना गेंहू आता है।"

कह कर उन्होंने उस बर्तन में एक बुशैल[5] गेंहू पलट दिया। इतना गेहूँ पलटने के बाद वे यह सोच रहे थे कि शायद वह भर जायेगा और उसमें से गेंहू बाहर गिर पड़ेगा पर उनके आश्चर्य का तो ठिकाना ही न रहा जब उन्होंने देखा कि उतने गेहूँ ने तो केवल उसकी तली ही छुई थी। सो वे उसमें गेंहू भरते गये और भरते गये और जल्दी ही अनाजघर खाली हो गया।

बस तभी वह बर्तन बोला — "मैं भागता हूँ, मैं भागता हूँ।" और वह बर्तन तो उन काम करने वालों को भी वहीं छोड़ कर सड़क पर भागा चला गया।

[5] A Bushel is about 36 Kilograms, or by old Indian measure about one mound – 40 Ser. See the measure's picture above.

भागा भागा वह फिर से उस गरीब परिवार के घर आ गया और उनके अनाजघर में घुस गया। पति यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ और उसने अपनी पत्नी को बुला कर उसे दिखाया।

दोनों ने मिल कर उस बर्तन का गेंहू अपने अनाजघर में खाली कर लिया। अब तो उनके पास अपने लिये ही साल भर का खाना मौजूद नहीं था बल्कि उसमें से बहुत सारा गेंहू उन्होंने अपने पड़ोसियों को भी बॉट दिया।

कितना अच्छा बर्तन था वह?

अगले दिन उस बर्तन ने फिर कहा — "मुझे साफ करो और आग पर रखो।"

पति पत्नी दोनों ने मिल कर फिर इस बर्तन को घिस घिस कर चमका कर साफ किया। साफ कर के उन्होंने उसे फिर आग पर रखा तो वह फिर बोला — "मैं भागता हूँ, मैं भागता हूँ।"

पति पत्नी दोनों ने फिर पूछा — "अरे तुम कहॉ भागे जाते हो?"

बर्तन बोला — "मैं तुम्हारे मकान का किराया देने जाता हूँ।"

अमीर आदमी के पास बहुत पैसा था। उस पैसे को रखने और गिनने के लिये उसके पास एक अलग घर था।

सो वह बर्तन उसके उस पैसे वाले घर तक पहुँच गया जिसमें वह अपना पैसा रखता था। वहॉ वह अमीर आदमी अपने उस घर

का दरवाजा खोल कर अपना पैसा गिनने के लिये अन्दर जा रहा था।

बर्तन उसको पीछे छोड़ कर आगे निकल गया और फर्श पर उस आदमी के पास ही बैठ गया जहाँ वह पैसे गिनने वाला था। अमीर आदमी ने सोचा ऐसा लगता है कि मेरी पत्नी ने मेरे पैसे रखने के लिये कोई नया बर्तन खरीदा है। वह बहुत खुश हुआ।

वह उन पैसों को गिनने लगा जो उसने पिछले महीने कमाये थे और उन पैसों को गिन गिन कर वह उस बर्तन में डालने लगा। धीरे धीरे वह बर्तन भर गया। अब वह आदमी वहाँ से बाहर निकला।

बर्तन बोला — "मैं भागता हूँ, मैं भागता हूँ।" कह कर वह बर्तन फिर एक बार उस आदमी से पहले ही भाग कर दरवाजे से बाहर निकल गया।

अपने पैसे को इस तरह जाते देख कर उस अमीर आदमी ने उस बर्तन का पीछा किया पर वह अपनी तीन टाँगों पर इतनी तेज़ भाग रहा था कि वह आदमी उसको पकड़ ही नहीं सका।

बर्तन भागता भागता फिर अपने उस गरीब परिवार के घर आ पहुँचा। वे गरीब लोग बर्तन को वापस आया देख कर फिर से बहुत खुश थे।

इस बार तो वह बर्तन इतने सारे पैसों से भरा हुआ था कि वे उससे सालों तक किराया दे सकते थे। और वे ही नहीं बल्कि उनके पड़ोसी भी।

अगले दिन उस बर्तन ने फिर कहा — "मुझे साफ करो और आग पर रखो।"

पति पत्नी दोनों ने मिल कर फिर उस बर्तन को घिस घिस कर चमका कर साफ किया। साफ कर के उन्होंने उसे आग पर रखा तो वह फिर बोला — "मैं भागता हूँ, मैं भागता हूँ।"

पति पत्नी ने फिर पूछा — "अब तुम कहाँ जाते हो?"

बर्तन बोला — "अब मैं तुम लोगों के लिये न्याय माँगने जाता हूँ ताकि तुम्हारी यह परेशानी हमेशा के लिये दूर हो जाये।" यह कह कर वह बर्तन फिर भाग गया और फिर से उस अमीर आदमी के घर पहुँचा।

अमीर आदमी ने देखा कि एक बर्तन सड़क पर भागा जा रहा है। वह बर्तन तो उसी के मकान की तरफ ही आ रहा था। उसने उस बर्तन को पहचान लिया।

वह गुस्से से बोला — "तो तुम ही वह बर्तन हो जो मेरा दलिया ले कर भागे थे। तुम ही वह बर्तन हो जो मेरे अनाजघर से गेंहू ले कर भागे थे जो मैंने हर एक के खेत से इकट्ठा किया था।

और तुम ही वही बर्तन हो जो मेरे कमरे से वह पैसे ले कर भी भागे थे जो मैंने हर एक का घर ले कर इकट्ठा किया था। अब तुम यहाँ आओ तो। मैं देखता हूँ तुमको।"

कह कर वह आदमी उस बर्तन पर कूद पड़ा और उसको कस कर पकड़ लिया। वह उसे छोड़ ही नहीं रहा था।

पर "मैं भागता हूँ, मैं भागता हूँ।" कहता हुआ वह बर्तन वहाँ से फिर भाग लिया।

आदमी चिल्लाया — "अब तुम जहाँ चाहो वहाँ जाओ चाहे उत्तरी ध्रुव जाओ और चाहे दक्षिणी ध्रुव, पर अबकी बार मैं तुमको नहीं छोड़ने वाला।" कह कर उसने उस बर्तन को और कस कर पकड़ लिया। सो वह बर्तन उस आदमी को लिये हुए ही भागता रहा।

गरीब लोगों ने उसको अपने घर के दरवाजे के सामने से गुजरते देखा पर वह वहाँ रुका नहीं और चिल्ला कर बोला — "मैं तुम्हारी मुसीबत को साथ लिये जा रहा हूँ।"

उनको नहीं मालूम कि वह कहाँ तक दौड़ा। यह भी हो सकता है कि वह उत्तरी ध्रुव तक दौड़ गया हो या फिर दक्षिणी ध्रुव ही चला गया हो क्योंकि उसके बाद उन दोनों को फिर किसी ने कभी नहीं देखा।

वह गरीब परिवार अब गरीब नहीं रह गया था। उनको अपनी जमीन वापस मिल गयी थी। उनके पास अब कपड़ों के लिये पैसे थे सो उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल भेजना शुरू कर दिया। गाँव में सब लोग अब खुशी से रहने लगे थे।

3 खिलौना बतख[6]

एक बार की बात है कि एक मक्खा, एक टिड्डा और एक खिलौना बतख में यह बात हुई कि देखें उनमें से कौन सबसे ऊँचा कूदता है।

सो उन्होंने यह तमाशा देखने के लिये सारी दुनियाँ को बुलावा भेजा। पर जब तीनों एक कमरे में मिले तो तीनों को लगा कि वे तो तीनों ही सबसे ज़्यादा ऊँचा कूदने वाले हैं।

जब राजा को इस मुकाबले का बुलावा आया तो उसने सोचा कि यह मुकाबला बेकार नहीं जाना चाहिये सो उसने यह घोषणा करा दी कि वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा जो उस मुकाबले में सबसे ऊँचा कूदेगा क्योंकि वह यह मुकाबला बेकार नहीं जाने देना चाहता था।

सबसे पहले मक्खा आगे आया। वह बहुत ही अच्छे तौर तरीके वाला था क्योंकि उसकी नसों में कुलीन परिवार का खून दौड़ रहा था। वह आदमियों के साथ रहता था जो अपने आपमें दूसरे जानवरों के लिये एक बहुत बड़ी बात थी।उसने चारों तरफ झुक कर लोगों को नमस्ते की।

उसके बाद टिड्डा आया। वह साइज में मक्खे से कहीं ज़्यादा बड़ा था पर बड़ी शान से चल रहा था। वह अपने वही हरे रंग के

[6] The Toy Goose - folktale from Denmark, Europe . Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/European_folktales/European_folktale_7.html

कपड़े पहने था जिनको पहन कर वह पैदा हुआ था। उसने बताया कि वह मिश्र के किसी बड़े पुराने परिवार से आता था और यहाँ भी उसकी बहुत इज़्ज़त थी।

सच्चाई तो यह थी कि जब वह खेतों से बाहर लाया गया था तो उसको रहने के लिये एक तीन मंजिल का एक बहुत बड़ा मकान दिया गया।

उसका यह मकान ताश का बना हुआ था और ताश के पत्तों की तस्वीर वाली साइड अन्दर की तरफ थी। उसके दरवाजे और खिड़कियाँ पान की बेगम[7] की कमर में कटे हुए थे।

वह बोला — "मैं इतना अच्छा गाता हूँ कि यहाँ के सोलह मकड़ों को जो जबसे पैदा हुए हैं तभी से गाते हैं उनको भी अभी तक रहने के लिये ताश के पत्तों घर नहीं दिया गया। जबसे उन्होंने मेरे गाने के बारे सुना है वे दुबले होते जा रहे हैं।"

इस तरह मक्खे और टिड्डे ने अपने अपने बारे में वहाँ बैठे लोगों को बताया और उनको लगा कि वे राजकुमारी से शादी करने के लायक क्यों नहीं हो सकते थे।

खिलौना बतख कुछ नहीं बोला। लोगों ने सोचा शायद वह इस लिये नहीं बोला क्योंकि वह बहुत ज़्यादा जानता था। घर के कुत्ते ने

[7] Queen of Hearts

उसको अपनी नाक से सूँघा और उनको विश्वास दिलाया कि खिलौना बतख भी एक अच्छे कुलीन परिवार से आता था।

एक बूढ़े सलाहकार को खिलौना बतख के बारे में चुप रहने के लिये तीन बार कहा जा चुका था कि खिलौना बतख के बारे में कुछ न बोले क्योंकि खिलौना बतख तो एक धर्मदूत[8] था।

क्योंकि कोई आदमी भी क्या मौसम का हाल लिखेगा जो उस खिलौना बतख की पीठ पर लिखा रहता था और जिसे कोई भी पढ़ सकता था कि इस साल जाड़ा हल्का होगा या ज़ोर का।

राजा बोला — "इस बारे में मैं कुछ नहीं कहूँगा क्योंकि मेरी अपनी राय है।"

मुकाबला शुरू होने वाला था सो मक्खा बहुत ज़ोर से कूदा। वह इतनी ज़ोर से कूदा कि लोगों को यही दिखायी नहीं दिया कि वह कहाँ तक ऊँचा गया। इसलिये लोगों ने कहा कि वह तो कूदा ही नहीं। हालाँकि यह बात उसके लिये बहुत शर्मनाक थी पर वह क्या करता उसकी कूद ही इतनी ऊँची ही थी।

उसके बाद टिड्डा कूदा। वह मक्खे से केवल आधा ऊँचा ही कूद पाया पर वह जा कर राजा के मुँह पर गिरा जो राजा को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा।

---

[8] Translated for the word "Prophet"

खिलौना बतख बहुत देर तक खड़ा रहा और सोचता रहा। उसको खड़े खड़े और सोचते सोचते इतनी देर हो गयी कि लोगों ने सोचा कि शायद वह तो कूदेगा ही नहीं।

घर के कुत्ते ने सोचा कहीं ऐसा न हो कि यह खिलौना बतख बेचारा बीमार हो गया हो। इतने में ही वह खिलौना बतख कूदा और राजकुमारी की गोद में जा कर गिर गया जो एक सोने के स्टूल पर राजा के पास ही बैठी थी।

राजा बोला — "मेरे लिये मेरी बेटी से बढ़ कर कोई नहीं है इसलिये खिलौना बतख ने ही सबसे ऊँची कूद लगायी है। इस सबको करने के लिये अच्छा दिमाग चाहिये और खिलौना बतख ने यह साबित कर दिया है कि उसके पास अच्छा दिमाग है और वह उसका अपना है।"

और इस तरह उसने राजकुमारी को जीत लिया।

मक्खा बोला — "मेरे लिये सब बराबर है। राजकुमारी जी वह खिलौना बतख अपने पास रख सकती हैं। मुझे मालूम है कि मैं ही सबसे ऊँचा कूदा था पर आजकल की दुनियाँ में लोग अच्छी सूरत ही ज़्यादा पसन्द करते हैं काम नहीं।"

उसके बाद मक्खा वह देश छोड़ कर विदेश चला गया और बेचारा वहीं विदेश में ही मारा गया।

टिड्डा एक हरी जगह चला गया और दुनियाँ की बातों के बारे में सोचने लगा — "अच्छी सूरत ही इस दुनियाँ में सबसे बड़ी चीज़

है। लोग इसी को सबसे ऊँची चीज़ समझते हैं काम कोई नहीं देखता।"

फिर उसने एक दुखी गाना गाना शुरू कर दिया जो वह आज तक गा रहा है। और यह कहानी भी उसके उसी गीत से ली गयी है।

4 यह बिल्कुल सच है[9]

यह यूरोप महाद्वीप के डेनमार्क देश की बात है कि एक बार एक मुर्गी वहाँ रात को शहर के एक घर में बैठी थी।

सोने का समय हो रहा था। वह बोली — "यह मुर्गीखाने की एक बड़ी भयानक कहानी है। जब मुझे उस कहानी की याद आती है तो मैं इतना डर जाती हूँ कि मैं रात को अकेली नहीं सो सकती। यह बड़ी अच्छी बात है कि इस समय यहाँ पर हम बहुत सारी मुर्गियाँ हैं तो मुझे यहाँ कोई डर नहीं है।"

और उसने अपनी साथिन मुर्गियों को एक कहानी सुनायी जिसको सुन कर उनके भी पंख खड़े हो गये और मुर्गों की कलगियाँ नीचे को झुक गयीं। और यह कहानी नहीं बल्कि सच्ची घटना है।

उसने कहना शुरू किया — "लेकिन हम यह कहानी शुरू से ही कहना शुरू करेंगे। यह सब एक ऐसी जगह शुरू हुआ जो यहाँ से कुछ दूरी पर है और शहर के दूसरे हिस्से में है। वहाँ बहुत सारे मुर्गे मुर्गियाँ रहते थे।

सूरज डूब चुका था और सारे मुर्गे मुर्गियाँ अपनी अपनी जगह पर सोने के लिये पंख फड़फड़ा रहे थे। वहाँ एक ऐसी मुर्गी भी थी जिसके पंख बिल्कुल सफेद थे। उसकी टाँगें बहुत छोटी थीं।

---

[9] It is Quite True - folktale from Denmark, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/European_folktales/European_folktale_9.html

वह मुर्गी बराबर अंडे देती थी और वहाँ की सब मुर्गियों में सबसे ज़्यादा इज़्ज़तदार मुर्गी समझी जाती थी। जैसे ही वह अपने सोने की जगह पर कूदी कि उसने अपनी चोंच अपने पंखों में मारी और उसका एक छोटा सा पर नीचे गिर पड़ा।

वह उसको देख कर हँसते हुए बोली — "जितना ज़्यादा मैं अपने पंखों में अपनी चोंच मारूँगी और पर गिराऊँगी मैं उतनी ही ज़्यादा सुन्दर लगूँगी।"

अब क्योंकि वह सारी बतखों में सबसे ज़्यादा हँसी मजाक करती थी इसलिये किसी ने उसकी इस बात पर ध्यान नहीं दिया और वह सोने चली गयी।

रात हो चुकी थी और सब मुर्गे मुर्गियाँ अपनी अपनी जगह पर बराबर बराबर सोये हुए थे। पर एक मुर्गी जो उस सफेद मुर्गी के बराबर में बैठी थी उसकी आँखों में नींद नहीं थी। उसने उस सफेद मुर्गी की बात कुछ सुनी कुछ नहीं सुनी।

वैसे तो ऐसा ही होता है कि जिसको जो करना होता है वह वह करता है और जो नहीं करना चाहता वह वह नहीं करता पर वह यह बात अपनी पड़ोसन से कहे बिना नहीं रह सकी।

वह अपनी पड़ोसन से बोली — "क्या तुमने सुना कि यहाँ अभी किसी ने क्या कहा? मैं किसी का नाम नहीं लेती पर यहाँ एक मुर्गी है जो सुन्दर दिखायी देने को लिये अपने पर नोचना चाहती है। मैं अगर मुर्गा होती तो मैं उसको जरूर ही उसको बुरा कहती।"

जब यह मुर्गी यह सब कह रही थी तो एक माँ उल्लू अपने पति और बच्चों के साथ वहीं बैठी थी। उन सबके कान बहुत तेज़ थे। सो उन सबने अपनी पड़ोसन के वे सारे शब्द सुने जो उनकी पड़ोसन ने कहे थे।

उन सबने अपनी आँखें चारों तरफ गोल गोल घुमायीं और माँ उल्लू अपने पंख फड़फड़ा कर बोली — "उसकी बात मत सुनो। पर मुझे लगता है कि तुम सबने उसकी बात पहले ही सुन ली है कि उसने क्या कहा था। मैंने भी उसकी सारी बात अपने कानों से सुनी है। सबको सब कुछ सुनना भी चाहिये।

इन मुर्गियों में से एक मुर्गी ऐसी है जो यह भूल गयी है कि एक मुर्गी का बर्ताव क्या होना चाहिये। कितनी खराब बात है कि वह अपने पंख एक एक कर के मुर्गे के सामने निकाल रही है।"

पिता उल्लू ने माँ उल्लू को डाँटा — "यह सब तुम क्या कह रही हो? यह क्या कोई बच्चों से करने की बात है?"

"मैं जा कर अपनी पड़ोसन मादा उल्लू को बताऊँगी। वह बहुत अच्छी है वह मेरी बात सुनेगी।" और वह माँ उल्लू अपनी पड़ोसन मादा उल्लू को यह सब बताने के लिये उड़ गयी।

वहाँ जा कर उसने यह कहानी मादा उल्लू को बतायी और फिर वे दोनों फाख्ताओं के घर की तरफ उड़ गयीं और वहाँ जा कर बोलीं — "क्या तुमने सुना? क्या तुमने सुना? एक मुर्गी है जिसने

एक मुर्गे के लिये अपने पंख नोच दिये हैं। अगर वह अभी तक नहीं मरी है तो अब वह ठंड में जरूर मर जायेगी।"

पास में बैठे कबूतरों ने सुना तो वे बोले — "क्या? क्या? क्या कहा तुमने? कहाँ, कहाँ?"

"अरे यहीं। पास वाले मुर्गीखाने में। मैंने उसको अपनी ऑखों से देखा है। सारी कहानी तो बार बार नहीं दोहरायी जा सकती पर है यह बिल्कुल सच।"

कबूतरों ने अपने कबूतरखाने में जा कर कहा — "विश्वास करो, विश्वास करो। तुम लोग हमारा विश्वास करो। यह कहानी नहीं है सच है कि एक मुर्गी ऐसी है।

पर कुछ का कहना है कि एक नहीं दो मुर्गियाँ हैं जिन्होंने अपने सारे पंख नोच कर फेंक दिये हैं और इसी लिये वे अब दूसरी मुर्गियों की तरह दिखायी नहीं देतीं।

ऐसा उन्होंने इसलिये किया है ताकि वे मुर्गों का ध्यान अपनी तरफ खींच सकें। ऐसा करना बड़ा खतरनाक काम है क्योंकि ऐसा करने से किसी को ठंड लग सकती है, कोई बुखार से मर सकता हैं। और इसी लिये वे दोनों मर गयीं।"

मुर्गा चिल्लाया — "जागो जागो।" और वह एक तख्ते पर जा कर बैठ गया।

उसकी आखें अभी भी नींद से झुकी जा रहीं थीं फिर भी वह खूब ज़ोर से चिल्लाया — "तीन मुर्गियाँ दिल टूटने की वजह से मर

गयीं। उन्होंने अपने सारे पर नोच कर फेंक दिये थे। यह बड़ी भयानक कहानी है। मेहरबानी कर के यह बात औरों को भी बता दो।"

चिमगादड़ चिल्लाये — "इस कहानी को औरों को भी बता दो।"

सारे मुर्गे और बतखें चिल्लाये — "इस कहानी को औरों को भी बता दो।"

इस तरह यह कहानी एक मुर्गीखाने से शुरू हो कर दूसरे मुर्गीखाने और कबूतरखाने तक होती हुई फिर वहीं आ पहुँची जहाँ से वह शुरू हुई थी।

और उस मुर्गीखाने में मुर्गियों ने सुना — "ऐसा कहा जाता है कि पाँच मुर्गियों ने अपने पंख केवल इसलिये नोच डाले ताकि वे दिखा सकें कि उनमें से कौन सबसे पतला था और फिर उन्होंने आपस में एक दूसरे को चोंच मार मार कर मार डाला।

इस तरह उन्होंने अपने अपने परिवारों को बहुत बदनाम किया और साथ में अपने मालिकों का भी बहुत नुकसान किया।

और वह मुर्गी जिसने अपना केवल एक ही छोटा सा पंख गिराया था, अपनी कहानी तो भूल गयी और एक इज़्ज़तदार मुर्गी होने के नाते बोली — "मुझे उन मुर्गियों से सख्त नफरत है जिन्होंने इस तरह अपने पंख नोच कर फेंक दिये हालाँकि ऐसी और भी बहुत सारी मुर्गियाँ होंगी जो ऐसा करती होंगी।

किसी को भी इस तरह की चीज़ों को बढ़ावा नहीं देना चाहिये। मैं इसके लिये जो कुछ भी मुझसे हो सकता है वह करने की कोशिश करूँगी। मैं इस कहानी को अखबार में छपवाऊँगी ताकि यह सारे देश में पहुँचे। इससे दूसरी मुर्गियों और उनके परिवारों को सीख मिलेगी।"

फिर यह कहानी अखबार वालों को दे दी गयी। अखबार वालों ने इसे अखबार में छापा। और यह कहानी सच है कि एक मुर्गी का छोटा सा पंख किस तरह पाँच मुर्गियों की मौत में बदल गया।

5 क्रिसमस का सन्तरा[10]

एक बार एक बहुत ही छोटी लड़की डेनमार्क के एक अनाथालय में रहने के लिये आयी।

जैसे जैसे क्रिसमस का समय पास आया तो दूसरे बच्चों ने उस लड़की से क्रिसमस के उस सुन्दर पेड़ के बारे में बात करनी शुरू की जो क्रिसमस की सुबह को नीचे बड़े कमरे में लगने वाला था।

अपने रोज के मामूली से नाश्ते के बाद हर बच्चे को उस दिन एक और केवल एक ही क्रिसमस भेंट मिलने वाली थी और वह था एक सन्तरा।

उस अनाथालय का हेडमास्टर बड़े जिद्दी किस्म का आदमी था और वह क्रिसमस को एक मुसीबत समझता था। वह क्रिसमस की सुबह तक किसी बच्चे को क्रिसमस का पेड़ देखने के लिये नीचे भी नहीं आने देता था।

सो क्रिसमस के पहले दिन की शाम को जब उसने उस छोटी लड़की को क्रिसमस के पेड़ को देखने के लिये चोरी से सीढ़ियों से नीचे जाते देखा तो उसने यह घोषणा कर दी कि उसको उसकी क्रिसमस की भेंट का सन्तरा नहीं मिलेगा क्योंकि वह उस पेड़ को

[10] The Christmas Orange – a folktale from Denmark, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.motivateus.com/stories/c-orange.htm

देखने के लिये इतनी उत्सुक थी कि उसने अनाथालय के नियमों को तोड़ा था।

वह छोटी लड़की बेचारी रोती हुई अपने कमरे में भाग गयी। उसका दिल टूट गया था और वह अपनी बदकिस्मती पर रो रही थी कि मैं नीचे उस पेड़ को देखने गयी ही क्यों।

अगली सुबह जब बड़े बच्चे नाश्ते के लिये नीचे जा रहे थे तो वह छोटी लड़की नीचे नाश्ते के लिये नहीं गयी और अपने बिस्तर में ही पड़ी रही। वह यह सहन नहीं कर सकती थी कि दूसरी लड़कियों को तो क्रिसमस की भेंट मिले और वह खड़ी उनका मुँह देखती रहे।

बाद में जब सब बच्चे अपना अपना नाश्ता कर के ऊपर आये तो एक बच्चे ने उसको एक रूमाल दिया।

उस लड़की को वह रूमाल देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सावधानी से उस रूमाल को खोला तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि उसमें एक छिला हुआ और फॉकें किया गया सन्तरा रखा था।

उसने पूछा — "यह कैसे हुआ?"

बच्चे ने जवाब दिया — "यह ऐसे हुआ कि हर बच्चे ने अपने छिले हुए और फॉकें किये गये सन्तरे में से एक एक फॉक निकाल कर तुम्हारे लिये रख दी थी ताकि तुमको भी तुम्हारी क्रिसमस की भेंट का सन्तरा मिल सके।"

यह देख कर उस लड़की की ऑखों में ऑसू आ गये।

6 सबसे बड़ा बेवकूफ[11]

एक बार की बात है कि एक जगह एक स्त्री रहती थी जिसके एक बहुत ही बेवकूफ बेटा था। एक दिन जब उसकी माँ ने दही बिलो कर उसमें से मक्खन निकाल लिया तो उसने कहा कि वह उसे जा कर बाजार बेच आता है।

उसकी माँ ने उसे मना भी किया। उसने बेटे से कहा कि यह काम उससे नहीं होगा क्योंकि वह कभी शहर गया नहीं है उसने शहर कभी देखा नहीं है पर वह उससे जिद करता रहा और उसके पीछे पड़ा रहा तो आखिर उससे बाजार जाने और मक्खन बेच कर आने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

लड़के ने मक्खन उठाया और बाजार की तरफ चल दिया। रास्ते में उसको एक बहुत बड़ा पत्थर मिला। उसने समझा कि वही शहर है सो उसने बहुत सँभाल कर बड़ी नम्रता से उससे पूछा — "क्या आप मक्खन खरीदेंगे?"

जाहिर है पत्थर ने तो कोई जवाब देना नहीं था सो उसने कोई जवाब नहीं दिया। कोई जवाब न पा कर लड़का बोला — "मैं तुम्हें बताये दे रहा हूँ कि मेरा मक्खन बहुत ही बढ़िया किस्म का है। अगर तुम चाहो तो तुम उसे चख भी सकते हो।"

---

[11] Master Fool – a folktale from Denmark, Europe.
Taken from the Web Site : http://oaks.nvg.org/baya.html This tale was published in 1899.

और फिर बिना उसका जवाब पाये उसने थोड़ा सा मक्खन पत्थर पर मल दिया। दिन बहुत गर्म था सो कुछ पलों में ही वह मक्खन पत्थर की गर्मी से पिघल कर बहने लगा।

लड़के ने सोचा कि कि शहर ने उसके मक्खन को बड़े शौक से खाया है और वह उसे पसन्द आया है लड़का बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि यह मक्खन तुम्हें बहुत पसन्द आया है। तुम चाहो तो सारा का सारा मक्खन खरीद सकते हो। पैसे की कोई खास बात नहीं है मैं कल तक इन्तजार कर सकता हूँ।"

सो लड़के ने सारा मक्खन उस पत्थर पर मल दिया और घर वापस आ गया। माँ ने जैसे ही उसे देखा तो उससे पूछा — "मेरा मक्खन किसने खरीदा और उसने उसकी क्या कीमत दी?"

लड़का बोला — "माँ मैंने उसे शहर को बेच दिया और वे पैसे कल देंगे।"

माँ ने फिर पूछा — "ऐसा कैसे हुआ? और तूने क्या कहा कि तूने उसे शहर को बेचा? ऐसा तू कैसे कर सकता है। मुझे ठीक से बता कि तूने उसे शहर में किसे बेचा।"

लड़के ने जवाब दिया — "मैंने बताया न कि मैंने उसे शहर को बेचा जैसा कि तुमने कहा था।"

आखिर माँ बोली — "चलो ठीक है कम से कम मक्खन बिक तो गया। पर यह मेरी बेवकूफी थी जो वह मक्खन तुझे बेचने के लिये दिया। मुझे उसे तुझे नहीं देना चाहिये था।"

अगले दिन लड़का अपने पैसे लाने के लिये जाना चाहता था पर माँ ने कहा कि अब उसका कोई फायदा नहीं है। क्योंकि उसको मालूम था कि अब उसे कोई पैसा वैसा नहीं मिलने वाला। पर वह कुछ सुनने वाला नहीं था सो वह अपने पैसे वसूल करने के लिये अपने आप ही चल दिया।

वह उस पत्थर के पास आ पहुँचा। वह पत्थर अभी भी मक्खन में नहाया खड़ा था। लड़का बोला — "मैं अपने मक्खन का पैसा लेने आ गया जो तुमने मुझसे कल खरीदा था।"

पर पत्थर तो एक शब्द भी नहीं बोला। इससे लड़के को बहुत गुस्सा आया। वह बोला — "ओ नीच कल तूने मुझसे मक्खन खरीदा और आज तू उसके पैसा देने से मना करता है। यहाँ तक कि मुझसे बात भी नहीं करता। मैं तुझे बताये देता हूँ कि तू इस तरह से मेरे साथ नहीं खेल सकता।"

कह कर उसने उस पत्थर को पकड़ा और उसे इधर उधर हटाने लगा। ऐसा करते समय वह अपनी जगह से लुढ़क गया। उसने देखा कि वह तो एक सोने के सिक्कों के बर्तन पर रखा हुआ था। वह एक पल को भी नहीं हिचका उसने वह बर्तन उठाया और उसे ले कर घर लौट गया।

जब उसकी माँ ने अपने बेवकूफ बेटे को एक बर्तन भर कर सोने के सिक्के लाते देखा वह तो दंग रह गयी। वह उससे यह पूछने के लिये आगे बढ़ी कि इतना सारा सोना उसे कहाँ से मिला।

लड़के ने जवाब दिया — "मॉ इसे मैं शहर से वसूल कर के ला रहा हूँ। मॉ पहले तो उसने मुझे पैसा देने से इनकार कर दिया यहॉ तक कि वह कुछ बोला भी नहीं। मुझे गुस्सा आ गया और मैंने उसे पलट दिया और उससे यह सारा पैसा ले लिया।

मुझे पहले से ही पता था कि इसके पास काफी सारा पैसा है देने के लिये लेकिन वह तो इतना जिद्दी था कि न मुझसे बात करना चाहता था और न पैसे ही देना चाहता था।"

मॉ बोली — "मुझे तेरी ये बेवकूफी की कोई भी बात समझ में नहीं आ रही है। तू पूरे शहर को कैसे पलट सकता है। पर चल ठीक है तू मेरे मक्खन का काफी पैसा ले आया है। यह अच्छी बात है।"

कुछ समय बीत गया। एक दिन उस स्त्री ने गाय काटी तो उसका बेटा फिर से उस मॉस को शहर बेचने के लिये ले जाने की जिद करने लगा। सो उसने उसका एक बहुत बड़ा सा टुकड़ा अपनी टोकरी में रखा और उसको ले कर शहर की तरफ चल पड़ा।

अबकी बार वह सचमुच में शहर की तरफ आ निकला। जब वह कुछ देर तक उसकी सड़कों पर इधर उधर घूम लिया तो उसको कुछ कुत्ते मिल गये जो उस पर भौंकने लगे।

लड़के ने उनसे पूछा — "कैसे हो तुम लोग? क्या तुम कुछ मॉस खरीदोगे?"

इसके जवाब में कुत्ते फिर भौंक दिये।

तो लड़का बोला — "ठीक है। ठीक है। लो पहले तुम चख कर देख लो।"

कह कर उसने थोड़ा सा मॉस उनकी तरफ फेंक दिया। उन्होंने भी उसको तुरन्त ही खा लिया और लड़के की तरफ देखने लगे। लड़के ने सोचा कि यह मॉस इनको अच्छा लगा सो ये इसे खरीदना चाहते हैं। उसने बचा हुआ सारा मॉस उनकी तरफ फेंक दिया और कहा — "मैं अपने पैसे लेने के लिये कल आऊँगा।"

कह कर वह वहॉ से चला गया। अगले दिन वह फिर वहीं आया और इत्तफाक से उसको वे कुत्ते फिर मिल गये। उसने उनसे कहा — "लाओ मेरे कल के मॉस के पैसे दो।"

अब कुत्ते तो कुत्ते थे वे भोंकते रहे भौंकते रहे पर उन्होंने कोई पैसा नहीं दिया। इससे उसे गुस्सा आ गया वह चिल्लाया — "क्या, तुम लोग मेरा पैसा नहीं देना चाहते। मैं तुम्हें अभी सिखाता हूँ कि शरीफ लोगों के साथ कैसे बर्ताव करते हैं।"

उन कुत्तों एक छोटा कुत्ता एक सुन्दर सा कौलर पहने हुए था। उसको देख कर उसको लगा कि वह उनके झुंड का कोई मुख्य सदस्य था सो उसने उसे पकड़ लिया और अपनी बगल में दबा लिया और कहा — "मैं तुझे अभी बताता हूँ कि तुझे मुझे क्या देना है। पर इससे पहले कि हम अलग हों मैं तुझे कुछ सिखाना चाहता हूँ। उसे ध्यान रखना।"

इतना कह कर वह उसे ले कर राजा के महल चल दिया।

अब राजा के एक बेटी थी जो बहुत ही सुन्दर थी पर हमेशा उदास और दुखी रहती थी। उसके पिता ने यह मुनादी पिटवा रखी थी कि जो कोई उसको हॅसायेगा उसको खुश करेगा वह उसकी शादी उसी से कर देगा और वही राजा के मरने के बाद उसकी राज गद्दी का अधिकारी होगा।

जब वह लड़का राज महल के दरवाजे पर आया तो एक सन्तरी ने उसको रोका और उससे पूछा कि उसको राजा से क्या काम था।

लड़के ने कुछ गुस्से में कहा — "क्या मुझे एक नागरिक होने के नाते राजा को देखने का अधिकार नहीं है जबकि मेरे दुश्मनों ने मुझे धोखा दिया है। यह क्या मामला है।"

सन्तरी ने फिर पूछा — "तुम राजा से क्या चाहते हो?"

लड़के ने उसे सब बताया तो उसने इस शर्त पर उसको अन्दर जाने दिया कि जो कुछ भी उसे उसके मॉस को बदले में मिलेगा उसका आधा वह उस सन्तरी को दे देगा। और वह अन्दर चला गया।

आगे चल कर उसे एक और पहरेदार ने रोका और उसने भी उससे मॉस के बदले में मिलने वाले के आधे हिस्से की मॉग की। सो लड़के ने उससे भी वायदा किया वह उसे मॉस के बदले में मिलने वाली चीज़ का आधा हिस्सा उसको दे देगा।

किसी तरह से वह राजा तक पहुॅचा। पहरेदार ने राजा को उसके आने की खबर दी।

जब राजा बाहर आया तो लड़के ने उससे कहा कि उसके साथ कितने गलत तरीके से बर्ताव किया गया है। उसका हाल सुन कर राजा ने अपने कन्धे उचकाये और बोला — "जब तुमने कुत्तों को अपना मॉस बेचा था तभी तुमको यह बात सोचनी चाहिये थी कि तुम उनसे अपना पैसा कैसे वसूल करोगे। मैं इस तरह की पैसा वसूली में तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता।"

यह सुन कर लड़के ने अपनी गोद में सॅभाले हुए कुत्ते को बहुत ज़ोर से हिलाते हुए कहा — "तुम तो अपनी जाति का एक बहुत ही अच्छा नमूना हो।"

राजा की बेटी जो वहॉ बैठी बैठी यह सब कहानी सुन रही थी ज़ोर से हॅस पड़ी। यह देख कर राजा बोला — "अब शायद तुमको अपने मॉस की अच्छी कीमत मिल जाये। क्योंकि तुमने मेरी बेटी को हॅसा दिया है सो अब तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो।"

लड़का अभी भी अपने ख्यालों में डूबा हुआ था बोला — "मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं है।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा — "क्या? क्या तुम उसकी परवाह नहीं करते? तुम उससे शादी नहीं करना चाहते? तब मैं तुम्हें इतने पैसे दूॅगा जिससे तुम वाकई में उससे शादी न करो।"

लड़का बोला — "मैं पैसे की चिन्ता नहीं करता।"

राजा ने पूछा — "अगर तुम्हें पैसा नहीं चाहिये तो फिर तुम क्या ले कर सन्तुष्ट होगे।"

लड़का बोला — "मुझे मेरी कमर पर आपके जूते की साठ ठोकरें चाहिये।"

राजा बोला — "ठीक है। तुम्हें मिल जायेंगी। आओ मैं तुम्हें साठ ठोकर मारता हूँ।"

इस पर लड़का हँस कर बोला — "नहीं नहीं। मुझे नहीं। ये ठोकरें आपके दो पहरेदारों को मिलनी चाहिये, आधी आधी, जिनको मैं अपने मॉस के बदले में मिली कीमत का आधे आधे हिस्से देने का वायदा कर के आया हूँ।"

राजा उसकी होशियारी देख कर दंग रह गया। दोनों पहरेदारों को उसने तीस तीस ठोकरें मारीं और फिर लड़के से बोला — "तुम देखने में जितने बेवकूफ लगते हो उतने हो नहीं। क्या तुम मेरी बेटी से शादी करोगे?"

लड़का बोला — "जी जनाब। अब क्योंकि आपके पहरेदारों को उनका हिस्सा मिल गया है अब मुझे उनको कुछ और नहीं देना सो अब मैं राजकुमारी जी से शादी करने के लिये तैयार हूँ।

जल्दी ही उसकी शादी राजा की बेटी से हो गयी। वे सब शान्ति और खुशी खुशी बहुत दिनों तक रहे।

7 टौलर के पड़ोसी[12]

एक समय की बात है कि एक जगह एक नौजवान लड़का और एक नौजवान लड़की रहते थे। वे लिसगार्ड जिले[13] के क्लौड मिल[14] के पास वाले बड़े मकान में एक साथ काम करते थे। क्योंकि वे दोनों बहुत ही वफादार और ईमानदार नौकर थे तो उस बड़े मकान का मालिक और मालकिन दोनों ही उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

एक दिन दोनों ने शादी कर ली तो मालिक और मालकिन ने उनकी शादी की ख़ुशी में बहुत बड़ी दावत दी। मालिक ने उनको एक छोटा सा मकान दिया और एक खेत दिया। वे लोग उसी में रहने चले गये।

यह मकान एक जंगली झाड़ियों वाली जगह के बीच में था। उसके आस पास की जगह के बारे में भी लोगों की कोई अच्छी राय नहीं थी। आस पास में वहॉ कब्रों के ऊपर के टीले बने पड़े थे जिनके लिये यह कहा जाता था कि वहॉ कब्रों में रहने वाले रहते थे। पर टौलर[15] किसान को उन सबकी कोई चिन्ता नहीं थी।

टौलर सोचता था कि जब किसी को भगवान पर भरोसा और उसमें विश्वास होता है और वह सबके लिये हमेशा ठीक करता है

---

[12] Toller's Neighbors – a folktale from Denmark, Europe.
Taken from the Web Site : http://oaks.nvg.org/danetales1-2.html This tale was published in 1853.

[13] Lysgaard District

[14] Klode Mill

[15] Name of the young peasant who worked in the mansion

और सोचता है तो उसको किसी से डरने की कोई जरूरत नहीं है। वे लोग अब अपने मकान में रहने के लिये आ गये थे और अपना थोड़ा बहुत जो भी सामान था वह सब भी साथ ले आये थे।

एक दिन पति पत्नी दोनों बैठे हुए सोच रहे थे कि वे अपनी आगे की ज़िन्दगी कैसे गुजारें तो उन्होंने दरवाजे पर एक दस्तक सुनी। टौलर ने उठ कर दरवाजा खोला तो सामने एक छोटा सा ठिगना सा आदमी खड़ा था।

ठिगने आदमी ने उसको "गुड ईवनिंग" कहा। उसके सिर पर लाल टोप था उसकी लम्बी दाढ़ी थी लम्बे बाल थे और उसकी पीठ पर एक कूबड़[16] था। उसने चमड़े का एक ऐप्रन पहन रखा था जिसमें एक हथौड़ा लगा हुआ था।

वे दोनों उसको देखते ही तुरन्त पहचान गये कि वह एक राक्षस[17] था। पर वह इतने अच्छे स्वभाव का और इतना दोस्ताना लग रहा था कि दोनों में से किसी को उससे डर नहीं लगा।

ठिगने अजनबी ने कहा — "सुनो ओ टौलर। मुझे लगता है कि आप अच्छी तरह से जान गये हैं कि मैं कौन हूँ। अब मामला यह है कि मैं एक गरीब पहाड़ी आदमी[18] हूँ जिसके लिये लोगों ने रहने के लिये कोई और जगह नहीं छोड़ी है सिवाय उन हारे हुए

[16] Translated for the word "Humpback"
[17] Translated for the word "Troll"
[18] Translated for the word "Troll"

योद्धाओं की कब्रों के या फिर उन ढेरों के नीचे जिसके नीचे हम तक सूरज भी नहीं जा पाता।

हमने सुना कि आप लोग यहाँ रहने आये हैं तो हमारे राजा को बहुत डर लग रहा है कि आप लोग शायद हमें कुछ नुकसान पहुँचाऐं। यहाँ तक कि आप हमें मार भी सकते हो। इसलिये आज की शाम उन्होंने मुझे आपके पास इसलिये भेजा है ताकि मैं आपसे जितनी नम्रता से मैं कर सकूँ यह विनती करूँ कि आप लोग हमें यहाँ शान्ति से रहने दें।

आपको हम लोगों से कोई परेशानी नहीं होगी। हम आपके किसी काम में बाधा भी नहीं डालेंगे।"

टौलर बोला — "ओ भले आदमी। शान्त रहो। मैंने जानते बूझते भगवान के किसी भी प्राणी को कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। मेरा विश्वास है कि यह दुनियाँ हम सब के लिये बहुत बड़ी है। हम सब लोग एक दूसरे को कोई नुकसान पहुँचाये बिना आराम से इसमें रह सकते हैं।"

छोटा आदमी यह सुन कर कमरे में खुशी से नाचने लगा। उसने टौलर को धन्यवाद दिया और बोला — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है। यह तो बहुत अच्छा है। हमसे जो भी अच्छा बन पड़ेगा हम वह सब आपके लिये करेंगे। इसका पता आपको जल्दी ही चल जायेगा। पर अभी मुझे यहाँ से जाना चाहिये।"

इस पर पत्नी ने दलिये की एक प्लेट खिड़की के पास पड़े हुए एक बहुत ही नीचे स्टूल पर रखी और उससे बोली — "क्या आप हमारे साथ थोड़ा सा कुछ खायेंगे नहीं?"

क्योंकि वह आदमी बहुत ही छोटा सा था। वह उनकी खाने की मेज तक पहुँच नहीं सकता था इसलिये उसको दलिया नीचे स्टूल पर रखना पड़ा था।

वह बोला — "नहीं अभी नहीं। मेरा राजा बड़ी बेचैनी से मेरा इन्तजार कर रहा होगा। और इतनी अच्छी खबर देने के लिये इतनी देर लगाना कोई अच्छी बात नहीं है। मैं अभी उनको यह बात बताना चाहता हूँ।" यह कह कर वह छोटा आदमी उनसे विदा ले कर चला गया।

उस दिन के बाद से टौलर उन ढेरों में रहने वाले लोगों के बीच में आराम से रहने लगा। वे लोग उन टीलों वाले लोगों को दिन में कई बार उन टीलों में आते जाते देखते पर किसी ने उनके साथ कोई बुरा व्यवहार नहीं किया।

कुछ समय बाद उनकी टौलर परिवार से इतनी जान पहचान हो गयी कि अब वे टौलर परिवार के घर में भी आने लगे जैसे वह उनका अपना ही घर हो।

कभी कभी वह उनकी रसोईघर की तॉबे की केटली उधार ले जाते पर उसे हमेशा वापस दे जाते। और उसे उसी जगह पर वैसे

ही रख जाते जैसे वह पहले रखी हुई थी। बदले में वे उनकी कुछ सेवा भी कर जाते।

जब वसन्त आया तो वे रात में अपने अपने टीलों से बाहर निकल आते और वहाँ की जमीन से पत्थर चुन चुन कर एक जगह इकट्ठा कर देते। फसल काटने के समय वे मक्का के सारे भुट्टे इकट्ठा कर देते ताकि टौलर का कोई भुट्टा रह न जाये।

जब टौलर भगवान की प्रार्थना कर के उनको ऐसे पड़ोसी देने के लिये धन्यवाद दे रहा होता या अखबार पढ़ रहा होता तो यह सब वह भी देखता। ईस्टर और क्रिसमस और दूसरे त्यौहारों पर वह उनके लिये दलिये का एक कटोरा टीले पर निकाल कर रखना न भूलता।

कुछ समय बाद पत्नी को बच्चे की आशा हुई और समय आने पर उसने एक बेटी को जन्म दिया। बच्ची को जन्म देने के कुछ दिन बाद ही उसकी पत्नी बहुत बीमार पड़ गयी। उसको ऐसा लगा जैसे वह कुछ दिन की ही मेहमान थी।

उसने जिले के सारे होशियार लोगों की सलाह ले ली पर किसी को उसका इलाज पता नहीं चल रहा था। वह रात रात भर बैठा बैठा अपनी पत्नी को देखता रहता ताकि वह उसकी किसी भी जरूरत को उसी समय पूरा कर सके।

एक बार उसकी ऑख लग गयी। उसकी ऑख सुबह ही खुली तो उसने क्या देखा कि उसका कमरा टीले वाले लोगों से भरा हुआ है।

एक बैठा हुआ बच्ची को झुला रहा था। दूसरा कमरे की सफाई कर रहा था। तीसरा उसकी बीमार पत्नी के सिरहाने खड़ा हुआ था और उसके लिये कोई दवा बना रहा था जो बन जाने के बाद उसने उसकी पत्नी को पिला दी।

जैसे ही उन्होंने देखा कि टौलर जाग गया है वैसे ही वे सब कमरे के बाहर भाग गये। पर उस रात से उसकी पत्नी की हालत सुधरने लगी। पन्द्रह दिन के अन्दर अन्दर ही वह बिस्तर से उठ गयी और अपने घर का काम करने लगी। अब वह पहले की तरह से खुश और ठीक थी।

एक दूसरे समय पर टौलर के पास पैसों की कुछ कमी थी वह एक घोड़ा नहीं खरीद पा रहा था। जाने से पहले वह अपनी पत्नी के पास गया और उससे बात की कि इस बारे में उसे क्या करना चाहिये पर कोई हल नहीं निकला।

तो रात को पत्नी ने पूछा — "टौलर तुम सो गये क्या?"

टौलर बोला — "क्यों नहीं तो।"

पत्नी बोली — "मुझे लग रहा है कि घुड़साल में घोड़े के लिये कुछ किया जा रहा है। वहॉ बहुत शोर मच रहा है।"

यह सुन कर टौलर उठा अपनी लालटेन जलायी और अपनी घुड़साल में जा पहुँचा। वहाँ का दरवाजा खोलने पर उसने देखा कि उसमें वे टीले वाले छोटे लोग खड़े हुए हैं। उन्होंने घोड़ों को लिटा रखा था क्योंकि वे खुद इतने छोटे थे कि वे घोड़े की ऊँचाई तक नहीं पहुंच पा रहे थे। कुछ उनके पुराने जूते निकाल रहे थे। कुछ उनमें कीलें ठोक रहे थे। कुछ उनको नये जूते पहना रहे थे।

अगले दिन जब टौलर अपने घोड़ों को पानी पिलाने के लिये ले कर गया उसने उन सबको इतना सुन्दर पाया कि कोई लोहार भी उनको इतनी अच्छी तरह से तैयार नहीं कर सकता था।

इस तरह से टौलर और टीले वाले लोग एक दूसरे की जितनी अच्छी तरह से सहायता कर सकते थे करते रहे और वहाँ शान्ति से रहते रहे।

इसी तरह से हँसी खुशी रहते रहते उनको वहाँ कई साल बीत गये। टौलर अब बूढ़ा हो चला था। उसकी बेटी बड़ी हो गयी थी। दिन ब दिन वह अब अमीर होता जा रहा था।

अब उसके पास एक बहुत बड़ा और सुन्दर मकान हो गया था। वहाँ चारों ओर जो झाड़ियों वाली जमीन पड़ी हुई थी अब तक वह सब उपजाऊ जमीन हो गयी थी।

एक शाम रात को सोने जाने से पहले किसी ने उनका दरवाजा खटखटाया। टीले वाला आदमी अन्दर आया। टौलर और उसकी

पत्नी को उसे देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वह छोटा आदमी अपनी रोजमर्रा की पोशाक नहीं पहने था।

उसने अपने सिर पर एक लम्बे बालों वाली टोपी पहनी हुई थी। गर्दन के चारों तरफ एक ऊनी रूमाल लपेटा हुआ था। भेड़ की खाल का एक कोट पहना हुआ था। उसके हाथ में एक छड़ी थी और वह बहुत दुखी दिखायी दे रहा था।

वह अपने राजा से टौलर के लिये एक सन्देश ले कर वहाँ हाजिर हुआ था कि वह उसकी पत्नी और उसकी बेटी तीनों उसके राजा के पास उस शाम वहाँ टीले में आयें वह उन लोगों से कोई महत्वपूर्ण बात करना चाहता था। यह कहते कहते उस आदमी की आँखों से आँसू बहने लगे।

टौलर ने उसको ढाँढस बँधाया और उससे पूछा कि उसके इस तरह दुखी होने की क्या वजह थी। वह आदमी और ज़ोर से रो पड़ा पर अपने दुख की वजह उसने नहीं बतायी।

टौलर उसकी पत्नी और बेटी तीनों टीले पर गये। गुफा में उतरने पर उन्होंने देखा कि गुफा तो मीठे फूल पत्तियों से सजी हुई महक रही है जो वहाँ की झाड़ियों में मिलते थे। गुफा के एक कोने से ले कर दूसरे कोने तक एक मेज लगी हुई है।

जब किसान का परिवार उस गुफा में घुसा तो उनको राजा के पास वाली सीटों पर बिठाया गया। छोटे छोटे लोग भी अपनी

अपनी जगह बैठ गये। पर उनमें से कोई भी खुश दिखायी नहीं दे रहा था।

वे सब मुँह लटकाये बैठे थे। उन सबकी शक्लों से ऐसा लग रहा था जैसे उन लोगों का कुछ खो गया है।

जब सब लोग बैठ गये तब राजा ने टौलर से कहा — "मैंने तुम्हें यहाँ इसलिये बुलाया है ताकि हम सब तुम्हें इस बात के लिये धन्यवाद दे सकें कि जबसे हम आपस में पड़ोसी बने हैं तबसे तुम हमारे साथ बहुत अच्छे रहे हो।

पर अब इस देश में बहुत सारे चर्च बन गये हैं और उन सबमें बहुत सारे घंटे लगे हुए हैं जो सुबह शाम इतने ज़ोर से बजते है कि अब हम उन्हें अब और नहीं सह सकते।

सो अब हम लोग यह जुटलैंड[19] छोड़ कर नौर्वे जा रहे है जैसा कि हमारे बहुत सारे पुरखों ने बहुत पहले कर लिया था। अब हम तुमसे विदा लेते हैं टौलर। हमको अलग होना ही पड़ेगा।"

राजा ने जब यह सब कहा तो टीले के सारे लोग आये और उन्होंने टौलर का हाथ पकड़ा और उसको विदा कहा। ऐसा ही उन्होंने उसकी पत्नी के साथ भी किया। जब वह उसकी बेटी इंगर[20] के पास आये तो उन्होंने उससे कहा — "प्रिय इंगर तुमको तो हम

[19] Jutland

[20] Inger – name of the peasant Toller's daughter

अपनी याद में एक भेंट देंगे ताकि हम जब यहाँ नहीं होंगे तब तुम हमको याद कर सको।"

इस कहने के साथ ही सब टीले वाले लोगों ने नीचे से उठा कर एक एक पत्थर उसके ऐप्रन में फेंक दिया।

एक एक कर के सबने फिर वह टीला छोड़ दिया। राजा वहाँ से सबसे पहले बाहर निकला।

टौलर परिवार टीले पर बहुत देर तक खड़ा खड़ा उनको जाते हुए देखता रहा जब तक वे आँखों से ओझल नहीं हो गये। उन्होंने देखा कि वे छोटे राक्षस उस झाड़ी वाली जमीन पर चले जा रहे थे। हर एक की पीठ पर एक थैला था और हाथ में एक एक छड़ी थी।

जब वे सब बहुत दूर चले गये तो वे सब एक बार फिर घूमे विदा के लिये हाथ हिलाये और गायब हो गये। टौलर ने उनको फिर कभी नहीं देखा। बहुत दुखी हो कर वे घर लौट आये।

अगली सुबह इंगर ने देखा कि जो पत्थर उन छोटे आदमियों ने उसके एप्रन में फेंके थे वे सब तो चमक रहे थे। वे सच्चे कीमती पत्थर थे। उनमें से कुछ नीले थे कुछ कत्थई थे। कुछ सफेद थे और कुछ काले थे। इस तरह वे राक्षस अपनी आँखों का रंग उसको दे गये थे।

इस तरह जब वे वहाँ नहीं थे तो इंगर उनको याद रख सकती थी। आज जो हम कीमती पत्थर देखते हैं वे केवल इसी लिये

चमकते हैं क्योंकि वे छोटे लोग उनको अपनी ऑखों की चमक दे गये थे। ये उन्हीं में से कुछ हैं जो उन्होंने इंगर को दिये थे।

8 जादूगर का शिष्य[21]

एक समय की बात है कि एक जगह एक किसान रहता था। उसके एक बेटा था। वह जब बड़ा हो गया तो उसके पिता ने उसे किसी व्यापार में वह व्यापार सीखने के लिये रख दिया।

पर लड़के का काम में मन ही नहीं लगता था। वह हमेशा ही काम से अपने माता पिता के पास भाग आता था। यह देख कर उसका पिता बहुत दुखी था। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। कौन सा रास्ता अपनाये कि वह कुछ काम सीख सके।

एक दिन वह एक चर्च में घुसा और लौर्ड की प्रार्थना सुनने के बाद उसने जीसस से पूछा — "मैं अपने बेटे को कौन सा काम सिखाऊँ। वह जहाँ भी जाता है वहीं से भाग आता है।"

क्लर्क ने जो उस समय वेदी के पीछे खड़ा हुआ था उसके ये शब्द सुन लिये तो वह बोला — "उसको जादूगरी[22] सिखाओ। उसको जादूगरी सिखाओ।"

---

[21] Magician's Pupil – a folktale from Denmark, Europe.
Taken from the Web Site : http://oaks.nvg.org/danetales1-2.html
This tale was published by Thorpe in 1853.

[22] Translated for the word "Witchcraft"

किसान को क्लर्क दिखायी नहीं दिया। उसने सोचा कि उसके सवाल का जवाब लौर्ड जीसस ने दिया। सो उसने उसे ही मानने का निश्चय कर लिया।

अगले दिन उसने अपने बेटे से कहा कि वह उसके साथ चले। अबकी बार वह उसके लिये कोई नया काम ढूँढने की कोशिश करेगा। देश में काफी दूर यात्रा करने के बाद उसको एक गड़रिया मिला जो अपनी भेड़ें चरा रहा था।

गड़रिये ने पूछा "कहाँ चल दिये।"

किसान बोला — मुझे एक ऐसे आदमी की तलाश है जो मेरे बेटे को जादूगरी सिखा दे।"

गड़रिया बोला — "तुम्हें कोई न कोई जादूगर जरूर ही मिल जायेगा! तुम यहाँ से सीधे चले जाओ तो तुम दुनियाँ के सबसे बड़े जादूगर के पास पहुँच जाओगे।"

किसान ने उसे जादूगर का पता बताने के लिये धन्यवाद दिया और उसी रास्ते पर आगे चल पड़ा जल्दी ही वह एक बहुत बड़े जंगल में आ पहुँचा जिसके बीच में जादूगर का मकान खड़ा था।

जा कर उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया और उससे पूछा कि क्या वह एक लड़के को अपना शिष्य बनायेगा।

जादूगर ने कहा — "हाँ हाँ जरूर। क्यों नहीं। पर उसको चार साल तक मुझसे जादूगरी सीखनी पड़ेगी। उससे कम नहीं। इसके अलावा तुमको उसकी पढ़ाई खत्म होने के बाद मेरे पास आना पड़ेगा

और अपने बेटे को पहचानना पड़ेगा। अगर तुम उसे पहचान गये तो वह तुम्हारा वरना वह फिर ज़िन्दगी भर मेरे पास रहेगा और मेरी सेवा करेगा।"

किसान ने यह समझौता मान लिया। उसने अपना बेटा वहाँ छोड़ा और अकेला ही वापस घर लौट आया। जब एक हफ्ता हो गया तो किसान को लगा कि अब उसका बेटा वापस लौट आयेगा।

क्योंकि जैसा कि उसके साथ पहले भी कई बार हो चुका था वह अपने हर काम पर से वापस आ जाता था वह इस बार भी वापस आ जायेगा। पर इस बार तो वह वापस नहीं आया।

यह देख कर उसकी माँ रोने लगी। उसने अपने पति से कहा कि उसने उसके बेटे को उस नीच जादूगर को दे कर अच्छा नहीं किया। अब वे लोग उसको शायद ही कभी देख पायें।

जब चार साल बीत गये किसान अपने बेटे को वापस लाने के लिये चल दिया जैसा कि किसान और जादूगर में यह फैसला हुआ था। उसके जंगल में पहुँचने से पहले ही वह फिर उसी गड़रिये से मिला जिससे वह पहले मिला था।

पहली बार उसने जादूगर के घर का रास्ता बताया था इस बार उसने उसे वह तरीका बताया जिससे कि वह अपना बेटा उससे वापस पा सकता था।

उसने कहा — "जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो रात को तुम अपनी आँखें बराबर अँगीठी[23] की तरफ ही रखना। और ध्यान रखना कि सो मत जाना। क्योंकि उसी समय वह जादूगर तुमको तुम्हारे घर वापस भेजने की कोशिश करेगा। और अगर तुम चले गये तो फिर बाद में कहेगा कि "तुम तो समय पर आये ही नहीं।

दूसरी बात कल तुम्हें मैदान में तीन कुत्ते देखने को मिलेंगे। वे एक ही कटोरे में से दलिया खा रहे होंगे। उसमें से बीच वाला तुम्हारा बेटा है तुम उसी को चुन लेना।"

किसान ने गड़रिये को यह बताने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उससे विदा ले कर वह फिर आगे जादूगर के घर की तरफ चल दिया।

जादूगर के घर पहुँच कर उसने उसके कम्पाउंड में एक ही कटोरे में से तीन कुत्ते दलिया खाते देखे जिनमें से दो तो बहुत ही चिकनी खाल वाले थे और चमक रहे थे जबकि तीसरा बहुत ही पतला दुबला सा और बीमार सा था।

जब किसान ने कुत्तों को थपथपाया तो दोनों चमकीले वाले कुत्ते उस पर गुर्राये पर दुबले वाले कुत्ते ने केवल पूँछ हिलायी। जादूगर ने उससे पूछा — "क्या तुम बता सकते हो कि इनमें तुम्हारा बेटा कौन सा है? अगर तुम पहचान सकते हो तो तुम उसे ले जा सकते हो और अगर नहीं तो फिर वह मेरा है।"

[23] Translated for the word "Fireplace"

"ठीक है तो मैं वह कुत्ता चुनता हूँ जो मेरे साथ बहुत दोस्ती का बर्ताव कर रहा था। हालाँकि वह दूसरे दोनों कुत्तों से कम सुन्दर है।"

जादूगर बोला — "तुम्हारा यह चुनाव तो तर्कसंगत है। वह जानता था कि वह तुमको क्या सलाह दे रहा था।"

किसान अपने बेटे को ले कर वहाँ से चल दिया। उसने उस कुत्ते के गले में एक रस्सी बाँधी और उसको वहाँ से ले चला। बस उसको इस बात का दुख था कि उसके बेटे को जादूगर ने एक कुत्ते में बदल दिया था। सो वह रोता जा रहा था।

जंगल के पास आ कर उसे फिर वही गड़रिया मिल गया। उसने पूछा "अब तुम क्यों रो रहे हो? मुझे ऐसा लगता है कि तुम ऐसे भी बुरी किस्मत वाले नहीं निकले।"

जब वे कुछ दूर और आगे चले गये तो कुत्ते ने अपने पिता से कहा — "अब आप देखेंगे कि मैंने उस जादूगर से जो कुछ सीखा है वह मेरे कितना काम आता है। मैं बहुत जल्दी ही एक बहुत छोटे कुत्ते में बदल जाता हूँ। फिर मुझे आप रास्ते में जो कोई भी खरीदना चाहे उसे बेच दीजियेगा।"

कुत्ते ने जैसा कहा था वैसा ही किया। कुछ पल में वह एक बहुत ही छोटे से कुत्ते में बदल गया। जल्दी ही एक शानदार गाड़ी में बैठ कर कुछ बड़े लोग जाते दिखायी दिये।

जब उन्होंने इतने सुन्दर कुत्ते को सड़क पर खेलते देखा तो उन्होंने किसान से पूछा कि क्या वह यह कुत्ता उनको बेचेगा। उसने कहा कि "हॉ यह कुत्ता बेचने के लिये ही है।"

सो उन्होंने उसको अच्छी खासी रकम दे कर वह कुत्ता खरीद लिया। उसके तुरन्त बाद ही बेटे ने अपने पिता को एक बड़े खरगोश[24] में बदल दिया और उसे सड़क के बीच में भगा दिया।

जब लोगों ने बड़े खरगोश को देखा तो अपना कुत्ता उसको पकड़ने के लिये छोड़ दिया। जैसे ही उन्होंने उसे छोड़ा तो कुत्ता और बड़ा खरगोश दोनों ही जंगल में गायब हो गये। उन्होंने उनको फिर कभी नहीं देखा।

अब लड़के ने फिर से अपने आपको बदल लिया। इस बार वह और उसका पिता दोनों आदमी की शक्ल में थे। बूढ़े ने कुछ लकड़ियॉ काटनी शुरू कर दीं और बेटा उसकी सहायता करने लगा।

जब गाड़ी वालों का कुत्ता खो गया तो वे उसको ढूॅढने निकले। रास्ते में बूढ़ा और लड़का लकड़ी काट रहे थे सो उन्होंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने कोई छोटा कुत्ता वहॉ से जाते देखा है तो लड़के ने जंगल की तरफ इशारा करते हुए कहा कि "वह उधर गया है।"

[24] Translated for the word "Hare" – Hare is kind of rabbit but bigger in size. See its picture above.

वह और उसका पिता घर वापस लौट आये और उस पैसे पर काफी दिनों तक रहे जो कुत्ता बेच कर उन्होंने कमाया था।

जब वह पैसा खत्म हो गया तब वे दोनों फिर पैसा कमाने निकले। बेटे ने कहा "अब मैं एक सूअर में बदल जाऊँगा। तब आप मेरे पैरों में एक रस्सी बाँध कर सूअर बेचने वाली जगह ले जाइयेगा। और वहाँ ले जा कर मुझे अच्छे दाम पर बच दीजियेगा।

पर याद रखियेगा कि जब आप मुझे बेचें तो मेरी रस्सी मेरे दाँये कान के ऊपर रहे। और फिर मैं भी जल्दी ही आपके साथ साथ ही घर लौट आऊँगा।"

पिता ने वैसा ही किया जैसा कि उसके बेटे ने उससे करने के लिये कहा। उसने उस सूअर की बहुत ऊँची कीमत रखी सो उसको तीसरे पहर हो गया फिर भी कोई उसको खरीद न सका। वह वहाँ काफी देर तक खड़ा रहा।

आखीर में एक बूढ़ा आया जिसने उस सूअर को खरीद लिया। यह बूढ़ा वही जादूगर था जिसने किसान के लड़के को अपने पास रख कर जादू सिखाया था।

इस जादूगर की कोशिश हमेशा यही रहती थी कि जो कोई उसके पास जादू सीखने आया है वह उसके पास से फिर कभी न जाये। सो वह कुछ ऐसा ही करता था कि कोई वहाँ आ कर अपने बच्चे को पहचान कर वापस न ले जाये पर क्योंकि इस किसान ने अपना बच्चा पहचान लिया था इसलिये वह उससे बहुत गुस्सा था।

और जबसे किसान अपने बेटे को उसके पास से ले कर गया था तभी से वह बहुत गुस्सा था और उसकी खोज में था।

जब किसान ने सूअर इस जादूगर को बेच दिया तो उसने उसकी रस्सी अपने बेटे के कहे अनुसार उसके दॉये कान के ऊपर डाल दी। जैसे ही उसने यह किया तो वह जानवर तो तुरन्त ही गायब हो गया। किसान सूअर बेच कर जब अपने घर पहुँचा तो उसने अपने बेटे को खाने की मेज पर बैठा पाया।

अब वे फिर से आराम की ज़िन्दगी गुजारने लगे थे जब तक उनके पास सूअर को बेच कर आये पैसे चले।

अब वे फिर कुछ करने के लिये निकले। इस बार लड़के ने अपने आपको एक बैल में बदल लिया। उसने फिर अपने पिता को याद दिलाया कि जैसे ही आपका सौदा हो जाये तो आप मेरी रस्सी मेरे दॉये सींग के ऊपर डाल देना।

दोनों बाजार गये तो किसान को वही आदमी फिर मिला जिसने पिछली बार उससे सूअर खरीदा था। उसने फिर से उसी आदमी से बैल का सौदा कर लिया। जब वे एक शराबखाने में शराब पी रहे थे पिता ने बैल की रस्सी उसके दॉये सींग के ऊपर फेंक दी।

जादूगर जब अपनी खरीद लेने के लिये गया तो उसको तो बैल कहीं दिखायी नहीं दिया। किसान जब घर लौटा तो उसका बेटा मॉ के पास मेज पर बैठा था।

तीसरी बार उसने अपने आपको एक घोड़े में बदल लिया। इस बार भी जादूगर बाजार आया हुआ था उसने किसान से फिर से घोड़ा खरीद लिया। फिर वह किसान से बोला — "तुम मुझे पहले ही दो बार धोखा दे चुके हो पर अबकी बार ऐसा नहीं होगा।"

इस बार उसने पैसा देने से पहले ही उसने उस घोड़े को अपनी घुड़साल में बाँध लिया था इसलिये अबकी बार किसान घोड़े की रास को उसके दाँये कान के ऊपर नहीं डाल सका।

अब वह क्या कर सकता था सो बेचारा घर लौट आया। पर उसको अभी भी यही आशा थी कि वह उसे अपने घर में बैठा पा लेगा। पर नहीं इस बार वह घर पर नहीं था।

इस बीच जादूगर घोड़े पर चढ़ा और वहाँ से दौड़ लिया। वह जानता था कि उसने किसे खरीदा है। उसने सोच रखा था कि उस लड़के को उसके साथ धोखा देने की कीमत अपनी जान दे कर चुकानी होगी।

वह घोड़े को दलदल और तालाबों में से दौड़ाता हुआ बहुत दूर ले आया। वह उस घोड़े को इतनी तेज़ दौड़ा रहा था कि अगर उस रफ्तार से उसने उसे कुछ देर और भगाया होता तो वह यकीनन मर जाता।

पर घोड़ा बहुत मजबूत था और जादूगर बूढ़ा था सो जादूगर खुद ही बहुत थक गया और उसको घर वापस आना पड़ा।

उसको घर ला कर उसने उस घोड़े पर एक जादू की लगाम डाल दी और उसको एक अँधेरी घुड़साल में बाँध दिया। उसको न खाना दिया न पानी। जब कुछ देर हो गयी तब उसने अपनी नौकरानी से कहा — "जाओ देख कर आओ कि घोड़ा कैसा है?"

जब वह नौकरानी घुड़साल में आयी तो वह घोड़ा उसके सामने दया की भीख माँगता हुआ रोने लगा। यह वही नौकरानी थी जब वह लड़का यहाँ जादू सीख रहा था तभी से उसको इससे प्यार था। घोड़े ने उसे देख कर उससे विनती कि वह उसे पानी पिला दे। नौकरानी ने उसको पानी पिलाया।

वापस लौटने पर इसने मालिक से कहा कि घोड़ा ठीक था। कुछ देर बाद मालिक ने फिर उसे यह देखने के लिये भेजा कि घोड़ा अभी ज़िन्दा है या मर गया।

सो वह फिर उसको देखने के लिये गयी तो जानवर ने उससे उसकी लगाम ढीली करने के लिये कहा क्योंकि वह लगाम इतनी ज़्यादा कसी हुई थी कि वह ठीक से साँस भी नहीं ले पा रहा था।

जैसे ही नौकरानी ने उसकी लगाम ढीली की कि वह लड़का घोड़े से बड़े खरगोश में बदल कर वहाँ से भाग गया।

जादूगर जो अपनी खिड़की में बैठा हुआ था एक बड़े खरगोश को बाहर भागते देख कर तुरन्त ही समझ गया कि वहाँ क्या हुआ होगा। उसने तुरन्त ही अपने आपको एक कुत्ते में बदला और उसका पीछा करने के लिये दौड़ गया।

जब वे लोग मक्का के खेत और मैदानों में मीलों दूर तक भाग लिये तो लड़के की ताकत जवाब देने लगी और जादूगर उसके और पास आने लगा।

सो बड़े खरगोश ने अपने आपको एक फाख्ता में बदला और आसमान में उड़ गया। जादूगर ने भी अपने आपको एक बाज़ में बदला और उसका पीछा करने लगा।

इस तरह वे उड़ते हुए जा रहे थे कि वे एक महल के ऊपर से उड़े जहाँ एक राजकुमारी अपने महल की खिड़की में बैठी यह सब देख रही थी। जैसे ही उसने एक बाज़ को एक फाख्ता का पीछा करते देखा तो उसने तुरन्त ही अपनी खिड़की खोल दी।

फाख्ता कमरे के अन्दर आ गया और एक सोने की अगूठी में बदल गया। जादूगर अब एक राजकुमार में बदल गया और राजकुमारी के महल में फाख्ता को लेने के लिये चला गया।

जब उसको महल में वह कहीं नहीं मिला तो उसने राजकुमारी से उसकी अँगूठियों को देखने की इजाज़त माँगी। राजकुमारी ने उसको अपनी अँगूठियाँ दिखा तो दीं पर उसने उनमें से एक अँगूठी आग में डाल दी।

जादूगर ने उसको आग में से निकालने के लिये तुरन्त ही अपना हाथ डाला पर उसकी उँगलियाँ जलने की वजह से वह जमीन पर गिर गयी। लड़के ने तुरन्त ही अपने आपको मक्का के एक दाने में

बदल लिया। जादूगर तुरन्त ही एक मुर्गी में बदला और उसे खाना ही चाहता था कि लड़का तुरन्त बाज़ बन कर उसे खा गया।

उसके बाद वह जंगल गया जादूगर का सारा सोना चाँदी ले कर अपने घर आ गया। उसके बाद वे सब खुशी खुशी बहुत दिनों तक सुख से रहे।

9 हरा नाइट[25]

डेनमार्क देश में कही सुनी जाने वाली यह लोक कथा यूरोप में सबसे ज़्यादा प्रचलित लोक कथा सिन्डरैला की लोक कथा से काफी मिलती जुलती है।

एक बार की बात है कि डेनमार्क में एक राजा और रानी अपनी बेटी के साथ रहते थे। उनकी बेटी अभी छोटी ही थी कि रानी बहुत बीमार पड़ गयी और उसी बीमारी में वह चल बसी।

जब रानी को यह पता चला कि अब वह ज़्यादा दिन ज़िन्दा नहीं रहने वाली तो उसने राजा को बुलाया और उससे कहा — "प्रिये, ताकि मैं शान्ति से मर सकूँ इसके लिये तुम मुझसे एक वायदा करो। कि मेरी बेटी जो कुछ भी माँगेगी अगर वह तुम उसको दे सकते होगे तो वह चीज़ उसको जरूर दोगे। किसी चीज़ के लिये मना नहीं करोगे।"

इस वायदे के लेने के कुछ समय बाद ही रानी चल बसी। रानी के जाने के बाद राजा का दिल टूट गया क्योंकि वह अपनी रानी को बहुत प्यार करता था। वह अपनी बेटी को भी बहुत प्यार करता था सो वह केवल अपनी बेटी को देख कर ही ज़िन्दा था।

---

[25] The Green Knight – a fairy tale from Denmark, Europe. This story taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/greenknight.html edited by DL Ashliman.
DL Ashliman took it from, "Danish Fairy Tales", by Svendt Grundtvig, translated by J Grant Cramer. Boston, Richard G Badger. 1912. pp. 22-37.

राजकुमारी अपनी माँ के लिये हुए वायदे के साथ बड़ी होने लगी। राजा के लिये बेटी की माँ के साथ किये हुए वायदे को निभाना कोई मुश्किल काम नहीं था।

पर इस वायदे को निभाने ने उसकी बेटी को थोड़ा बिगाड़ दिया था नहीं तो वह एक बहुत अच्छी बच्ची थी जिसको एक माँ की जरूरत थी जो उसको प्यार कर सके। इस प्यार की कमी की वजह से वह कभी कभी उदास हो जाती और कभी बेकार में ही गुस्सा भी हो जाती।

उसको दूसरे बच्चों की तरह से खेलना अच्छा नहीं लगता बल्कि वह अकेली बागीचों और जंगलों में घूमती रहती। उसको फूलों और चिड़ियों से बहुत प्यार था और उसको कहानियाँ और कविताऐं पढ़ने का भी बहुत शौक था।

महल के पास ही एक काउन्ट[26] की पत्नी रहती थी। काउन्ट तो मर गया था पर उसके एक बेटी थी जो राजकुमारी से थोड़ी सी बड़ी थी। वह अब उसी के साथ रहती थी।

काउन्टैस की वह नौजवान बेटी कोई बहुत अच्छी लड़की नहीं थी। वह एक बहुत ही बेकार, स्वार्थी और बहुत ही पत्थर दिल लड़की थी। पर अपनी माँ की तरह वह चतुर बहुत थी और जब

[26] Count - Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

भी वह देखती कि कहीं उसका कोई काम बनने वाला है तो वह अपने विचारों को छिपा भी लेती थी।

बड़ी काउन्टैस ने ऐसे ऐसे तरीके निकाल रखे थे जिससे कि उसकी अपनी बेटी राजकुमारी के साथ ही रहे इसलिये माँ और बेटी दोनों ही राजकुमारी को खुश रखने में लगी रहतीं।

उन दोनों के बस में जो कुछ भी होता वे उसको खुश रखने के लिये उसके लिये किसी भी तकलीफ को उठा कर करतीं। उसकी परेशानी को दूर करने के लिये उन दोनों में से जल्दी ही उसके पास कोई न कोई पहुँच जाता।

बड़ी काउन्टैस तो यही चाहती थी और इसके लिये वह मेहनत भी बहुत कर रही थी ताकि समय आने पर वह अपनी बात पर आ सके।

सो जब वह समय आ गया तो एक दिन बड़ी काउन्टैस ने अपनी बेटी से राजकुमारी से रोते हुए यह कहने के लिये कहा कि अब वे दोनों अलग हो जायेंगी क्योंकि वह अपनी माँ के साथ किसी दूसरे देश जा रही है।

यह सुनते ही छोटी राजकुमारी बड़ी काउन्टैस के पास भागी गयी और बोली कि उसको अपनी बेटी को साथ ले कर वहाँ से नहीं जाना चाहिये।

छोटी राजकुमारी की बात सुन कर काउन्टैस ने उसके साथ बहुत सहानुभूति का बहाना किया और उससे कहा कि उसके वहाँ

उस देश में रुकने का अब केवल एक ही तरीका है और वह यह कि राजा उससे शादी कर ले। उसके बाद दोनों माँ बेटी उसके पास हमेशा के लिये रह सकती थीं।

फिर उन्होंने उसको सब्ज़ बाग दिखाये कि जब वे वहाँ रहेंगी तो वे उसी की हो कर रहेंगी।

यह सुन कर राजकुमारी अपने पिता के पास गयी और उनसे उसने बड़ी काउन्टैस से शादी करने की प्रार्थना की। क्योंकि अगर उसने उससे शादी नहीं की तो वह अपनी बेटी के साथ चली जायेगी और उसकी अपनी बेटी की अकेली दोस्त भी चली जायेगी और उस दोस्त के बिना वह तो मर ही जायेगी।

राजा उसको समझाते हुए बोला — "अगर मैंने ऐसा किया तो बेटी यह कर के तुम बहुत पछताओगी। और साथ में मैं भी। क्योंकि मेरी शादी करने की कोई इच्छा नहीं है और मुझे उस धोखेबाज काउन्टैस और उसकी धोखेबाज बेटी का कोई भरोसा भी नहीं है।"

पर राजकुमारी का रोना नहीं रुका। वह उससे जिद करती ही रही जब तक कि वह काउन्टैस से शादी करने पर राजी नहीं हो गया और उसने राजकुमारी की इच्छा पूरी नहीं की।

राजा ने काउन्टैस से शादी करने के लिये पूछा तो काउन्टैस तो पहले से ही तैयार बैठी थी वह तुरन्त ही राजी हो गयी। जल्दी ही

उन दोनों की शादी हो गयी। अब काउन्टैस रानी बन गयी और छोटी राजकुमारी की सौतेली माँ बन गयी।

पर जैसे ही काउन्टैस रानी बन कर महल में आयी सब कुछ बदल गया। रानी ने अपनी सौतेली बेटी यानी राजकुमारी को बजाय प्यार से रखने के उसको चिढ़ाना और तंग करना शुरू कर दिया। उसकी ज़िन्दगी दूभर करने के लिये वह जो कुछ कर सकती थी अब वह उसने सब करना शुरू कर दिया था।

राजा ने भी यह सब देखा। वह इस सबसे बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था।

एक दिन उसने अपनी बेटी से कहा — “ओह मेरी प्यारी बेटी, तुम्हारी ज़िन्दगी तो बहुत ही खराब हो गयी। तुम भी यह सोच कर पछताती तो होगी कि तुमने मुझसे क्या माँगा। देखो जैसा मैंने तुमसे पहले कहा था वैसा ही हुआ। पर अब तो हम दोनों की बदकिस्मती से बहुत देर हो चुकी है।

मुझे लगता है कि तुमको अब हमको कुछ दिनों के लिये छोड़ देना चाहिये। तुम ऐसा करो कि टापू पर बने मेरे गर्मी वाले महल में चली जाओ। वहाँ तुम कम से कम शान्ति से तो रह सकोगी।”

हालाँकि उन दोनों के लिये अलग होना बहुत मुश्किल था फिर भी राजकुमारी पिता की बात मान गयी।

यह बहुत जरूरी भी था क्योंकि वह अपनी नीच सौतेली माँ और अपनी नीच सौतेली बहिन के बुरे व्यवहार को और ज़्यादा नहीं सह सकती थी।

उसने अपने साथ अपनी दो दासियाँ लीं और अपने पिता के गर्मी वाले महल में टापू पर रहने चली गयी। उसका पिता कभी कभी उससे मिलने के लिये वहाँ आ जाता था।

वहाँ आ कर वह देखता कि उसकी बेटी सौतेली माँ के साथ घर में रहने की बजाय इस महल में रह कर ज़्यादा खुश थी।

इस तरह से वह एक बहुत सुन्दर, दयावान, भोलीभाली और दूसरों के बारे में सोचने वाली लड़की की तरह बड़ी होती रही। वह आदमियों और जानवरों सब पर दया करती।

पर वह सचमुच में खुश नहीं थी। वह हमेशा ही उदास रहती। उसके दिल में हमेशा ही यह इच्छा रहती कि उसके पास जो कुछ भी इस समय है उसको इससे कुछ ज़्यादा अच्छा मिल सकता है।

एक दिन उसका पिता उससे विदा लेने के लिये आया क्योंकि उसको किसी लम्बी यात्रा पर जाना था।

वहाँ उसको राजाओं और कुलीन लोगों की एक मीटिंग में हिस्सा लेना था जो कई देशों से आने वाले थे और वह मीटिंग काफी दिनों तक चलने वाली थी सो वह काफी दिनों तक लौटने वाला नहीं था।

राजा अपनी बेटी को खुश करने के लिये बोला कि वहाँ वह उसके लिये अगर कोई अच्छा राजकुमार मिलेगा तो ढूँढेगा जिससे वह उसकी शादी कर सके।

तो राजकुमारी ने जवाब दिया — "पिता जी, इसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद। पर अगर आपको कहीं हरा नाइट[27] मिल जाये तो उसको मेरी तरफ से नमस्ते कहियेगा और उससे कहियेगा कि मैं उसको बहुत चाहती हूँ और उसका इन्तजार कर रही हूँ। क्योंकि केवल वही मुझे मेरे इस दुख से छुटकारा दिला सकता है और दूसरा कोई नहीं।"

जब राजकुमारी ने यह कहा तो वह चर्च के हरे ऑगन के बारे में सोच रही थी जिसमें बहुत सारे हरे हरे मिट्टी के ढेर[28] खड़े हुए थे क्योंकि उस समय वह मौत के बारे में सोच रही थी।

पर राजा यह बात नहीं समझ सका। उसको अपनी बेटी का इस अजीब से नाइट के लिये अजीब सा सन्देश सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उसने तो ऐसे नाइट का नाम पहले कभी नहीं सुना था।

---

[27] Green Knight - A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

[28] Translated for the words "Green Mounds" – small soil mounds on which grass was growing. Infact they were the graves in the Church compound.

पर क्योंकि वह अपनी बेटी की हर इच्छा पूरी करने का आदी था इसलिये उसने अपनी बेटी से कहा कि अगर उसको हरा नाइट कहीं मिल गया तो वह उसका सन्देश उसको जरूर दे देगा।

फिर उसने अपनी बेटी को विदा कहा और राजाओं की मीटिंग मे हिस्सा लेने के लिये अपनी यात्रा पर चल दिया।

उस मीटिंग में उसको बहुत सारे राजकुमार मिले, नौजवान कुलीन लोग और नाइट मिले पर हरा नाइट उसे कहीं नहीं मिला। इसलिये राजा अपनी बेटी का सन्देश भी उसको नहीं दे सका।

मीटिंग खत्म हो गयी थी सो राजा घर लौटने लगा। उसको ऊँचे ऊँचे पहाड़ पार करने थे, चौड़ी चौड़ी नदियाँ पार करनी थीं और घने जंगल पार करने थे।

एक दिन जब राजा अपने लोगों के साथ एक घने जंगल से गुजर रहा था तो वे सब एक बड़ी सी खुली जगह में आ गये जहाँ हजारों सूअर चर रहे थे। ये सूअर जंगली नहीं थे बल्कि पालतू थे। उनके साथ उनका चराने वाला भी था।

वह सूअर चराने वाला एक शिकारी की पोशाक पहने अपने कुत्तों से घिरा हुआ एक छोटे से टीले पर बैठा हुआ था। उसके हाथ में एक पाइप था जिसको वह बजा रहा था। सारे जानवर उसके संगीत को सुन रहे थे और उसका कहना मान रहे थे।

राजा को पालतू सूअरों के इस झुंड पर बड़ा आश्चर्य हुआ तो उसने अपना एक आदमी उस सूअरों के रखवाले के पास यह जानने के लिये भेजा कि वे सारे सूअर किसके थे।

उस रखवाले ने जवाब दिया कि वे सारे सूअर हरे नाइट के थे। यह सुन कर राजा को अपनी बेटी की बात याद आ गयी सो वह खुद उस आदमी के पास गया और उससे पूछा कि क्या वह हरा नाइट कहीं पास में ही रहता था।

उस सूअर चराने वाले ने जवाब दिया "नहीं, वह पास में तो नहीं रहता। वह तो वहाँ से बहुत दूर पूर्व की तरफ रहता था।"

अगर राजा उस दिशा की तरफ चला जाये तो उसको जानवरों के दूसरे झुंड चराने वाले मिलेंगे वे उसको उस हरे नाइट के किले का रास्ता बता देंगे।

राजा यह सुन कर अपने आदमियों के साथ पूर्व की तरफ चल दिया। वह उधर की तरफ जंगल में हो कर तीन दिन तक चलता रहा। वह फिर से एक मैदान में आ निकला जिसके चारों तरफ जंगल ही जंगल था। वहाँ मूज़[29] और जंगली बैलों के बहुत बड़े बड़े झुंड चर रहे थे। यहाँ भी उन जानवरों को

[29] The moose (North America) or elk (Eurasia) is the largest extant species in the deer family. Moose are distinguished by the palmate antlers of the males; other members of the family have antlers with a "twig-like" configuration. Moose typically inhabit in forests of the Northern Hemisphere in temperate to subarctic climates. See its picture above.

चराने वाला शिकारी की पोशाक पहने था और उसके साथ भी कुत्ते थे।

राजा अपने घोड़े पर सवार उस रखवाले के पास गया और उससे पूछा कि वे जानवर किसके थे। उसने जवाब दिया कि वे हरे नाइट के थे जो पूर्व की तरफ और आगे की तरफ रहता था।

राजा फिर से पूर्व की तरफ तीन दिनों तक चला और फिर से एक मैदान में निकल आया जहॉ उसको बहुत सारे नर और मादा बारहसिंगा[30] चरते नजर आये। उनका रखवाला भी उनके साथ था।

जब राजा ने उससे पूछा कि वे जानवर किसके हैं तो उसने भी यही कहा कि वे जानवर हरे नाइट के हैं।

राजा ने पूछा कि हरे नाइट का किला कहॉ है तो उसने बताया कि वह वहॉ से पूर्व की तरफ ही एक दिन की दूरी पर है।

राजा वहॉ से हरे हरे जंगलों में से हो कर जा रहे हरे हरे रास्तों पर फिर पूर्व की तरफ चला तो एक दिन में ही एक बड़े से किले तक आ पहॅुचा। वह किला भी हरा था क्योंकि वह सारा किला बहुत सारी बेलों से ढका हुआ था।

[30] Translated for the word "Stag". It is a kind of deer (male) and doe (female) with a different horn structure. See its picture above.

जब राजा और उसके आदमी सब उस किले के पास तक पहुँचे तो उस किले में से बहुत सारे आदमी शिकारियों की हरे रंग की पोशाक पहने बाहर आये और उनको किले के अन्दर ले गये। अन्दर जा कर उन्होंने घोषणा की कि फलाँ फलाँ राज्य के राजा आये हैं और वह वहाँ के राजा से मिलना चाहते हैं।

यह सुन कर उस किले का मालिक बाहर आया – एक लम्बा सुन्दर नौजवान हरे कपड़े पहने हुए। उसने अपने मेहमान का स्वागत किया और उसकी शाही तरीके से आवभगत की।

राजा बोला — "आप बहुत दूर रहते हैं और आपका राज्य भी बहुत बड़ा है। मुझको अपनी बेटी की इच्छा पूरी करने के लिये बहुत दूर तक चलना पड़ा।

जब मैं राजाओं की मीटिंग में हिस्सा लेने के लिये चला था तो मेरी बेटी ने मुझसे कहा था कि मैं उसकी तरफ से हरे नाइट को नमस्ते करूँ।

और यह भी कहा था कि मैं उसको कहूँ कि वह उसको कितना चाहती है और वह उसका इन्तजार कर रही है क्योंकि केवल वही एक उसको उसके दुखों से छुटकारा दिला सकता है।

मैं अपनी बेटी का यह एक बहुत ही अजीब सा काम ले कर चला था, क्योंकि मुझे तो यह काम कम से कम अजीब सा ही लगा पर मेरी बेटी जानती है कि वह क्या कह रही थी।

इसके अलावा जब उसकी माँ मर रही थी तब मैंने उसकी माँ से यह वायदा किया था कि मैं उसकी बेटी की हर इच्छा पूरी करूँगा। इसलिये भी मैं अपनी रानी से किया गया अपना वायदा निभाने के लिये और उसका सन्देश देने के लिये यहाँ आया हूँ।"

यह सुन कर हरा नाइट बोला — "आपकी बेटी ने जब आपसे यह सब कहा तब वह बहुत दुखी थी और यह मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि जिस समय उसने आपको यह सन्देश दिया वह मेरे बारे में नहीं सोच रही थी। क्योंकि मेरे बारे में तो वह सोच ही नहीं सकती थी।

शायद वह चर्च के आँगन में जो मिट्टी के हरे ढेर बने रहते हैं उनके बारे में सोच रही थी जहाँ वह खुद अकेले आराम करना चाहती थी। पर शायद मैं उसको उसके दुख को कम करने के लिये उसके लिये आपको कुछ दे सकता हूँ।

आप यह छोटी सी किताब ले जाइये और जा कर राजकुमारी को दे दीजियेगा। और उससे कहियेगा कि जब भी वह दुखी हो या उसका दिल भारी हो तो वह अपनी पूर्व की तरफ की खिड़की खोले और यह किताब पढ़े। मुझे यकीन है कि इस किताब को पढ़ कर उसका दिल जरूर खुश होगा।"

यह कह कर उस हरे नाइट ने राजा को एक छोटी सी हरी किताब थमा दी। राजा ने उस किताब को खोल कर देखा तो वह

उसको पढ़ नहीं सका क्योंकि वह उसमें इस्तेमाल किये गये अक्षरों को ही नहीं पहचान सका जिसमें उसमें लिखे शब्द लिखे गये थे।

फिर भी उसने हरे नाइट से वह किताब ले ली और उसको उसके स्वागत और उसकी आवभगत के लिये धन्यवाद दिया। उसने नाइट को विश्वास दिलाया कि उसको वाकई बहुत अफसोस था कि उसने इस तरह आ कर उसको परेशान किया। राजकुमारी का ऐसी कोई इरादा नहीं था।"

हरे नाइट ने राजा से किले में रात भर ठहरने के लिये प्रार्थना की कि वह सुबह होते ही अपने राज्य चला जाये। असल में तो वह राजा को और ज़्यादा समय के लिये भी रखना चाहता था पर राजा ने उससे कहा कि वह और ज़्यादा नहीं रुक सकता था क्योंकि अगले दिन तो उसको जाना ही था।

सो अगले दिन सुबह राजा ने अपने मेज़बान को विदा कहा और उसी रास्ते से वापस चल दिया जिससे वह आया था। वह वहाँ तक आ गया जहाँ उसने सबसे पहले सूअर देखे था फिर वहाँ से वह सीधे अपने घर आ गया।

घर आ कर सबसे पहले वह उस टापू पर गया जिस पर उसकी बेटी रहती थी। वह वहाँ गया और जा कर राजकुमारी को वह हरी किताब दी।

जब राजा ने राजकुमारी को हरे नाइट के बारे में बताया और उसकी नमस्ते और हरी किताब दी तो उसका मुँह तो आश्चर्य से

खुला का खुला रह गया क्योंकि उसने तो कभी यह सोचा ही नहीं था कि हरा नाइट नाम का कोई आदमी भी होगा। और आदमी होना तो दूर वह इस धरती पर भी कहीं होगा।

उसी शाम जब उसके पिता चले गये तो उसने पूर्व की तरफ की खिड़की खोली और वह किताब पढ़नी शुरू की हालाँकि वह किताब उसकी अपनी भाषा में नहीं लिखी थी। उस किताब में बहुत सारी कविताऐं थीं और उनकी भाषा बहुत सुन्दर थी। सबसे पहले जो उसने पढ़ा वह यह था —

समुद्र पर हवा चल निकली है,
वह खेतों पर और मैदानों पर बहती है,
और जब धरती पर शान्त रात छाती है,
नाइट के साथ कौन उसका विश्वास बाँधेगा?

जब वह इस पहली कविता की पहली लाइन पढ़ रही थी तो उसको साफ साफ लगा कि समुद्र पर हवा चलने लगी थी। जब उसने उस कविता की दूसरी लाइन पढ़ी तो उसने पेड़ों की पत्तियों के हिलने की आवाज सुनी।

जब उसने उस कविता की तीसरी लाइन पढ़ी तो उसकी जो दासियाँ थीं और जो भी किले के आस पास थे सब गहरी नींद में सो गये। और जब उसने कविता की चौथी लाइन पढ़ी तो वह हरा नाइट खुद चिड़िया का रूप रख कर खिड़की में से अन्दर आ गया।

अन्दर आ कर वह आदमी के रूप में आ गया और राजकुमारी को बहुत ही नम्रता से नमस्ते की। उसने राजकुमारी से कहा कि वह डरे नहीं।

उसने उससे यह भी कहा कि वह वही हरा नाइट था जिसके पास उसके पिता मिलने के लिये आये थे और जिसकी दी हुई किताब वह पढ़ रही थी।

उस कविता को पढ़ कर उसने उसको खुद ही वहाँ बुलाया था। वह उससे बेहिचक बात कर सकती थी। उससे बात करने से उसका दुख कुछ कम होगा।

यह सुन कर राजकुमारी को हरे नाइट के ऊपर कुछ विश्वास पैदा हुआ तो उसने उस हरे नाइट से अपने मन की सब बातें कह दीं।

उधर उस हरे नाइट ने भी उसके साथ इतनी सहानुभूति और प्यार से बातें कीं कि वह उसकी बातें सुन कर बहुत खुश हो गयी। इससे पहले वह इतनी खुश कभी नहीं थी।

बाद में हरा नाइट बोला कि जब भी वह किताब खोलेगी और वह पहली कविता पढ़ेगी तो वैसा ही होगा जैसा कि आज शाम को हुआ है।

राजकुमारी के सिवा टापू पर सारे लोग सो जायेंगे और वह वहाँ तुरन्त ही आ जायेगा जबकि वह वहाँ से बहुत दूर रहता था। राजकुमार ने कहा कि अगर वह उससे वाकई मिलना चाहेगी वह

उसके पास खुशी से आयेगा। अब वह उस किताब को बन्द कर के रख दे और जा कर आराम करे।

उसी समय राजकुमारी ने किताब बन्द कर दी। किताब बन्द करते ही वह हरा नाइट भी वहाँ से गायब हो गया और टापू वाले सारे लोग जो सो गये थे वे सभी जाग गये। फिर राजकुमारी भी सोने चली गयी।

रात को सपने में भी वह हरे नाइट को ही देखती रही और जो कुछ उसने उससे कहा था वही उसके सपने में भी आता रहा। जब वह सुबह को उठी तो उसका दिल बहुत हल्का था और वह बहुत खुश थी। इतनी खुश वह पहले कभी नहीं हुई थी।

अब वह पहले से ज़्यादा तन्दुरुस्त रहने लगी थी। उसके गालों का रंग गुलाबी हो गया था और अब वह बात बात पर हँसती और मजाक करती थी।

उसमें यह बदलाव देख कर उसके आस पास के लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ कि राजकुमारी को यह क्या हो गया है। राजा ने कहा कि शाम की हवा और उस छोटी सी हरी किताब ने उसकी ज़िन्दगी में यह बदलाव ला दिया है। राजकुमारी ने कहा कि वह ठीक कह रहा है।

पर यह बात कोई नहीं जानता था कि हर शाम राजकुमारी वह छोटी हरी किताब पढ़ती और हर शाम वह हरा नाइट उसके पास

आता और फिर वे दोनों बहुत देर तक बातें करते रहते और यही उसकी ख़ुशी का भेद था।

तीसरे दिन हरे नाइट ने उसको एक सोने की अँगूठी दी और उन दोनों ने अपनी शादी पक्की कर ली पर तीन महीने से पहले वह उसका हाथ माँगने के लिये उसके पिता के पास नहीं जा सका। उसके बाद ही वह अपनी प्रिय पत्नी को अपने घर ले जा सकता था।

इस बीच राजकुमारी की सौतेली माँ को पता चला कि राजकुमारी की तन्दुरुस्ती तो बहुत अच्छी हो रही है और वह बहुत सुन्दर भी होती जा रही है। वह पहले से कहीं ज़्यादा ख़ुश है।

रानी को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उदास हो गयी क्योंकि वह तो हमेशा से ही यह उम्मीद करती थी कि वह धीरे धीरे दुबली हो जायेगी और फिर मर जायेगी। उसके बाद उसकी अपनी बेटी राजकुमारी बन जायेगी और राज्य की वारिस बन जायेगी।

सो एक दिन उसने अपने दरबार की एक दासी को उस टापू पर राजकुमारी के पास भेजा और उसको कहा कि वह राजकुमारी की इस तन्दुरुस्ती और ख़ुश रहने का भेद पता लगा कर लाये।

अगले दिन वह दासी लौट आयी और उसने आ कर रानी को बताया कि यह सब इसलिये हो रहा था कि राजकुमारी रोज शाम को

अपनी खिड़की खोल कर बैठ जाती थी और एक किताब पढ़ती थी जो उसको किसी अजीब से राजकुमार ने दी थी।

फिर शाम की हवा ने उसको गहरी नींद में सुला दिया और यह हर शाम उसके दरबार की सब स्त्रियों के साथ होता था कि वे सब शाम को इसी तरीके से सो जाती थीं।

उन्होंने उससे यह शिकायत भी की कि यह सब हालात उनको बीमार बना रहे थे जबकि वे ही हालात राजकुमारी की हालत अच्छी कर रहे थे।

अगले दिन रानी ने अपनी बेटी को राजकुमारी के ऊपर जासूसी करने के लिये भेजा और उसको कहा कि वह उसकी सारी हरकतों पर नजर रखे और आ कर उसे बताये।

उसने उससे यह भी कहा कि "इस खिड़की में ही शायद कोई भेद छिपा है। शायद कोई आदमी इसमें से आता है। सो उस खिड़की पर ध्यान रखना।"

उसकी बेटी भी अगले दिन लौट आयी पर वह भी रानी को उससे ज़्यादा कुछ नहीं बता सकी जो उसकी दासी ने उसको बताया था। क्योंकि जैसे ही राजकुमारी ने अपनी खिड़की खोली और अपनी वह छोटी किताब पढ़नी शुरू की तो वह सो गयी।

यह सुन कर तीसरे दिन रानी खुद उससे मिलने के लिये गयी। वह राजकुमारी से बहुत ही मीठा व्यवहार कर रही थी। उसने

उसको दिखाया कि वह उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी देख कर कितनी खुश थी।

रानी ने उससे उतने सवाल पूछे जितने वह उससे पूछने की हिम्मत कर सकती थी। पर वह भी जितना उसको मालूम था उससे ज़्यादा और कुछ मालूम नहीं कर सकी।

उसके बाद वह उसकी पूर्व की खिड़की के पास गयी जहाँ वह राजकुमारी हर शाम बैठती थी और अपनी किताब पढ़ती थी। उस खिड़की की अच्छी तरह से जाँच की पर वहाँ भी उसको कोई ऐसी खास चीज़ नहीं मिली जिससे उसकी गुत्थी कुछ सुलझती।

वह खिड़की जमीन से काफी ऊपर थी और उसके आस पास बहुत सारी बेलें लगी हुई थीं जिससे उस पर किसी भी आदमी का चढ़ना नामुमकिन था।

सो रानी ने एक कैंची ली, उसकी नोकों में जहर लगाया और उसको उसकी नोकों को ऊपर कर के खिड़की में अटका दिया पर उसने उसको ऐसे अटकाया कि वह वहाँ किसी को दिखायी न दे।

जब शाम हुई तो रोज की तरह से राजकुमारी अपने हाथ में वह हरी किताब ले कर उस खिड़की के पास बैठी तो रानी ने सोचा कि वह ध्यान रखेगी कि वह किसी तरह भी सोने न पाये जैसा कि पहले दूसरे लोग कर चुके थे पर जब राजकुमारी ने वह किताब पढ़नी शुरू की तो उसके इरादे ने उसकी कोई सहायता नहीं की।

जैसे ही राजकुमारी ने वह किताब पढ़ना शुरू किया तो रानी की पलकें अपने आप ही झुकने लगीं और सबके साथ साथ वह भी गहरी नींद सो गयी।

उसी समय हरा नाइट एक चिड़िया के रूप में वहाँ आया। उस के आने का किसी को पता नहीं चला सिवाय राजकुमारी के। फिर दोनों ने इस बारे में खूब बातें कीं कि बस अब हरे नाइट के राजा के पास जाने का केवल एक हफ्ता ही बचा था।

फिर वह नाइट राजा के दरबार में जा कर उससे राजकुमारी से शादी के लिये उसका हाथ माँग लेगा। शादी कर के वह उसे अपने घर ले जायेगा और फिर वह उसके हरे किले में हमेशा उसके पास रहेगी।

उसका यह हरा किला भी हरे हरे जंगलों के बीच में बना हुआ था जहाँ से उसका सारा राज्य दिखायी देता था और जिसके बारे में उसने राजकुमारी से कई बार बात की है। बात करने के बाद में हरे नाइट ने उस विदा ली, चिड़िया बना और खिड़की के बाहर उड़ गया।

पर उस समय वह इत्तफाक से उस खिड़की के ऊपर से इतना नीचे उड़ा कि रानी ने जो कैंची खिड़की में लगायी थी उसकी नोक से उससे उसकी एक टाँग में खरोंच आ गयी। उसके मुँह से एक चीख निकली पर फिर वह जल्दी ही वहाँ से उड़ गया।

राजकुमारी ने जब हरे नाइट की चीख सुनी तो वह कूद कर वहाँ गयी। इस कूदने में उसके हाथ से वह किताब नीचे फर्श पर गिर गयी और बन्द हो गयी। उसके मुँह से भी एक चीख निकली और रानी और सबकी आँख खुल गयी।

राजकुमारी की चीख की आवाज सुन कर सब राजकुमारी की तरफ दौड़े गये कि उसको क्या हुआ। उसने उनको बताया कि उसको कुछ नहीं हुआ था और वह ठीक थी। बस उसकी ज़रा सी आँख लग गयी थी तो उसी में उसने एक बुरा सपना देख लिया।

पर उसी समय से हरे नाइट को बुखार आ गया और उसको बिस्तर पर लिटा दिया गया।

इसी बीच रानी खिड़की में से अपनी कैंची निकालने के लिये खिड़की तरफ खिसक गयी। वहाँ जा कर उसने देखा कि उसकी कैंची की नोक पर तो खून लगा है। उसने उसको तुरन्त ही वहाँ से निकाल कर अपने कपड़ों में छिपा लिया और अपने घर ले गयी।

उधर राजकुमारी सारी रात सो नहीं पायी और दूसरे दिन भी बहुत परेशान रही। फिर भी वह कुछ ताजा हवा लेने के लिये खिड़की के पास जा बैठी।

उसने अपनी पूर्व वाली खिड़की खोली अपनी किताब खोली और रोज की तरह से उसमें से पढ़ने लगी।

समुद्र पर हवा चल निकली है,
वह खेतों पर और मैदानों पर बहती है,

और जब धरती पर शान्त रात छाती है,
नाइट के साथ कौन उसका विश्वास बाँधेगा?

और हवा पेड़ों के बीच से बह निकली, पेड़ों की पत्तियाँ की सरसराहट भी सुनायी दी, राजकुमारी के सिवा उस टापू के सभी लोग सो गये पर हरा नाइट नहीं आया।

इस तरह कई दिन निकल गये। राजकुमारी रोज उस खिड़की को खोल कर बैठती, रोज अपनी किताब पढ़ती, रोज हवा की आवाज सुनती, रोज हवा से होती पत्तों की सरसराहट सुनती पर हरा नाइट नहीं आता।

उसके लाल गाल फिर से पीले पड़ने लगे और उसका दिल फिर से दुखी और नाखुश हो गया। वह फिर से दुबली होने लगी। उसके पिता को यह देख कर बहुत चिन्ता हो गयी कि उसकी हँसती खेलती बेटी को क्या हो गया पर उसकी सौतेली माँ को इस बात से बहुत खुशी हुई।

एक दिन राजकुमारी अपने टापू के किले के बागीचे में उदास घूम रही थी। घूमते घूमते वह थक गयी सो थक कर वह एक बहुत ऊँचे पेड़ के नीचे पड़ी बैन्च पर बैठ गयी।

वहाँ वह बैठी बैठी बहुत देर तक अपने उदास विचारों में खोयी रही कि वहाँ दो रैवन[31] आये और उसके सिर के ऊपर की एक शाख पर आ कर बैठ गये और आपस में बात करने लगे।

एक बोला — "यह कितने दुख की बात है कि हमारी राजकुमारी अपने प्रेमी के दुख में जान देने को भी तैयार है।"

दूसरा रैवन बोला — "और जबकि केवल वह ही उसका वह घाव ठीक कर सकती है जो हरे नाइट को रानी की जहरीली कैंची से हुआ है।"

पहले रैवन ने पूछा — "वह कैसे?"

दूसरे रैवन ने जवाब दिया — "एक सी चीज़ें एक दूसरे को ठीक करती हैं। राजकुमारी के पिता राजा के आँगन में, उसकी घुड़साल के पश्चिम की तरफ एक पत्थर के नीचे एक छेद में एक ज़हरीली साँपिन अपने नौ बच्चों के साथ रहती है।

अगर राजकुमारी को उसके ये नौ बच्चे मिल जायें तो वह उनको पका ले और उसके तीन बच्चे रोज राजकुमार को खिलाये तो वह ठीक हो जायेगा नहीं तो उसका कोई और इलाज नहीं है।"

इतना कह कर वे वहाँ से उड़ गये। जैसे ही रात हुई तो राजकुमारी अपने किले से छिप कर निकल ली और समुद्र के किनारे

[31] Raven is a black crow-like bird. See its picture above.

जा पहुँची। वहाँ उसको एक नाव मिल गयी। उस नाव को खे कर वह अपने पिता के महल जा पहुँची।

वहाँ वह सीधी महल के आँगन में पत्थर के पास पहुँची। वह पत्थर बहुत भारी था फिर भी उसने उसको हटाया। वहाँ उसको नौ साँप के बच्चे मिल गये।

उसने उन बच्चों को अपने ऐप्रन में बाँध लिया और उसी रास्ते पर चल दी जो उसके पिता ने जब वह राजाओं की मीटिंग में गया था लिया था।

सो वह महीनों तक पैदल चलती हुई ऊँचे पहाड़ों पर और घने जंगलों में होती हुई वहीं आ गयी जहाँ उसके पिता को सूअरों को झुंड मिला था।

उसने राजकुमारी को जंगलों में से हो कर उस तरफ जाने के लिये इशारा कर दिया जिधर दूसरा चराने वाला था। दूसरे चराने वाले के पास पहुँचने पर उस दूसरे चराने वाले ने उसको तीसरे चराने वाले के पास भेज दिया।

आखिर वह हरे नाइट के महल तक आ पहुँची। वहाँ हरा नाइट जहर से बीमार और बुखार में पड़ा हुआ था। वह इतना बीमार था कि वह किसी को पहचान भी नहीं रहा था। उसको उस घाव की वजह से इतना दर्द था कि वह बिस्तर में भी बहुत बेचैन था।

दुनियाँ के कोने कोने से डाक्टर बुलाये गये थे पर किसी भी डाक्टर का कोई इलाज उसको ज़रा सा भी आराम नहीं दे पाया था।

राजकुमारी हरे नाइट के रसोईघर में गयी और वहाँ रसोइये से पूछा अगर वह उसको शाही रसोई में कुछ काम दे सकता। वह बर्तन धो सकती थी या फिर कुछ और जो काम भी वह उसको देना चाहता हो। बस उसको रहने की जगह चाहिये थी। रसोइये ने उसको वहाँ रहने की इजाज़त दे दी।

क्योंकि वह बहुत साफ रहती थी, काम बहुत जल्दी करती थी और कोई भी काम करने के लिये तैयार रहती थी रसोइये को वह राजकुमारी बहुत अच्छी लगी। उसने उसको वहाँ का काम करने में उसको काफी आजादी दे दी।

रसोइये का यह विश्वास जीतने के बाद राजकुमारी ने रसोइये से कहा — "आज मुझे राजा के लिये सूप तैयार करने दो। मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि उनके लिये सूप कैसे तैयार करना है। मैं उस सूप को अकेले ही तैयार करना चाहती हूँ। कोई भी मेरे बर्तन में झाँके नहीं।"

रसोइया मान गया सो उसने नाइट के लिये उन नौ साँपों के बच्चों में से तीन साँप के बच्चों का सूप बना दिया। वह उस सूप को ले कर हरे नाइट के पास ले गयी और वह सूप उसको पिला दिया।

सूप पी कर उसका बुखार इतना उतर गया कि वह अब अपने होश में आ गया, अपने चारों तरफ के सब लोगों को पहचानने लगा और ठीक से बातें करने लगा।

उसने अपने रसोइये को बुलाया और उससे पूछा — "यह सूप क्या तुमने पकाया था जिसने मुझे इतना फायदा किया?"

रसोइये ने जवाब दिया — "जी हॉ मैंने ही बनाया था क्योंकि कोई और दूसरा तो आपके लिये सूप बना ही नहीं सकता था।" तब हरे नाइट ने उसको अगले दिन वैसा ही सूप और बनाने के लिये कहा।

अब रसोइये की बारी थी राजकुमारी के पास जाने की और उससे कहने की कि वह नाइट के लिये कल जैसा ही सूप बना दे।

सो उसने उस दिन भी तीन सॉप के बच्चे लिये, उनका सूप बनाया और उनका सूप बना कर हरे नाइट के पास ले गयी और उसको पिलाया। अबकी बार उस सूप को पी कर हरे नाइट को इतना अच्छा लगा कि वह बिस्तर से उठ कर खड़ा हो गया।

यह देख कर तो डाक्टर लोग हैरान रह गये। वे समझ ही नहीं सके कि यह सब कैसे हो गया। पर उनको यकीन था कि अब तक वे जो दवाऐं हरे नाइट को दे रहे थे वे सब उस पर अब असर कर रही थीं।

तीसरे दिन रसोईघर की नौकरानी को फिर से वह सूप तैयार करना पड़ा। इस सूप में उसने वे आखिरी तीन सॉप के बच्चे डाल

दिये और वह सूप फिर हरे नाइट के पास ले कर गयी। उस सूप को पीने के बाद तो हरा नाइट बिल्कुल ही ठीक हो गया।

वह कूदा और रसोईघर में रसोइये को खुद धन्यवाद देने के लिये गया क्योंकि वही तो उसका असली डाक्टर था जिसने उसको ठीक किया था।

अब हुआ क्या कि जैसे ही वह रसोईघर में पहुँचा तो वहाँ तो एक नौकरानी के अलावा और कोई था ही नहीं और वह नौकरानी भी उस समय बर्तन पोंछ रही थी।

जैसे ही उसने उसको देखा तो वह उसको पहचान गया। तुरन्त ही उसको लगा कि उस लड़की ने उसके लिये क्या किया है। उसने उस लड़की को अपनी बाँहों मे ले लिया और बोला —

"ओह तो वह तुम हो जिसने मेरा इलाज किया है। मेरी जान बचायी है। और मेरे शरीर के अन्दर जो जहर घुस गया था उससे छुटकारा दिलाया है। यह जहर मेरे शरीर में तब घुसा था जब मेरे खिड़की में रखी कैंची की खरोंच लगी जो रानी ने वहाँ रखी थी।"

राजकुमारी इस बात से मना नहीं कर सकी। वह बहुत खुश थी और साथ में हरा नाइट भी।

दोनों की शादी उस हरे किले में ही हो गयी और फिर दोनों ने वहाँ के हरे जंगलों मे रहने वालों पर बहुत सालों तक राज किया। और शायद अभी भी वहाँ राज कर रहे होंगे।

10 जंगली हंस[32]

बहुत दूर एक देश में जहॉ ठंड में चिड़ियें उड़ती हैं, यानी डेनमार्क देश में, एक राजा रहता था। उसके ग्यारह बेटे थे और एक बेटी थी जिसका नाम था ऐलीसा[33]। इन बच्चों की मॉ नहीं थी।

राजा के ग्यारह बेटे अपनी कमर में तलवार लटका कर और अपनी छाती पर एक तारा लगा कर स्कूल जाते थे। वे हीरे की कलम से सोने की स्लेट पर लिखते थे।

उनको अपने पाठ ऐसे जबानी याद थे जैसे वे उसको किताब से पढ़ रहे हों। तुम उनको देख कर ही यह कह सकते थे कि वे कितने राजकुमार जैसे लगते थे।

उनकी बहिन ऐलीसा एक साफ सुथरे शीशे के नीचे स्टूल पर बैठती थी। उसके पास तस्वीरों की एक किताब थी जिसकी कीमत राजा के आधे राज्य के बराबर थी।

सब बच्चे बहुत खुशी खुशी रह रहे थे पर उनकी यह खुशी बहुत दिनों तक नहीं रही।

---

[32] The Wild Swans – a fairy tale from Denmark, Europe. Taken from the Web Site : http://www.andersen.sdu.dk/vaerk/hersholt/TheWildSwans_e.html Collected by Hans Christian Andersen. Translated in English by Jean Hersholt
[Other tales of this type include "The Magic Swan Geese", "The Seven Ravens", "The Twelve Wild Ducks", "Udea and Her Seven Brothers" and "The Twelve Brothers". Read all these and more such tales in the Book "Chhah Hans Jaisi Kahaniyan" available from hindifolktales@gmail.com]

[33] Elisa – name of the sister of eleven brothers

कुछ दिन बाद उनके पिता ने दूसरी शादी कर ली। उनकी नयी मॉ एक बहुत ही बुरी स्त्री थी। वह राजा के बच्चों को ठीक से नहीं रखती थी। बच्चों ने यह बात पहले दिन से ही जान ली थी।

एक दिन सारे महल में खूब खाना पीना चल रहा था। बच्चे भी मेहमानों के स्वागत में लगे हुए थे। पर उनको केक और बेक[34] किये गये सेब के मिलने की बजाय जो ऐसी दावतों में उनको अक्सर मिला करता था उनकी नयी सौतेली मॉ ने उनको प्याले में रेत भर कर दे दिया। और उनसे कहा कि वे उसको खास खाना समझ कर खायें। बच्चों को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा।

अगले हफ्ते रानी ने ऐलीसा को एक गॉव में कुछ किसानों के साथ रहने के लिये भेज दिया। और इस बीच उसने राजा को बच्चों के बारे में कुछ झूठी बातें कह कर उसका मन ऐसा कर दिया कि राजा का मन अपने बच्चों से फिर गया।

एक दिन रानी ने राजकुमारों से कहा — "जाओ, तुम लोग बड़ी चिड़िया बन कर उड़ जाओ जिसकी आवाज नहीं होती और जा कर अपनी रोजी रोटी अपने आप कमाओ।"

पर वह राजकुमारों को इतना नुकसान नहीं पहुॅचा सकी जितना कि वह चाहती थी। क्योंकि उसके यह कहते ही वे बहुत ही

[34] Baking is a process in which the raw material is cooked under fire kept around it. It is cooked with its heat only. Now a days where this type of food is cooked it is called oven. This type of cooking is very common in western countries. Bread, cookies, buiscuits, bread etc items are cooked in this way only.

खूबसूरत ग्यारह सफेद हंसों में बदल गये और एक अजीब सी आवाज के साथ महल की खिड़की से बाहर बागीचे के पार जंगल में उड़ गये।

अभी सुबह होने में देर थी और ऐलीसा अभी सो ही रही थी कि वे हंस उसकी झोंपड़ी के ऊपर से उड़े जहाँ वह रह रही थी। वे उसकी झोंपड़ी की छत पर उतर गये।

वहाँ उन्होंने अपनी लम्बी गरदन को इधर उधर घुमाया, अपनी चोंचों से उस झोंपड़ी की छत को खुरचा, अपने पंख फड़फड़ाये पर न तो उनको किसी ने देखा और न ही उनको किसी ने सुना।

सो वे बेचारे फिर आसमान में ऊपर बादलों में उड़ गये और दुनियाँ में दूर चले गये। उड़ते उड़ते वे एक बड़े से घने जंगल में आ गये जो समुद्र तक फैला चला गया था।

ऐलीसा बेचारी वहीं किसान की झोंपड़ी में रहती और एक हरी पत्ती से पीकेबू[35] खेलती रहती क्योंकि उसके पास खेलने के लिये और कोई चीज़ ही नहीं थी।

वह पत्ते में एक छेद बना लेती और उस छेद में से सूरज को देखती। उस छेद में से सूरज को देख कर उसको ऐसा लगता जैसे वह अपने भाइयों की चमकीली आँखें देख रही हो।

---

[35] Peek-a-boo is a game, normally played with very young children. One person hides behind something and at time to time peeps out of that hiding place and calls Peek-a-boo to the other child. The child laughs as first he does not see anybody and then suddenly he sees the face of the person.

और जब भी सूरज की गर्म किरनें उसके गालों को छूतीं तो उसको लगता जैसे उसके भाई उसको प्यार कर रहे हों।

एक दिन हवा चली और उसने उस झोंपड़ी के चारों तरफ लगी गुलाब के पौधों की दीवार पर लगे गुलाबों को हिला दिया और उनके कान में फुसफुसायी — "तुमसे ज़्यादा सुन्दर और कौन हो सकता है?"

फूल अपना सिर ना में हिला कर बोले "हम नहीं, ऐलीसा।"

इतवार को जब उस किसान की पत्नी दरवाजे में बैठी साम्स की किताब[36] पढ़ रही थी तो हवा ने उसकी किताब के पन्ने उड़ाये और उससे पूछा — "तुमसे बड़ा संत और कौन हो सकता है?"

वह किताब भी बोली "मैं नहीं, ऐलीसा।"

गुलाबों ने भी कहा कि यह किताब बिल्कुल सच कह रही है।

ऐलीसा को जब वह पन्द्रह साल की हो जाती तब घर वापस जाना था पर रानी ने देखा कि वह तो बहुत ही सुन्दर राजकुमारी होती जा रही थी तो उसके मन में राजकुमारी के लिये और ज़्यादा नफरत पैदा हो गयी।

उसको उस बच्ची को भी हंस में बदलने में कोई हिचक नहीं हुई जैसे कि उसने उसके भाइयों को बदला था। पर वह यह काम उसी समय नहीं कर सकती थी क्योंकि राजा अपनी बेटी को देखना चाहता था।

[36] Psalms is one of the several books of Bible.

सो सुबह सवेरे ही रानी अपने संगमरमर के बने कमरे में नहाने के लिये गयी जिसमें बहुत कीमती कालीन बिछा हुआ था और गद्दियाँ पड़ी हुई थीं।

वहाँ वह अपने साथ तीन मेंढक[37] ले गयी और उनको चूम कर उनमें से एक मेंढक से बोली — "जब ऐलीसा नहाये तो तुम उसके सिर पर बैठ जाना जिससे वह तुम्हारे जैसी आलसी हो जाये।"

फिर वह दूसरे मेंढक से बोली — "तुम ऐलीसा के माथे पर बैठ जाना ताकि वह उतनी ही बदसूरत हो जाये जितने तुम खुद हो।"

फिर वह तीसरे मेंढक से बोली — "तुम उसके दिल के ऊपर बैठ जाना ताकि उसके मन में हमेशा बुरी बुरी इच्छाऐं उठती रहें।"

उसके बाद रानी ने वे तीनों मेंढक साफ पानी में छोड़ दिये। पानी में पड़ते ही वे मेंढक हरे रंग के हो गये। फिर उसने ऐलीसा को बुलाया और उसको कपड़े उतार कर नहाने के लिये जाने के लिये कहा।

जब ऐलीसा पानी में घुसी तो एक मेंढक उसके बालों से चिपक गया, दूसरा मेंढक उसके माथे से चिपक गया और तीसरा मेंढक उसके दिल पर बैठ गया। पर ऐलीसा को इसका पता ही नहीं चला।

---

[37] There are two types of frogs – frogs and toads. Frogs are beautiful having smooth moist shiny bright green color skin; while toads are of dull green sandy color, with dry and warty skin. Frogs live on both land and water.

जब वह नहा कर खड़ी हुई तो तीन लाल रंग के पौपी के फूल[38] पानी में तैर गये। अगर वे मेंढक जहरीले न हुए होते और उस जादूगरनी ने न चूमे होते तो वे लाल गुलाब बन गये होते। पर वे उसका माथा और दिल छू कर कम से कम फूलों में तो बदल गये।

ऐलीसा इतनी ज़्यादा भोली थी कि रानी की जादूगरी भी उसके ऊपर असर नहीं कर पायी।

जब रानी ने यह महसूस किया कि उसकी जादूगरी बेकार गयी तो उसने ऐलीसा के शरीर पर अखरोट का रंग मल दिया जिससे उसका शरीर गहरे कत्थई रंग का हो गया।

उसके चेहरे पर एक गन्दी सी क्रीम का लेप कर दिया और उस के बाल बिगाड़ दिये। अब सुन्दर ऐलीसा को कोई नहीं पहचान सकता था।

फिर वह उसको राजा के पास ले गयी तो राजा तो उसको देख कर दंग रह गया। राजा ने उसको देखते ही कहा कि यह मेरी बेटी नहीं हो सकती।

उसको पहरा देने वाले कुत्ते और चिड़ियों के अलावा और कोई नहीं जानता था। और वे सब बहुत ही नम्र थे सो वे कुछ कह नहीं सकते थे।

---

[38] Poppy flowers grow in quite a few colors but normally they are red. Its seeds are called opium. See its picture above

यह सब देख कर बेचारी ऐलीसा रो पड़ी और अपने भाइयों को याद करने लगी जो अब सब बहुत दूर थे। भारी दिल से वह महल से बाहर निकल आयी और सारा दिन वह खेतों और मैदानों में घूमती रही।

घूमते घूमते वह एक बड़े जंगल में आ निकली। वह नहीं जानती थी कि अब वह कहाँ जाये। वह बहुत दुखी थी और बस उसकी यही इच्छा थी कि काश उसके भाई उसके पास होते।

उसको लगा कि लगता है वे भी उसी की तरह से महल से बाहर निकाल दिये गये होंगे सो उसने तय किया कि वह उनको ढूँढ कर ही रहेगी।

वह अभी कुछ ही देर जंगल में ठहरी थी कि रात होने लगी। उसको लगा कि वह रास्ता भूल गयी थी। सो उसने अपनी रात की प्रार्थना की और एक जगह मुलायम सी घास देख कर उस पर लेट गयी। उसने एक पेड़ की लकड़ी का तकिया बना लिया था।

सब कुछ शान्त था। हवा बहुत ही धीरे बह रही थी। बहुत सारे पटबीजने[39] इधर उधर घास में चमक रहे थे। वह जल्दी ही सो गयी। सारी रात वह अपने भाइयों के ही सपने देखती रही।

सपने में उसने देखा कि जैसे वे सब फिर से बच्चे बन गये हैं। आपस में खेल रहे हैं। अपनी हीरों की कलम से सोने की स्लेटों पर

[39] Translated for the word "Fireflies"

लिख रहे हैं। और वह अपनी तस्वीरों की किताब देख रही है। उसमें छपी हुई हर तस्वीर उसको जानदार दिखायी दे रही थी।

जब वह सुबह उठी तो सूरज बहुत देर का निकल आया था। पहले तो उसको साफ साफ कुछ दिखायी नहीं दिया क्योंकि पेड़ की शाखों का साया उसकी ऑखों पर पड़ रहा था। पर फिर बाद में ठीक हो गया। चिड़ियें भी उसके पास आ कर उसके कन्धे पर बैठ गयीं।

तभी उसको पानी में छपाकों की आवाज आयी। वह आवाज वहॉ के एक तालाब में से आ रही थी जिसमें कई झरनों से पानी गिर रहा था। उसकी तली में बहुत सुन्दर रेत पड़ी हुई थी।

हालॉकि उस तालाब के चारों तरफ घनी झाड़ियॉ लगी हुई थीं फिर भी किसी हिरन ने पानी के पास तक जाने के लिये एक छोटा सा रास्ता बना लिया था। ऐलीसा उस रास्ते से हो कर पानी तक जा सकती थी।

उस तालाब का पानी इतना साफ था कि अगर हवा से पानी न हिल रहा हो तो उसमें पड़े पेड़ों के साये ऐसे लग रहे थे जैसे तालाब की तली में किसी ने कोई तस्वीर बना दी हो। उसमें पेड़ों की हर पत्ती का साया बहुत साफ था।

वह उस रास्ते से हो कर तालाब तक गयी और पानी में अपना चेहरा देखा तो वह तो उसे देख कर बहुत डर गयी – कितना कत्थई और कितना बदसूरत।

पर जैसे ही उसने अपना पतला सा हाथ पानी में डाल कर उस पानी से अपनी भौंहें और ऑखें साफ कीं तो उसका गोरा रंग फिर से वापस आ गया। यह देख कर उसने कपड़े उतारे और उस साफ पानी में कूद गयी।

सारी दुनियाँ में राजा की बेटी ऐलीसा जैसी सुन्दर और कोई लड़की नहीं थी। नहा धो कर वह पानी से बाहर आयी। उसने अपने कपड़े पहने। फिर अपने लम्बे बालों की चोटी बनायी। वहाँ से वह एक झरने पर गयी और दोनों हाथों से ले कर ठंडा पानी पिया।

वह फिर जंगल में इधर उधर बिना मतलब के घूमती रही। वह बस अपने भाइयों और भगवान के बारे में ही सोचती रही कि भगवान उसको ऐसे ही नहीं छोड़ देगा। वही तो है जो भूखों के लिये खट्टे सेब उगाता है।

फिर वह एक पेड़ की तरफ चली गयी जिसकी डालियाँ फलों से लदी नीचे को झुकी जा रही थीं। वहाँ से फल खा कर वह फिर जंगल की तरफ चल दी।

आगे चल कर वह एक बड़ी शान्त जगह पहुँच गयी। वहाँ एक चिड़िया भी नहीं थी। सूरज की एक किरन भी जंगल के पेड़ों की घनी डालियों मे से हो कर जमीन तक नहीं आ रही थी।

बहुत जल्दी ही वहाँ रात हो गयी और वह भी बहुत अँधेरी रात। रात को सो कर वह सुबह को फिर चल दी।

आगे जा कर राजकुमारी को एक बुढ़िया मिली जिसके पास बैरीज़[40] की एक टोकरी थी। उसने उसको कुछ बैरीज़ दीं तो उसने उस बुढ़िया से पूछा कि क्या उसने ग्यारह राजकुमारों को जंगल से जाते हुए देखा है।

बुढ़िया बोली — "मैंने ग्यारह राजकुमारों को तो नहीं देखा पर हॉ ग्यारह सफेद हंसों को जरूर देखा है जो सुनहरे ताज पहने हुए थे। वे एक नदी में तैर रहे थे। वह नदी यहाँ से पास में ही है।"

कह कर वह बुढ़िया ऐलीसा को एक छोटी सी पहाड़ी की चोटी पर ले गयी। वहाँ से फिर वे दोनों नीचे उतर गये। नीचे उतरते ही नदी थी और नदी के दोनों तरफ पेड़ लगे हुए थे।

वहाँ ऐलीसा ने बुढ़िया को गुड बाई कहा और वह नदी के नीचे की तरफ चल दी जिधर वह समुद्र की तरफ जा रही थी। ऐलीसा ने देखा कि उसके सामने बहुत बड़ा समुद्र पड़ा हुआ था पर उसमें एक भी नाव या जहाज़ नहीं था। तो वह उसको कैसे पार करे।

किनारे पर अनगिनत पत्थर और लोहे के छोटे छोटे टुकड़े पड़े थे जिनको समुद्र का पानी किनारे पर डाल गया था। उसने सोचा कि एक दिन यह समुद्र का पानी जैसे वे पत्थर यहाँ डाल गया है उसी तरह से वह उसको भी उसके भाइयों के पास ले जायेगा।

---

[40] Berry is a small fruit grown on bushes such as huckleberry, strawberry, blackberry, blueberry etc. See their picture above.

वहॉ समुद्री घास भी उगी हुई थी। वहॉ उसको सफेद हंसों के कुछ पंख मिल गये तो वह उसने इकट्ठे कर लिये। उन पर अभी भी पानी की बूॅदें थीं पर वे बूॅदें पानी की थीं या फिर ऑसू की यह नहीं कहा जा सकता। ऐलीसा वहीं बैठ गयी और बहुत देर तक समुद्र को देखती रही।

शाम को उसको ग्यारह सफेद हंस दिखायी दिये जिनके सिर पर सुनहरे ताज रखे हुए थे। वे उड़ते हुए किनारे की तरफ ही आ रहे थे। जब वे एक के पीछे एक उड़ रहे थे तो वे ऐसे लग रहे थे जैसे आसमान में कोई सफेद रिबन उड़ा चला आ रहा हो।

ऐलीसा वहॉ से उठ कर एक झाड़ी के पीछे छिप गयी। हंस वहीं तक आ गये जहॉ ऐलीसा छिपी हुई थी।

जब सूरज समुद्र के नीचे जा रहा था तो उन हंसों ने अपने अपने पंख उतार दिये और अब वहॉ ग्यारह सुन्दर राजकुमार खड़े थे। वे उसके भाई थे। हालॉकि उनकी शक्लें काफी बदल गयी थीं पर फिर भी उसको पूरा विश्वास था कि वह उनको पहचानने में गलती नहीं कर सकती।

उनको देख कर वह रोती हुई अपनी जगह से निकली और अपने सारे भाइयों का अलग अलग नाम लेते हुए उनकी बॉहों में जा कर गिर गयी। वे अपनी छोटी बहिन को देख कर बहुत खुश हुए। वे भी अपनी बहिन को पहचान गये थे हालॉकि वह भी अब लम्बी और सुन्दर हो गयी थी।

वे रो रहे थे, वे हॅस रहे थे। उनको तुरन्त ही पता चल गया कि उनकी सौतेली मॉ ने उन सबके साथ बहुत बेरहमी का बरताव किया है।

बड़े भाई ने अपनी बहिन को बताया — “हम सब जब तक सूरज आसमान में है तब तक जंगली हंस के रूप में उड़ने के लिये मजबूर किये गये। और जब सूरज डूब जाता है तब हम आदमी के रूप में आ सकते हैं।

इसलिये जब सूरज डूबने वाला होता है तो हमको यह देखना पड़ता है कि हम किसी ऐसी जगह के आस पास हो जहॉ हम खड़े हो सकें। क्योंकि अगर उस समय हम आसमान में हुए तो हमारे नीचे गिर जाने का डर है।

हम लोग यहॉ इस किनारे पर नहीं रहते। इस समुद्र के उस पार एक और जमीन है जो इतनी ही अच्छी है वहॉ रहते हैं और वहॉ पहुॅचने के लिये हमें इस समुद्र को पार करना पड़ता है।

हमारे इस रास्ते पर कोई ऐसा टापू नहीं है जहॉ हम रात बिता सकें। बस एक छोटी सी चट्टान है जो समुद्र के बीच में उठी हुई है। वह चट्टान भी इतनी बड़ी नहीं है जो हम सबको जगह दे सके।

हॉ अगर हम बहुत ही पास पास खड़े हों तब हम उसके ऊपर आराम कर सकते हैं। पर अगर समुद्र में तूफान आने लगे तब वहॉ बहुत मुश्किल हो जाती है पर फिर भी वह हमारे लिये एक सहारा तो है ही।

जब हम अपनी आदमी की शक्ल में होते हैं तब हम वहाँ आराम करते हैं। बिना उस चट्टान के हम अपने घर कभी नहीं आ सकते हैं क्योंकि हमको यहाँ आने के लिये साल के दो सबसे ज़्यादा लम्बे दिन लगते हैं।

हमको यहाँ अपनी जमीन पर साल में केवल एक बार आने की और केवल ग्यारह दिन रहने की ही इजाज़त है।

जब हम इस जंगल के ऊपर से उड़ते हैं तो अपना महल देख लेते है जहाँ हमारे पिता रहते हैं और जहाँ हम पैदा हुए थे। यहाँ से हम अपने उस चर्च की ऊँची मीनार भी देख सकते हैं जहाँ हमारी माँ सोयी हुई है।

यह बहुत अच्छा हुआ कि हमने तुमको यहाँ देख लिया। हम यहाँ दो दिन ज़्यादा रह सकते हैं पर उसके बाद हमको अपनी जमीन पर चले जाना चाहिये जो हमारी तो नहीं है पर ठीक है।

पर हम तुमको अपने साथ कैसे ले जायें क्योंकि न तो हमारे पास कोई जहाज़ है और न ही कोई नाव।"

ऐलीसा बोली — "पर मैं तुम सबको इस जादू से कैसे आजाद कराऊँ?"

वे लोग बस कुछ ही देर सोये होंगे वरना तो उनकी सारी रात यही सब बात करते करते बीत गयी।

सुबह को ऐलीसा की आँख हंसों के पंख के फड़फड़ाने से खुली। उसके सब भाई सुबह होते ही हंस बन चुके थे और वे सब

ऊपर आसमान में उड़ रहे थे। उसके बाकी सब भाई तो चले गये पर उसका सबसे छोटा भाई उसी के पास रह गया।

वह उसकी गोद में सिर रख कर लेटा हुआ था और वह उसके पंख सहला रही थी। उन दोनों ने सारा दिन साथ साथ बिताया। शाम को उसके दूसरे भाई भी वापस आ गये। जब सूरज डूब गया तो उसके सभी भाई फिर से आदमी बन गये।

उसका एक भाई बोला — "कल हम लोग चले जायेंगे और फिर एक साल तक नहीं आयेंगे। पर हम तुमको यहाँ ऐसे भी नहीं छोड़ सकते। क्या तुम हमारे साथ चलने की हिम्मत रखती हो?

जब मेरी बाँहें इतनी मजबूत हैं कि वह तुमको जंगल के उस पार तक ले जा सकती हैं तो हमारे पंख भी इतने मजबूत होने चाहिये जो हम तुमको समुद्र पार ले जा सकें।"

ऐलीसा बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। तुम मुझे अपने साथ ले चलो। मैं तुम्हारे साथ चलने के लिये तैयार हूँ।"

वह सारी रात उन सबने एक जाल बनाने में गुजार दी। उन्होंने वह जाल काफी बड़ा और मजबूत बनाया। ऐलीसा उस जाल में लेट गयी और जब सुबह हो गयी तो उसके भाई फिर से हंस बन गये।

उन्होंने अपनी चोंचों में उस जाल को उठाया और अपनी बहिन को ले कर आसमान में उड़ चले ऐलीसा अभी भी सो रही थी। जब सूरज की रोशनी उसकी आँखों पर पड़ी तो एक हंस उसके ऊपर ऐसे उड़ा जिससे उसकी आँखों पर सूरज की रोशनी न पड़े।

वे अभी किनारे से बहुत दूर ही थे कि ऐलीसा की ऑख खुल गयी। उसको लगा कि जैसे वह सपना देख रही है – समुद्र के ऊपर आसमान में उड़ना। उसके बराबर में ही उसके खाने के लिये पकी हुई बैरीज़ की एक शाख और कुछ मीठी जड़ें रखी हुई थी।

उसके सबसे छोटे भाई ने उसके लिये उनको इकट्ठा किया था और उनको उसके लिये वहॉ रख दिया था। उसको यह भी पता चल गया था कि वही उसकी ऑखों को सूरज की धूप से बचाने के लिये उसके सिर के ऊपर उड़ रहा था।

वे लोग हवा में सारा दिन तीर की तरह से उड़ते रहे। पर क्योंकि वे अपनी बहिन को ले जा रहे थे इसलिये वे पहले के मुकाबले में बहुत धीरे उड़ पा रहे थे। रात होने वाली थी और तूफान आने वाला था।

ऐलीसा सूरज डूबता देख कर डर गयी क्योंकि वह समुद्र के बीच की चट्टान जिसका उसके भाइयों ने जिक्र किया था उसको कहीं दिखायी ही नहीं दे रही थी।

उसको ऐसा लगा कि हंसों के पंख और बहुत ज़ोर ज़ोर से चलने लगे हैं। उसको इस बात का भी बहुत अफसोस हुआ कि उसकी वजह से वे जल्दी नहीं उड़ पा रहे हैं।

सूरज जल्दी ही डूब जायेगा और वे हंस से फिर आदमी बन जायेंगे। और आदमी बन जायेंगे तो वे समुद्र में गिर जायेंगे और डूब जायेंगे।

उसने दिल से भगवान की प्रार्थना करनी शुरू कर दी पर फिर भी कोई भी चट्टान उसको कहीं भी नजर नहीं आ रही थी।

काले काले बादल घिरते चले आ रहे थे और चलती हुई तेज़ हवाऐं बता रहीं थीं कि जल्दी ही तूफान भी आने वाला है। बादल बहुत तेज़ी से इधर उधर दौड़ रहे थे। बिजली भी चमकना शुरू हो गयी थी। तभी सूरज समुद्र के किनारे को छूने वाला था।

उसी समय हंसों ने नीचे की तरफ बहुत ज़ोर से उड़ान भरी। ऐलीसा को लगा कि वे हंस नीचे गिर रहे हैं सो उसका दिल बहुत ज़ोर से धड़का। पर वे बीच में ही रुक गये।

सूरज समुद्र में आधा डूब गया था कि तभी ऐलीसा को समुद्र में वह चट्टान दिखायी दी। ऊपर से वह चट्टान पानी में से बाहर निकलते हुए एक सील मछली के सिर जितनी बड़ी दिखायी दे रही थी।

सूरज बहुत तेज़ी से नीचे जा रहा था। वह अब एक सितारे जितना बड़ा दिखायी दे रहा था कि उसके पैरों ने जमीन छुई। उसने देखा कि उसके भाई भी हाथ में हाथ डाले उसके पास खड़े हुए थे। उन लोगों के लिये बस वह ठीक जगह थी।

समुद्र की लहरें उस चट्टान से टकरा टकरा कर उनके ऊपर पानी डाल रही थीं। बार बार बिजली चमक जाती थी। तब भाई बहिन ने मिल कर एक साम गाया जिसने उनको तसल्ली और हिम्मत दी।

अगले दिन सुबह हवा शान्त थी। जैसे ही सूरज निकला ऐलीसा के भाई फिर से हंस बन गये थे सो वे ऐलीसा को ले कर फिर उड़ चले। नीचे समुद्र में अभी भी ऊँची ऊँची लहरें उठ रही थीं और उन पर बहुत सारे हंस तैर रहे थे।

जब सूरज थोड़ा और ऊपर उठा तो ऐलीसा को एक पहाड़ी जगह दिखायी दी जिसकी चोटियाँ उसको हवा में तैरती नजर आ रही थीं। वे चोटियाँ बर्फ से ढकी हुई थीं और उनके बीच में एक किला था जो करीब करीब एक मील लम्बा था।

नीचे बहुत सारे पाम के पेड़[41] लगे हुए थे और किसी चक्की के पाट जितने बड़े बहुत सारे रंगों के बहुत सारे फूल खिले हुए थे। ऐलीसा ने अपने भाइयों से पूछा कि क्या यही वह जगह थी जहाँ उनको आना था। उन्होंने कहा "नहीं।"

वास्तव में उसने जो देखा वह फ़ैटा मौरगैना[42] का हमेशा जगह बदलता हुआ महल था। उसमें धरती का कोई भी आदमी जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

ऐलीसा ने जब दोबारा उस तरफ देखा तो वह किला, पाम के पेड़, फूल सभी कुछ उसको गायब होता नजर आया। उसकी जगह

[41] Palm trees are of many types. They normally grow on sea coastal areas. In India these rees are flound plentily in Tamilnadu and Keral.

[42] Fata Morgana – the name of a witch whose name appears in the story of "Love for Three Oranges" also published in "Teen Santaron Jaisi Kahaniyan" available from hindifolktales@gmail.com

अब वहाँ बीस शानदार चर्च खड़े थे – सब एक से और सबकी खिड़कियाँ नुकीली।

जब वह उनके और पास आयी तो वे जहाज़ी बेड़ा[43] बन गये और जब उसने उनकी तरफ दोबारा देखा तो वहाँ कोहरे के अलावा और कुछ भी नहीं था।

इस तरह से नयी नयी चीज़ें देखते हुए आखिर में वे उस जमीन पर आ गये जहाँ उनको आना था। वहाँ नीले नीले सुन्दर पहाड़ खड़े हुए थे जिन पर सीडर के पेड़[44] लगे हुए थे और वहाँ कई सारे शहर और महल थे।

वे लोग वहाँ शाम होने से बहुत पहले ही पहुँच गये थे और एक पहाड़ के पास एक गुफा में बैठ गये थे जिसमें बड़ी बड़ी बेलें इतनी घनी फैली हुई थीं कि लगता था जैसे उस गुफा में हरा हरा कालीन बिछा हो।

ऐलीसा के सबसे छोटे भाई ने उसको उसके सोने की जगह दिखायी और बोला — "अब देखते है कि यहाँ तुम क्या सपने देखती हो।"

वह तुरन्त बोली — "काश मैं सपने में यह देख सकूँ कि मैं तुम सबको कैसे आजाद कराऊँ।" इस बारे में वह इतना ज़्यादा सोचती

[43] Translated for the words "Fleet of Ships"

[44] Cedar trees

रही और भगवान से प्रार्थना करती रही कि वह यह सब सपने में भी करती रही।

जब वह वहाँ सो गयी तो उसको लगा कि वह अकेली ही फ़ैटा मौरगैना के बादलों के महल के ऊपर उड़ रही है।

वहाँ उसको एक परी मिली जो बहुत गोरी और सुन्दर थी। फिर भी उसकी शक्ल उस बुढ़िया से मिलती थी जो उसको जंगल में मिली थी और जिसने उसको बैरीज़ दी थीं और उन हंसों के बारे में बताया था जो सोने का ताज पहने थे।

परी बोली — "तुम्हारे भाई आजाद हो सकते हैं पर उसके लिये क्या तुम्हारे पास हिम्मत है? यह सच है कि वह समुद्र का पानी जो पत्थरों की शक्ल बदल सकता है तुम्हारे हाथों से ज़्यादा मुलायम है पर तुम्हारे हाथ जो दर्द महसूस कर सकते हैं वह दर्द वह पानी महसूस नहीं कर सकता। क्योंकि उसके तो दिल ही नहीं है जो वह गुस्सा या दिल में दर्द महसूस कर सके जो तुम कर सकती हो।

तुम मेरे हाथ में यह काटने वाला नैटिल[45] देख रही हो? ऐसे बहुत सारे नैटिल के पौधे उस गुफा के आस पास उगे हुए हैं जहाँ तुम सोती हो।

पर याद रखना कि तुमको केवल वही पौधे इस्तेमाल करने हैं जो चर्च के कम्पाउंड में कब्रों के ऊपर उगे हुए हैं। सो तुम उन्हीं

---

[45] Stinging Nettle – a plant having several species, five of which have many hollow stinging hairs on their leaves and stems, which act like hypodermic needles. See the picture of one of its kinds above.

को इकट्ठा करो। हालाँकि उससे तुम्हारे हाथ जलने लगेंगे और उनमें छाले पड़ जायेंगे।

उन नैटिल के पौधों को अपने पैरों से कुचलना तो उसमें से रुई जैसी चीज़ निकलेगी। उस रुई को तुम कातना और उसके धागे से लम्बी बाँह वाली ग्यारह शाही कमीजें बनाना।

एक बार जब तुमने ये ग्यारह कमीजें बना कर अपने भाइयों के ऊपर फेंक दीं तो उनके ऊपर किया हुआ जादू टूट जायेगा।

एक बात तुम और ध्यान में रखना कि तुमको इस काम में चाहे कई साल लग जायें पर जब से भी तुम इस काम को शुरू करो और जब तक खत्म करो तुम बोलना नहीं।

जैसे ही तुम एक शब्द बोली तो वह तुम्हारे भाइयों के दिल में चाकू की तरह से लगेगा। इस तरह उनकी ज़िन्दगी तुम्हारी जबान में है। जो भी मैंने तुमसे कहा है वह सब तुम याद रखना।"

फिर परी ने ऐलीसा के हाथ से नैटिल छुआयी तो उसने ऐलीसा के हाथ में जलन पैदा कर दी जिससे वह जाग गयी।

दिन निकले काफी देर हो चुकी थी। उसने देखा कि जैसे नैटिल के पौधे उसने सपने में देखे थे वैसे ही पौधे उसके चारों तरफ बहुतायत से लगे हुए थे जहाँ वह सो रही थी। उसने घुटने के बल बैठ कर भगवान को धन्यवाद दिया और वहाँ से उठ कर अपना काम शुरू करने चल दी।

उसने अपने कोमल हाथों से उन नैटिल के पौधों से वह कॉटों वाली नैटिल चुनी जो चर्च के कम्पाउंड में कब्रों के ऊपर उगे हुए हैं।

नैटिल चुनते समय उसने उसके हाथों पर बड़े बड़े छाले डाल दिये पर उसने वह सब इस आशा में सह लिया कि वह अपनी प्यारे भाइयों को अपनी सौतेली मॉ के जादू से आजाद करा सकेगी।

उसने नैटिल के हर पौधे को अपने नंगे पैरों से कुचला और उससे निकली हुई हरी रुई को काता।

जब उसके भाई शाम को घर लौटे तो वे यह देख कर चिन्ता में पड़ गये कि उनकी बहिन तो बोल ही नहीं रही थी। उनको लगा कि यह कहीं उनकी सौतेली मॉ का डाला हुआ कोई नया जादू तो नहीं है।

पर जब उन्होंने उसके हाथ देखे तो वे समझ गये कि वह उनको आजाद करने के लिये ही यह सब कर रही थी। सबसे छोटा भाई तो बहिन के हाथों को देख कर रो ही पड़ा।

पर आश्चर्य की बात ऐलीसा के शरीर पर जहॉ जहॉ उसके ऑसू गिरे वहॉ वहॉ से उसका दर्द भी खत्म हो गया और उसके छाले भी ठीक हो गये।

वह रात भर करवटें बदलती रही क्योंकि उसको चैन ही नहीं था जब तक वह अपने भाइयों को उस जादू से आजाद नहीं करा लेती।

अगले दिन जब उसके भाई वहाँ से चले गये तो वह सारा दिन अकेली बैठी रही पर समय इससे पहले कभी इतनी जल्दी नहीं भागा था।

उसकी एक कमीज बन गयी थी और अब वह दूसरी कमीज बनाने बैठी। तभी उसने पहाड़ पर शिकारी बिगुल[46] बजने की आवाज सुनी।

वह आवाज सुन कर वह डर गयी क्योंकि वह आवाज तो उसके पास ही आती जा रही थी और फिर उसने शिकारी कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनी। डर कर वह अपना सामान ले कर गुफा के अन्दर भागी और जा कर उस गठरी पर बैठ गयी जिसमें नैटिल रखी हुई थी।

तभी पास की एक झाड़ी में से एक बड़ा सा शिकारी कुत्ता भागता हुआ आया। उसके पीछे एक और कुत्ता था और उसके पीछे एक और कुत्ता था। उन कुत्तों के पीछे पीछे भागते भागते कुछ ही देर में शिकारी भी वहीं आ कर इकट्ठे हो गये।

इन शिकारियों में से सबसे सुन्दर शिकारी था वहाँ का राजा। वह ऐलीसा के पास आया। राजा ने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। उसने ऐलीसा से पूछा — "बच्ची, तुम यहाँ कैसे आयीं?"

[46] Translated for the words "Hunting horn"

ऐलीसा ने ना में अपना सिर हिला दिया क्योंकि वह बोल नहीं सकती थी। क्योंकि उसके भाइयों की आजादी और ज़िन्दगी इसी बात पर आधारित थी कि वह न बोले। उसने अपने हाथ भी अपने ऐप्रन के पीछे छिपा लिये ताकि राजा यह न देख ले कि वह कितने कष्ट में थी।

राजा को उसको इस तरह वहॉ अकेले बैठे देख कर उसके ऊपर तरस आ गया। वह बोला — "चलो, तुम मेरे साथ चलो। मैं तुमको यहॉ इस तरह से अकेले नहीं छोड़ सकता। तुम यहॉ इस तरीके से नहीं रह सकतीं।

अगर तुम इतनी ही अच्छी हो जितनी तुम सुन्दर हो तो मैं तुमको रेशम और मखमल के कपड़े पहनाऊॅगा, तुम्हारे सिर पर सोने का ताज रखूॅगा और तुमको अपने सबसे अच्छे महल में रखूॅगा।"

इतना कह कर राजा ने उसको उठा कर अपने घोड़े पर बिठा लिया। यह सब देख कर ऐलीसा रो पड़ी और अपने हाथ मलने लगी तो राजा बोला — "मेरी तो बस यही इच्छा है कि तुम खुश रहो। देखना, एक दिन तुम इस सबके लिये मुझे धन्यवाद दोगी।"

और वह उस लड़की को अपने घोड़े पर अपने आगे बिठा कर घोड़े को पहाड़ों में से हो कर दौड़ाता हुआ चला गया। उसके शिकारी लोग उसके पीछे आ रहे थे। शाम तक वह अपने महल पहुॅच गया।

राजा उसको अपने महल में ले गया जहॉ संगमरमर के ऊँचे ऊँचे कमरों में बहुत सुन्दर शानदार फव्वारे चल रहे थे। और जहॉ छतें और दीवारें दोनों ही तस्वीरों से सजी हुई थी। पर राजकुमारी ने इनमें से किसी की तरफ नहीं देखा। वह तो बस रोती रही और दुखी होती रही।

महल में पहुँच कर स्त्रियों ने उसको शाही कपड़े पहनाये, उसके बालों में मोती गूँथे और उसके छालों भरे हाथों में बहुत ही मुलायम दस्ताने पहनाये। ये सब पहन कर वह इतनी सुन्दर लग रही थी कि राजा का सारा दरबार उसके सामने बहुत नीचे तक झुक रहा था।

फिर राजा ने उससे शादी करने का विचार किया हालॉकि पादरी[47] ने राजा से कहा भी कि जंगल में पायी जाने वाली यह लड़की जादूगरनी भी हो सकती है जिसने राजा की ऑखों पर परदा डाल दिया हो और पलक झपकते ही उसका दिल चुरा लिया हो।

पर राजा ने उसकी एक न सुनी और हुक्म दिया कि संगीत बजाया जाये, बढ़िया बढ़िया खाने लगाये जायें और सुन्दर सुन्दर लड़कियॉ वहॉ नाच करें।

लड़की को खुश करने के लिये उसको खुशबूदार बागीचों में घुमाने के लिये ले जाया गया, शानदार कमरे दिखाये गये पर कोई भी चीज़ उसके होठों पर मुस्कुराहट और ऑखों में चमक न ला सकी। भाइयों के दुख ने उसकी हर खुशी पर ताला लगा रखा था।

---

[47] Translated for the word "Archbishop" – a high ranking person in the church

अन्त में राजा ने उसके सोने वाले कमरे के साथ लगा एक छोटे से कमरे का दरवाजा खोला। वह कमरा उसकी गुफा की तरह से हरे रंग की कढ़ाई के काम से भरा हुआ था और बिल्कुल वैसा ही लग रहा था जैसी कि उसकी वह गुफा थी जहाँ से वह उसको ले कर आया था।

उस कमरे के फर्श पर नैटिल की रुई की एक गठरी पड़ी हुई थी जिससे वह उसका सूत कात रही थी। और उस कमरे की छत से वह कमीज लटक रही थी जो उसने खत्म कर ली थी। उसका एक शिकारी उत्सुकतावश उसकी वे चीज़ें वहाँ से उठा लाया था।

राजा बोला — "यहाँ बैठ कर तुमको लगेगा कि तुम अपनी पुरानी जगह बैठी हुई हो। यह तुम्हारा वह काम है जो तुम वहाँ कर रही थीं। इन सबके बीच में तुमको वहीं बैठे रहने का आनन्द मिलेगा।"

जब ऐलीसा ने वह सब चीज़ें देखीं जो उसके लिये बहुत कीमती थीं तो एक मुस्कुराहट उसके होठों पर दौड़ गयी। उसके चेहरे की लाली लौट आयी।

उसकी यह आशा वापस आ गयी कि अब वह अपने भाइयों को उस जादू से आजाद करा सकेगी जो उसकी सौतेली माँ ने उसके भाइयों के ऊपर डाला था और इस खुशी में उसने राजा के हाथ चूम लिये।

राजा ने भी उसको अपने सीने से लगा लिया और यह घोषणा करने का हुक्म दिया कि उनकी शादी की तैयारी की जाये। सो जंगल से लायी गयी देश की एक गूँगी लड़की देश की रानी बनने वाली हो गयी।

चर्च के पादरी ने राजा के कान में फिर से उसकी कुछ बुराई की लेकिन राजा ने फिर से उसको अनसुना कर दिया और अब तो उन दोनों की शादी होने वाली थी। पादरी को खुद अपने हाथ से उसके सिर पर ताज रखना था।

पर क्योंकि राजा ने पादरी की बात नहीं सुनी थी इसलिये गुस्से के मारे उसने ताज का गोला ऐलीसा के सिर पर थोड़ा नीचे की तरफ रख दिया जिससे उसके सिर को बड़ी तकलीफ हुई।

पर उससे भी ज़्यादा उसके दिल को तकलीफ हुई क्योंकि वह अपनी इस तकलीफ को बोल कर अपने भाइयों को दुख नहीं पहुँचाना चाहती थी इसलिये वह उस शरीर की तकलीफ को सह गयी।

वह कुछ नहीं कह सकती थी क्योंकि अगर वह एक शब्द भी बोलती तो उसके भाइयों को अपनी ज़िन्दगी से हाथ धोना पड़ता।

पर इस दयावान और सुन्दर राजा के लिये उसके मन में सच्चा प्यार था क्योंकि वह उसको खुश रखने के लिये अपने तरीके से पूरी कोशिश कर रहा था। हर दिन वह उसको ज़्यादा और ज़्यादा चाहने लगी थी।

काश वह उसमें अपने लिये विश्वास पैदा कर सकती और उसे यह बता सकती कि वह क्यों दुखी थी। पर उसको तो चुप ही रहना है और अपना काम खत्म करना है।

सो वह रात को समय निकाल कर अपने उस गुफा जैसे कमरे में जाती और वहाँ जा कर एक के बाद एक कमीज बनाती। जब वह सातवीं कमीज बना रही थी तो उसकी रुई खत्म हो गयी।

उसको मालूम था कि उसको चर्च के कम्पाउंड में कब्रों के ऊपर उगे हुई नैटिल के पौधे ही लेने चाहिये। और वह उसको अपने आप ही इकट्ठे करने होंगे पर वह वहाँ जाये कैसे?

"मेरे दिल के दर्द के सामने मेरी उँगलियों का दर्द क्या है? मुझे यह खतरा तो लेना ही पड़ेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि भगवान मेरा जरूर ख्याल रखेंगे।"

यह सोच कर जैसे कोई बुरा काम करता है और उसमें उसको डर लगता है उसी तरह से डरती हुई वह दबे पाँव उठ कर लम्बे लम्बे गलियारों में से होती हुई चाँदनी में नहाये बागीचे को पार करती हुई सूनी सड़कों से होती हुई चर्च के कम्पाउंड में पहुँच गयी।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि कुछ चुड़ैलें कब्र के एक बड़े से पत्थर पर बैठी थीं। उन्होंने अपने फटे कपड़े उतारे हुए थे जैसे कि वे अभी नहाने जाने वाली हों। अपनी पतली पतली उँगलियों से वे नयी बनी कब्रें खोद खोद कर खोल रहीं थीं और उनमें रखे मरे हुए शरीरों का माँस खा रही थीं।

ऐलीसा को उनके पास से गुजरना था और वे उसको देख रही थीं। सो उसने पहले एक प्रार्थना की, फिर अपने नैटिल के पौधे उखाड़े और महल वापस आ गयी।

ऐसा करते हुए उसको केवल एक आदमी ने देखा और वह था चर्च का पादरी क्योंकि जब सब लोग सो रहे थे वह जाग रहा था। जो कुछ भी उसने उस लड़की के बारे में कहा था अब उसके पास उस बात का सबूत था।

उसने सोचा रानी के साथ कुछ गड़बड़ तो थी। वह जरूर ही कोई जादूगरनी थी और इसी वजह से वह राजा और उसके लोगों को धोखा देने में सफल हो गयी थी।

अगले दिन पादरी ने राजा को चर्च में बुलाया और उसको वह सब बताया जो कुछ उसने पिछली रात देखा था और जिसका उसे डर था।

जैसे ही उसके मुँह से रानी के बारे में कड़वे शब्द निकलने शुरू हुए तो वहाँ लगी संतों की मूर्तियों ने ना में अपना सिर हिलाया जैसे वे कह रही हो कि यह आदमी झूठ बोल रहा है और ऐलीसा बिल्कुल बेकुसूर है।

पर पादरी के पास इसकी दूसरी सफाई थी। उसने कहा कि संत भी यही बात कह रहे हैं जो वह कह रहा है और वे उस लड़की की नीचता पर अपना सिर हिला रहे हैं।

यह सुन कर राजा की आखों से दो बड़े ऑसू निकल कर उसके गालों पर ढुलक गये और वह भी उस लड़की पर शक करता हुआ अपने महल को चला गया।

उस रात उसने सोने का बहाना किया पर उसकी ऑखों में नींद कहॉ। रात को उसने देखा कि ऐलीसा उठी।

हर रात वह ऐलीसा को उठते देखता रहा। हर बार वह चुपचाप उसका पीछा करता रहा और हर बार उसने उसको उस छोटे कमरे में गायब हो जाते हुए देखा। रोज ब रोज यह सब देख कर उसका गुस्सा बढ़ता ही गया।

ऐलीसा ने भी यह देखा कि राजा गुस्सा है पर उसकी समझ में उसकी कोई वजह नहीं आयी बल्कि उसने उसको और ज़्यादा चिन्ता में डाल दिया। इस तरह एक और चिन्ता उसकी अपने भाइयों की चिन्ता में जुड़ गयी।

यह सोच कर वह रो पड़ी और उसके ऑसू उसकी शाही जामुनी पोशाक पर गिर पड़े। गिरते ही वे वहॉ हीरों की तरह चमकने लगे। और जिसने भी यह तमाशा देखा वह यही इच्छा करने लगा कि काश वह रानी होता।

इस बीच उसका काम करीब करीब खत्म हो गया था। बस एक कमीज रह गयी थी। पर फिर से उसकी वह रुई कम पड़ गयी थी सो उसको फिर से नैटिल का पौधा लेने के लिये चर्च के कम्पाउंड में जाना था।

अब उसके पास नैटिल का एक भी पौधा नहीं था। एक बार फिर से, शायद आखिरी बार, उसको चर्च के कम्पाउंड में जाना होगा और थोड़े से पौधे और लाने होंगे।

अबकी बार वह अकेले जाते में और उन चुड़ैलों से डर रही थी। पर उसकी इच्छा शक्ति और भगवान में विश्वास बहुत मजबूत थे सो वह अपना काम करने चल दी। उधर राजा और पादरी भी उसके पीछे पीछे चल दिये।

उन्होंने देखा कि वह चर्च के कम्पाउंड के लोहे के दरवाजे के अन्दर जा कर गायब हो गयी। वे भी हिम्मत कर के उसके पीछे पीछे चर्च के कम्पाउंड में दाखिल हो गये तो उन्होंने देखा कि एक कब्र के एक बड़े से पत्थर पर कुछ चुड़ैलें बैठीं हैं। जैसे ऐलीसा ने उनको तब वहाँ देखा था जब वह पहली बार यहाँ आयी थी।

राजा वहाँ से वापस लौट आया क्योंकि राजा ने सोचा कि ऐलीसा भी उन्हीं में से एक होगी – वही ऐलीसा जो उस शाम उसके इतने पास बैठी हुई थी।

उसका मन उसको सजा देने का हुआ पर फिर उसने सोचा कि जनता को ही इस बात का फैसला करने दो। सो उसने जनता के सामने अपना मामला रखा तो जनता ने अपना फैसला सुनाया कि रानी को जला कर मार देना चाहिये।

इस तरह रानी को उसके शाही महल से हटा कर एक अँधेरे और सीलन भरे तहखाने में बन्द कर दिया गया। उस तहखाने में उसकी खिड़की की सलाखों में से आती हवा सीटी बजाती थी।

रेशम और मखमल का तकिया देने की बजाय उसके सिर के नीचे लगाने के लिये उसको नैटिल की एक पोटली दे दी गयी जो उसने कमीज बनाने के लिये इकट्ठी कर के रखी थी। ओढ़ने के लिये उसको नैटिल की वे कमीजें दे दी गयीं जो उसने पूरी कर ली थीं।

वह फिर से अपने काम में लग गयी और प्रार्थना करती रही। पर उसको तसल्ली देने के लिये कोई भी नहीं आया।

शाम को उसने अपनी खिड़की के पास हंसों के पंखों की फड़फड़ाहट सुनी। उसके सबसे छोटे भाई ने आखिर उसे ढूँढ ही लिया था।

वह खुशी से रो पड़ी। हालाँकि उसको पता था कि यहाँ उसकी यह आखिरी रात है क्योंकि अब उसका काम खत्म हो चुका था और उसके भाई भी यहाँ थे।

पादरी उसके आखिरी समय में उसके पास ठहरने के लिये आना चाहता था क्योंकि राजा से उसने इस बात का वायदा किया था कि कम से कम वह उसके लिये यह काम तो कर ही सकता था।

पर ऐलीसा ने ना में सिर हिला कर और इशारों से उसको मना कर दिया था कि वह उसको अपने पास नहीं आने देना चाहती थी।

यह उसकी वहॉ आखिरी रात थी और आज उसको अपना काम हर हाल में खत्म करना था नहीं तो उसकी मेहनत और तकलीफ, उसके ऑसू, उसकी रातों का जागना जो कुछ भी तकलीफें उसने उठायी थीं सब बेकार जातीं।

सो पादरी ऐलीसा को बुरा भला कह कर वहॉ से चला गया। पर ऐलीसा को मालूम था कि वह बेकुसूर है सो वह अपने काम में लगी रही।

कुछ छोटी छोटी चुहियें फर्श पर इधर उधर दौड़ रही थीं और उसकी सहायता कर रही थीं। वे उसको नैटिल ला ला कर दे रही थीं। एक चिड़ा भी उसकी खिड़की पर आ कर बैठ गया था और उसके लिये सारी रात गाना गाता रहा ताकि उसका अपने काम में मन लगा रहे।

अभी पौ ही फटी थी और सूरज निकलने में अभी एक घंटा बाकी था कि उसके ग्यारह भाई महल के दरवाजे पर पहुँच गये और उन्होंने राजा से मिलने की इच्छा प्रगट की।

पर वहॉ के चौकीदारों ने उनको कहा कि यह नामुमकिन है क्योंकि अभी तो रात ही थी और राजा सो रहा था और उसको अभी जगाया नहीं जा सकता था।

उन्होंने उन चौकीदारों से प्रार्थना भी की पर जब उन्होंने उनकी प्रार्थना नहीं सुनी तो उन्होंने उनको इतनी ज़ोर से चिल्ला कर धमकी

दी कि वे डर गये और राजा यह जानने के लिये बाहर निकल आया कि मामला क्या है।

पर उसी समय सूरज निकल आया और उसके भाई फिर से हंस बन कर महल के ऊपर उड़ गये।

उधर सारे शहर वाले वहाँ इकट्ठा हो रहे थे ताकि वे रानी को जलते हुए देख सकें। ऐलीसा को एक गाड़ी में बिठा कर ले जाया जा रहा था जिसे एक बूढ़ा घोड़ा खींच रहा था।

उसको बहुत ही खुरदरे कपड़े पहनाये गये थे। उसके बाल उसके चेहरे के चारों तरफ बिखरे हुए थे। उसके चेहरे का रंग पीला पड़ा हुआ था। उसके होठ चुपचाप से प्रार्थना कर रहे थे और उसकी उँगलियाँ हरी रुई के सूत से कुछ बुन रही थीं।

उसने अपना अधूरा काम नहीं छोड़ा था वह उसको अपने साथ ही ले आयी थी। मरने के लिये जाते समय भी वह काम कर रही थी। दस कमीजें उसके पैरों में पड़ी हुई थीं और ग्यारहवीं कमीज पर वह काम कर रही थी।

देखने वाले लोग कह रहे थे — "देखो यह क्या बुड़बुड़ा रही है। इसके पास तो साम्स की किताब भी नहीं है। लगता है कि यह वहाँ बैठी बैठी अपना कुछ जादू कर रही है। उसका वह जादू छीन लो और उसे तोड़ कर फेंक दो।"

वे आगे बढ़ कर यह सब करने ही वाले थे कि ग्यारह हंस आसमान से नीचे उतरे और उसकी गाड़ी के चारों तरफ गोला बना कर उड़ने लगे। भीड़ डर गयी और डर के मारे पीछे हट गयी।

बहुत से लोग फुसफुसाये — "यह तो अच्छी निशानी है। लगता है कि यह बेकुसूर है।" पर यह बात किसी की खुल कर कहने की हिम्मत नहीं हुई।

ऐलीसा की गाड़ी वहॉ पहुॅच चुकी थी जहॉ उसको सजा मिलने वाली थी। सजा देने वाले ने उसका हाथ पकड़ कर उसको गाड़ी से नीचे उतारा तो जल्दी से उसने वे ग्यारह कमीजें उन ग्यारह हंसों के ऊपर फेंक दीं।

वे ग्यारह हंस तुरन्त ही ग्यारह सुन्दर राजकुमार बन गये पर सबसे छोटे भाई की एक बॉह अभी भी हंस का पंख ही रह गयी थी क्योंकि उसकी कमीज की एक बॉह नहीं लग पायी थी। ऐलीसा उसको खत्म ही नहीं कर पायी थी।

उन हंसों को राजकुमारों में बदलते देख कर वह खुशी से चिल्लायी — "अब मैं बोल सकती हूॅ कि मैं बिल्कुल बेकुसूर हूॅ।"

जब सब लोगों ने देखा कि वहॉ क्या हो रहा था तो सबने उसके सामने ऐसे सिर झुकाया जैसे कि वे किसी संत के आगे सिर झुकाते।

पर इतने समय में जो दुख, दर्द और गुस्सा उसने सहा था वह इतना ज़्यादा था कि अब उससे वह और नहीं सहा जा रहा था सो वह बेजान सी अपने भाइयों की बॉहों में गिर पड़ी।

उसके सबसे बड़े भाई ने कहा — "यह बेचारी तो बिल्कुल बेकुसूर है।"

और तब उसने बताया कि क्या सब कैसे हुआ था। जब वह यह कहानी सुना रहा था तो लाखों गुलाबों की खुशबू से वहॉ की सारी हवा महक गयी।

क्योंकि जितनी लकड़ी उसको जलाने के लिये वहॉ इकट्ठी की गयी थी सबमें गुलाब के फूलों के पेड़ की जड़ें निकल आयी थीं और उनमें से शाखें निकल निकल कर उनमें लाखों लाल गुलाब के खुशबूदार फूल खिल गये थे।

उनमें सबसे ऊपर एक सफेद गुलाब सितारे की तरह चमक रहा था। राजा ने वह फूल तोड़ कर ऐलीसा के सामने की तरफ लगा दिया।

चर्च की सारी घंटिया अपने आप बजने लगीं और चारों तरफ चिड़ियें ही चिड़ियें दिखायी देने लगीं। अब तो दुलहिन महल की तरफ अपने जुलूस के साथ ऐसे जा रही थी जैसे किसी राजा ने किसी भी दुलहिन को इस तरह से जाते हुए इससे पहले कभी नहीं देखा था।

11 छोटी मत्स्यकन्या[48]

समुद्र में बहुत दूर जहाँ समुद्र का पानी कौर्न के फूलों[49] की तरह नीला हो जाता है और क्रिस्टल की तरह बहुत साफ होता है वहाँ वह बहुत गहरा होता है और वहाँ उसकी गहराई कोई नाप नहीं सकता।

वहाँ अगर चर्च की बहुत सारी मीनारें भी एक दूसरे के ऊपर खड़ी कर दी जायें तो भी वे पानी के ऊपर तक नहीं आ सकतीं। ऐसी जगह में समुद्र का राजा[50] अपने लोगों के साथ रहता है।

हमको ऐसा नहीं सोचना चाहिये कि समुद्र की तली में सिवाय पीली रेत के और कुछ भी नहीं है। वहाँ तो बहुत सारे फूल और पौधे पत्ते और डंडियाँ उगते हैं जो बहुत ही लचीले होते हैं। इतने लचीले कि पानी का थोड़ा सा भी हिलना उनको बहुत हिला देता है।

वहाँ बहुत सारी छोटी बड़ी मछलियाँ उनके बीच में से ऐसे तैरती रहती हैं जैसे चिड़ियें धरती पर पेड़ों के बीच से उड़ती रहती हैं।

---

[48] The Little Mermaid – a folktale from Denmark, Europe, by Hans Christian Andersen.
Adapted from the Web Site : http://www.eastoftheweb.com/short-stories/UBooks/LitMer.shtml
This story seems less story and more description. It was first written in 1836 and first published by CA Reitzel in Copenhagen on 7 April 1837 in *"Fairy Tales Told for Children. First Collection. Third Booklet". 1837*.

[49] Cornflower – a kind of flower which is bright blue in color. See its picture above.

[50] The Sea King or Mer-King

ऐसी ही एक जगह जहाँ समुद्र सबसे ज़्यादा गहरा है वहीं पर समुद्र के राजा का किला खड़ा हुआ है। उस किले की मूँगे की दीवारें हैं और उसकी लम्बी लम्बी खिड़कियाँ ऐम्बर[51] की बनी हुई हैं।

उसकी छत सीपियों[52] की बनी है जो जब उसके ऊपर पानी बहता है तो वे खुलती बन्द होती रहती हैं। और जब ऐसा होता है तो वे बहुत सुन्दर लगती हैं क्योंकि हर सीपी में एक मोती है जो किसी रानी के ताज में लगने लायक है।

समुद्र के राजा की पत्नी को मरे हुए कई साल हो गये सो उसकी बूढ़ी माँ ही उसके घर की देखभाल करती है। वह एक बहुत ही अक्लमन्द स्त्री है और उसको अपनी कुलीनता पर गर्व भी बहुत है।

इसी लिये वह अपनी पूँछ पर बारह बड़ी सीपियाँ लगा कर रखती है। जबकि और दूसरी जो कुलीन स्त्रियाँ हैं वे भी तारीफ के काबिल हैं पर वे केवल छह बड़ी सीपियाँ तक ही लगा सकती हैं।

समुद्र की माँ केवल अपनी कुलीनता के लिये ही नहीं बल्कि अपनी छोटी पोतियों यानी समुद्र की राजकुमारियों की देख भाल के लिये भी बहुत तारीफ के काबिल है।

---

[51] Amber is the fossilized resin from ancient forests. Amber is not produced from tree sap, but rather from plant resin.

[52] Translated for the word “Oyesters”. See its picture above.

उसके छह पोतियाँ हैं पर उन सबमें उसकी सबसे छोटी पोती सबसे ज़्यादा सुन्दर है। उसकी खाल गुलाब की सबसे कोमल पंखुड़ी जैसी साफ और कोमल है। उसकी आँखें इतनी नीली हैं जितना कि सबसे गहरे समुद्र का पानी।

पर उसके भी उसकी दूसरी बहिनों की तरह से पैर नहीं हैं और उसका शरीर पीछे से मछली की पूँछ की शक्ल का है।

सारा दिन वे राजकुमारियाँ या तो किले के बड़े बड़े कमरों में खेलती रहती हैं या फिर उन फूलों में खेलती रहती हैं जो उनके किले की दीवारों में से निकले रहते हैं।

उनके महल की ऐम्बर की बड़ी बड़ी खिड़कियाँ खुली रहती हैं और उनमें से मछलियाँ अन्दर आ जाती हैं। बिल्कुल उसी तरह से जैसे जब हम अपने घरों की खिड़कियाँ खोलते हैं तो चिड़ियें हमारे घरों में आ जाती हैं।

पर यहाँ ये मछलियाँ राजकुमारियों के पास तक आ जाती हैं, उनके हाथ से खाना खाती हैं ओर उनको अपने आपको सहलाने भी देती हैं।

किले के बाहर एक बहुत सुन्दर बागीचा है जिसमे चमकीले लाल और गहरे नीले रंग के फूल खिले हुए हैं जो आग जैसे खिले हुए दिखायी देते हैं। उस बागीचे के फल सोने जैसे चमकते हैं और उनकी पत्तियाँ और डंडियाँ भी थोड़ी थोड़ी देर बाद हिलती रहती हैं।

वहॉ की जमीन पर दुनियॉ की सबसे बढ़िया रेत है। उस रेत का रंग इतना नीला है जितना कि जलते हुए गंधक[53] की लपट का होता है।

और इस सबके ऊपर एक नीले रंग की चमक है जो ऐसी लगती है जैसे हवा ने उस सबको ढक रखा हो और उस हवा से छन छन कर आसमान का नीला रंग चमक रहा हो न कि समुद्र के पानी का नीला रंग।

जब मौसम शान्त होता है तो वहॉ से सूरज को देखा जा सकता है। उस समय वह वहॉ से जामुनी रंग के फूल जैसा लगता है जिसके चारों तरफ से रोशनी निकल रही हो।

इन छहों राजकुमारियों के पास इस बागीचे में एक एक जमीन का टुकड़ा था जहॉ वे जो चाहतीं उगा सकती थीं। एक राजकुमारी ने अपना जमीन का टुकड़ा एक व्हेल मछली की शक्ल में बना रखा था। तो दूसरी ने सोचा कि उसका जमीन का टुकड़ा एक छोटी मत्स्यकन्या[54] की शक्ल का ज़्यादा अच्छा रहेगा।

पर सबसे छोटी राजकुमारी की जमीन का टुकड़ा सूरज के जैसा गोल गोल था और उसमें ऐसे लाल रंग के फूल लगे थे जैसी लाल रंग की डूबते सूरज की किरनें होती हैं।

---

[53] Translated for the word "Sulphur"

[54] Translated for the word "Mermaid".

यह सबसे छोटी राजकुमारी कुछ अलग ही किस्म का बच्चा थी। यह सबका बहुत ख्याल रखती थी। जबकि उसकी बहिनें इधर उधर आश्चर्यजनक चीज़ों से अपना मन बहलाना ज़्यादा पसन्द करतीं थीं जो उनको टूटे जहाज़ों से मिल जाती थीं।

पर यह राजकुमारी किसी और चीज़ की कोई परवाह नहीं करती और अपने बागीचे में उगे सूरज के समान लाल लाल फूलों की और एक संगमरमर की मूर्ति की देख भाल में ही लगी रहती।

यह मूर्ति एक बहुत सुन्दर लड़के की थी जिसे एक सफ़ेद पत्थर में से काट कर बनाया गया था। इसका यह सफेद पत्थर का टुकड़ा एक टूटे हुए जहाज़ में से नीचे गिर पड़ा था।

उसने इस मूर्ति के पास एक गुलाबी रंग का वीपिंग विलो का पेड़[55] लगा रखा था। वह पेड़ बहुत अच्छा उग रहा था और जल्दी ही उसकी शाखें बढ़ कर उस लड़के की मूर्ति को ढक कर नीचे की नीली रेत को करीब करीब छूने लगी थीं।

उस पेड़ के साये का रंग कुछ जामुनी रंग का था और वह उस पेड़ की शाखों के साथ साथ हिलता रहता था। इससे ऐसा लगता था जैसे पेड़ के ऊपर का हिस्सा और उसकी जड़ें दोनों आपस में खेल खेल रहे हों।

---

[55] A kind of tree whose branches always grow downwards that is why it is called “Weeping Willow”. See its picture above.

उसको उससे ज़्यादा ख़ुशी और कहीं नहीं मिलती थी जितनी कि उसको पानी से ऊपर की दुनियाँ में जो कुछ हो रहा था उसको जान कर मिलती थी।

उसने अपनी दादी से उसको वह सब कुछ बताने के लिये कहा जो वह जहाज़ों और शहरों और आदमियों और जानवरों के बारे में जानती थी।

पर उसके लिये वह सुनना सबसे ज़्यादा मजेदार होता जो वह धरती के ऊपर उगने वाले खुशबूदार फूलों के बारे में सुनती न कि समुद्र के नीचे उगने वाले फूलों के बारे में।

कि जंगल के पेड़ हरे होते हैं। कि उन पेड़ों में घूमती मछलियाँ इतना मीठा गातीं हैं तो उनको सुनने में कितना आनन्द आता। उसकी दादी चिड़ियों को मछलियाँ बोलती थी। क्योंकि उसने कभी चिड़ियें देखी नहीं थी इसलिये वह उनको जानती ही नहीं थी।

उसकी दादी ने कहा — "जब तुम पन्द्रह साल की हो जाओगी तब तुमको समुद्र के ऊपर जाने की इजाज़त मिल जायेगी। तब तुम वहाँ चट्टानों पर चाँदनी में बैठ पाओगी। तब तुम वहाँ बड़े बड़े पानी के जहाज़ आते जाते देख पाओगी। और तभी तुम वहाँ के जंगल और शहर भी देख पाओगी।"

इस बात के अगले साल उनकी एक बहिन पन्द्रह साल की हुई पर क्योंकि हर बहिन एक दूसरे से एक साल छोटी थी इसलिये सबसे

छोटी बहिन को पन्द्रह साल का होने में और समुद्र के ऊपर तक आने के लिये अपनी बारी आने में अभी पाँच और साल लगते।

खैर सब बहिनों ने एक दूसरे से वायदा किया कि जो जो बहिन भी पन्द्रह साल की होती जायेगी और वह समुद्र से ऊपर जा कर धरती पर जो कुछ भी देख कर आयेगी वह वहाँ से आ कर अपनी दूसरी बहिनों को वहाँ का हाल बतायेगी।

वह यह भी बतायेगी कि वहाँ सबसे सुन्दर क्या था क्योंकि उनकी दादी उनको वहाँ के बारे में बहुत ज़्यादा नहीं बता सकी थी और उन सबको वहाँ की बहुत सारी चीज़ों के बारे में बहुत सारा जानने की इच्छा भी बहुत थी।

सिवाय सबसे छोटी राजकुमारी के और किसी को पन्द्रह साल का होने की इतनी ज़्यादा इच्छा नहीं थी। और उसी को सबसे ज़्यादा समय तक इन्तजार करना था। और वही बहुत शान्त स्वभाव की और सबके बारे में सोचने वाली थी।

कई रातों तक वह खुली खिड़की के पास खड़ी खड़ी उस अँधेरे पानी के ऊपर देखने की कोशिश करती रही। वह बहुत सारी मछलियों को अपने पंख और पूँछ फटकारते देखती रही।

वह वहीं से धुँधले धुँधले चाँद और तारे देखती रही पर पानी में तो वे उसको उससे भी बहुत बड़े बड़े दिखायी देते थे जितनी हम अपनी आँख से देख सकते हैं।

जब कोई काले बादल जैसी कोई चीज़ उसके और उन चाँद तारों के बीच आ जाती तो वह समझ जाती कि या तो उसके सिर के ऊपर कोई व्हेल तैर रही है या फिर आदमियों से भरा कोई जहाज़ जा रहा है।

उनमें से कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि उनके नीचे खड़ी एक मत्स्यकन्या अपने सफेद हाथ फैलाये खड़ी है।

जैसे ही उनकी सबसे बड़ी बहिन पन्द्रह साल की हुई उसको समुद्र की सतह से ऊपर जाने की इजाज़त मिल गयी। जब वह ऊपर से वापस आयी तो उसके पास तो बात करने के लिये सैंकड़ों चीज़ें थीं।

उसने कहा कि सबसे अच्छा तो वहाँ समुद्र के किनारे के रेत पर या फिर किनारे के पास के पानी के ऊपर चाँदनी में लेट कर पास के शहर की रोशनी को देखना था जो हजारों की गिनती में सितारों की तरह चमक रही थीं।

इसके अलावा संगीत की आवाज़ सुननी थी, गाड़ियों का शोर सुनना था और लोगों की बातचीत की आवाज़ें सुननी थीं। चर्च के घंटों की आवाजें सुननी थीं जो उसकी मीनारों से निकल निकल कर बाहर आती थीं।

क्योंकि वह उन सबके पास तक नहीं जा सकी थी इसलिये वह उनके पास तक जाना चाहती थी।

उसका यह सब हाल उसकी सबसे छोटी बहिन बड़े ध्यान लगा कर सुनती। और उसके बाद जब वह अपनी खुली खिड़की के सामने खड़ी होती और अँधेरे पानी में से ऊपर देखने की कोशिश करती तो वह एक बड़े से शहर के बारे में सोचती।

और वहीं खड़े खड़े उस शहर के शोर के और चर्च के घंटों के बारे में सोचती रहती।

उससे अगले साल उसकी एक और बहिन पन्द्रह साल की हुई तो उसको भी ऊपर जाने की और इधर उधर तैरने की इजाज़त मिली। वह उस समय पानी से ऊपर उठी जब सूरज डूबने वाला था।

तो उसने आ कर बताया कि इस समय का दृश्य देखने के लिये बहुत सुन्दर था। सारा आसमान सुनहरा चमक रहा और उसमें जामुनी और गुलाबी रंग के बादल उसके ऊपर तैर रहे थे। पर यह वह ठीक से नहीं बता सकी कि वे कहाँ तैर रहे थे।

एक बड़ा सा सफेद हंसों का झुंड भी आसमान में डूबते हुए सूरज की तरफ उड़ता हुआ चला जा रहा था। हंसों का वह झुंड उड़ता हुआ ऐसा लग रहा था जैसे कि समुद्र के ऊपर कोई सफेद परदा लगा हो।

वह खुद भी डूबते हुए सूरज की तरफ तैरी पर वह समुद्र की लहरों में डूब गयी। और फिर तो गुलाबी बादलों का गुलाबी रंग भी समुद्र में धुँधला पड़ गया।

अब तीसरी बहिन की बारी थी। वह इन सब बहिनों में बहादुर और हिम्मत वाली थी। वह समुद्र में ऊपर जा कर एक चौड़ी नदी में उसके ऊपर की तरफ तैर गयी।

उसके किनारों पर उसने हरी हरी पहाड़ियाँ देखीं जो हरी लताओं से ढकी हुई थीं। उसने किले देखे महल देखे जो जंगल के पेड़ों में से झाँक रहे थे। उसने वहाँ चिड़ियों के गीत सुने।

वहाँ सूरज की किरनें इतनी तेज़ थीं कि उसको कभी कभी अपने जलते हुए चेहरे को ठंडा करने के लिये पानी में डुबकी लगानी पड़ती थी।

वहीं से पानी की एक पतली सी धारा एक तरफ को निकल गयी थी। उस धारा में उसने आदमियों के बच्चे खेलते देखे जो नंगे ही खेल रहे थे। पर वह उस मत्स्यकन्या को अपनी तरफ आते देख कर डर के मारे भाग गये।

उसके बाद वहाँ एक काला जानवर आया। वह काला जानवर कुत्ता था पर उस मत्स्यकन्या को पता ही नहीं था कि वह कुत्ता था क्योंकि उसने पहले कभी कुत्ता देखा ही नहीं था। कुत्ता उसको देख कर इतनी ज़ोर से भौंका कि वह डर गयी और तुरन्त ही समुद्र में डुबकी मार गयी।

पर उसका कहना था कि वह वैसे सुन्दर जंगल, हरी हरी पहाड़ियाँ, छोटे छोटे प्यारे बच्चे जो मछली की तरह के पंखों के बिना भी पानी में तैर सकते थे कभी नहीं भूल पायेगी।

चौथी बहिन बहुत शर्मीली थी। वह समुद्र में ही रही पर उसने आ कर बताया कि किनारे के पास जाने पर ज़्यादा अच्छा था। वहाँ से वह मीलों दूर तक देख सकती थी और उसके ऊपर आसमान शीशे के घंटे जैसा लग रहा था।

उसने वहाँ पानी के जहाज़ देखे पर वे बहुत दूर से। इतनी दूर से वे किसी समुद्री चिड़िया जैसे लग रहे थे। समुद्र में डौलफिन मछलियाँ भी खेल रही थीं और बड़ी बड़ी व्हेल मछलियाँ अपने नथुनों से पानी बाहर निकाल निकाल कर फेंक रही थीं। इससे ऐसा लग रहा था जैसे सैंकड़ों फव्वारे चारों तरफ पानी फेंक रहे हों।

पाँचवी राजकुमारी का जन्मदिन जाड़ों में पड़ता था सो जब उसकी ऊपर जाने की बारी आयी तो उसने तो वह देखा जो उसकी दूसरी बहिनों ने पहली बार में नहीं देखा था।

उसने देखा कि समुद्र तो हरा हरा दिखायी दे रहा था पर उसमें बर्फ के बहुत बड़े बड़े टुकड़े तैर रहे थे। हर बर्फ का टुकड़ा एक मोती जैसा लग रहा था पर वह मोती तो उन चर्चों से भी बड़ा था जो आदमी लोग बनाते थे। उन सबकी शक्लें अलग अलग थीं और वे सब हीरे जैसे चमक रहे थे।

वहाँ जा कर वह एक सबसे बड़े बर्फ के टुकड़े पर बैठ गयी। वहाँ हवा चल रही थी वह उसके लम्बे बालों से खेलने लगी।

उसने अपनी बहिनों को यह भी बताया कि सारे जहाज़ बहुत जल्दी जल्दी जा रहे थे और उन बर्फ के टुकड़ों से वे जितना दूर हो

कर जा सकते थे उतनी दूर हो कर जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे उन टुकड़ों से डर रहे हों।

शाम के समय जब सूरज डूब गया तो काले काले बादल आसमान में फैल गये और बिजली भी आसमान में चमक चमक कर इधर से उधर तक जाने लगी। उन बर्फ के टुकड़ों पर लाल रोशनी पड़ने लगी और वे भी समुद्र की लहरों पर ऊपर नीचे होने लगे।

यह देख कर सारे जहाज़ों के नाविक डर के मारे कॉपने लगे जबकि वह खुद उस बर्फ के टुकड़े पर शान्ति से बैठी नीली नीली बिजली की चमक देखती रही।

जब इन राजकुमारियों को पहली बार समुद्र के ऊपर जाने को मिला तो इन लोगों ने ऊपर जो कुछ भी नया देखा उस सबसे ये सब बहुत खुश थीं पर अब जब ये बड़ी हो गयी थीं तब अब ये ऊपर कभी भी जा सकती थीं।

इसलिये अब ये ऊपर जाने के लिये उतनी उत्सुक भी नहीं थीं। अब ये चाहती थीं कि अब ये पानी में ही रहें। एक महीने बाद तो वे यह भी कहने लगी थीं कि यहीं नीचे ही ज़्यादा अच्छा था और घर में ही ज़्यादा आरामदेह था।

पर फिर भी पॉचों बड़ी बहिनें शाम को बॉहों में बॉहें डाल कर एक लाइन बना कर समुद्र की सतह के ऊपर आ जातीं। उनकी आवाज़ें किसी भी आदमी की आवाज़ से बहुत अच्छी थीं।

और फिर जब कभी कोई तूफान आता और जब वे यह सोचती कि यह जहाज़ समुद्र में खो जायेगा तो उससे पहले ही वे उस जहाज़ के सामने अपनी मीठी आवाज़ में यह गाती हुई तैरतीं कि समुद्र की तली में भी कितना आनन्द है।

वे उनके मल्लाहों से प्रार्थना करतीं कि अगर उनका जहाज़ समुद्र की तली में डूब भी जाये तो वे डरें नहीं।

पर मल्लाहों की समझ में तो उनका गाना आता ही नहीं था। वे यह समझते कि यह तो तूफान की आवाज़ थी और ये चीज़ें तो उनके लिये कभी सुन्दर हो ही नहीं सकती थीं।

क्योंकि अगर जहाज़ डूब गया तो उनके जहाज़ पर के सब लोग डूब जायेंगे और फिर केवल उनके मरे हुए शरीर ही समुद्र के राजा के महल पहुँचेंगे।

जब वे सब बहिनें इस तरह हाथ में हाथ डाले पानी के ऊपर आतीं तो उनकी सबसे छोटी बहिन नीचे बिल्कुल अकेली खड़ी रह जाती और उनको जाते हुए देखती रहती।

उसको रोना आ जाता पर बिना ऑसुओं के क्योंकि मत्स्यकन्याओं के ऑसू तो होते नहीं। और इसी लिये उनको और ज़्यादा दुख सहना पड़ता है।

वह सोचती "काश मैं पन्द्रह साल की होती। मुझे मालूम है कि मैं ऊपर की दुनियॉ और उसमें रहने वाले आदमियों को बहुत प्यार करती।"

आखिर वह भी पन्द्रह साल की हुई। उसकी दादी बोली —"सो अब तुम भी बड़ी हो गयीं। आओ अब मैं तुमको भी तुम्हारी दूसरी बहिनों की तरह सजाती हूँ।"

कह कर उसने उसके सिर पर सफेद लिली का एक गजरा लगाया। उस गजरे के फूल की हर पत्ती आधा मोती था। फिर उसने आठ सीपी मॅगवायीं और उसके ओहदे को ऊँचा दिखाने के लिये उनको उसकी पूँछ पर चिपका दिया।

छोटी मत्स्यकन्या बोली — "पर यह तो मुझे दर्द करता है दादी।"

"पर शान रखने के लिये कुछ तो सहना ही पड़ता है न।"

पर वह यह सब उतार कर कितनी खुश होती। उसके अपने बागीचे के लाल फूल उस पर कितने अच्छे लगते पर वह क्या करती। सो वह दादी से बोली — "अच्छा दादी विदा।" और एक बुलबुले की तरह हल्के से पानी की सतह पर पहुॅचने के लिये ऊपर उठ गयी।

जब उसने अपना सिर पानी से बाहर निकाला तभी सूरज डूब कर चुका था पर आसमान में बादल अभी गुलाबी पीले हो रहे थे। शाम के धुॅधलके में शाम का तारा बड़ी ज़ोर से चमक रहा था। समुद्र शान्त था और हवा मन्द और ताज़ा थी।

एक तीन पाल वाल जहाज़ अपने एक पाल से ही समुद्र के शान्त पानी मे तैर रहा था क्योंकि हवा बहुत ही मन्द थी। मल्लाह

लोग जहाज़ के डैक पर आराम से बैठे थे। कुछ लोग गाना गा रहे थे।

जब अँधेरा होने लगा तो जहाज़ पर सैकड़ों रंगीन लालटेनें जल उठीं जैसे कई देशों के झंडे हवा में लहरा उठे हों। वह छोटी मत्स्यकन्या उस जहाज़ के केबिन की खिड़की के पास तक तैर गयी।

जब वह समुद्र की लहरों के साथ ऊपर नीचे होती तो वह उस खिड़की के साफ शीशे के अन्दर तक देख सकती थी। उसमें उसको कुछ बहुत अच्छे कपड़े पहने लोग भी दिखायी दिये।

उन आदमियों में एक राजकुमार भी था। वह उन सब आदमियों में सुन्दर था। उसकी बड़ी बड़ी काली ऑखें थीं। वह सोलह साल का था और उस समय वहॉ उसका जन्मदिन बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा था।

मल्लाह लोग डैक पर नाच गा रहे थे पर जब राजकुमार अपने केबिन से बाहर आया तो सैंकड़ों राकेट छोड़े गये जिससे सारा आसमान दिन की तरह चमक उठा।

वह छोटी मत्स्यकन्या यह देख कर डर गयी और तुरन्त ही पानी के नीचे चली गयी। जब वह दोबारा पानी के ऊपर आयी तो उसने देखा कि आसमान से हजारों सितारे नीचे गिर रहे थे। वह आतिशबाज़ी थी। उसने ऐसी आतिशबाज़ी पहले कभी नहीं देखी थी।

उसे ऐसा लगा जैसे सूरज ने चारों तरफ आग बिखेर दी हो। वह आग नीली हवा में बिखरी तो उनकी परछाई समुद्र के शान्त पानी में पड़ी जिसमें छोटी से छोटी सी चीज़ तक देखी जा सकती थी।

और वह राजकुमार भी कितना सुन्दर लग रहा था जब वह उन सब आदमियों से मुस्कुरा कर हाथ मिला रहा था। रात की हवा में संगीत की आवाज़ भी खूब गूँज रही थी।

हालाँकि काफी देर हो चुकी थी पर छोटी मत्स्यकन्या उस जहाज़ या फिर यह कहो कि उस राजकुमार के चेहरे से अपनी आँखें ही नहीं हटा पा रही थी।

कुछ देर बाद वे रंगीन लालटेनें बुझा दी गयीं। हवा में अब कोई राकेट नहीं था। आसमान में अब कोई आवाज़ नहीं थी। पर अब समुद्र में तूफान आने लगा था। उसकी लहरों से आवाज़ें आने लगी थीं।

वह मत्स्यकन्या लहरों के ऊपर झूलती रही फिर भी वह उस जहाज़ के केबिन की खिड़की के पास ही रही जिससे वह उसके अन्दर देख सकती थी। उसके बाद वह जहाज़ के पाल खोल दिये गये और उसने अपनी यात्रा जारी रखी।

कुछ देर बाद हवाऐं और तेज़ हो गयीं, लहरें और ऊँची ऊँची उठने लगीं, आसमान में और काले काले बादल घिर आये, दूर

बिजली चमकने लगी। लगता था कि बहुत ही भयानक तूफान आने वाला था।

उस जहाज़ के मल्लाहों ने एक बार फिर से अपने जहाज़ के पाल ठीक किये और वह जहाज़ अपनी यात्रा पर आगे बढ़ता रहा। लहरें अब इतनी ऊँची हो गयी थीं कि लगता था कि वे पालों के ऊपर से निकल जायेंगी पर जहाज़ उनके नीचे से ऐसे निकल गया जैसे हंस पानी में तैर जाते हैं और फिर उनमें से बाहर निकल आते हैं

छोटी मत्स्यकन्या को तो यह खेल देखने में बहुत अच्छा लगा पर मल्लाहों को नहीं।

आखिरकार जहाज़ में आवाज हुई और वह चटक गया। उसके मोटे मोटे तख्ते टूट गये और उनमें से पानी अन्दर जाने लगा। उसके डैक के ऊपर से भी पानी अन्दर जा रहा था। उसका बड़ा वाला पाल सरकंडे[56] की तरह टूट गया और वह जहाज़ एक तरफ को पानी में गिर पड़ा। पानी उसके अन्दर बड़ी तेज़ी से जा रहा था।

अब छोटी मत्स्यकन्या को लगा कि जहाज़ पर काम करने वाले तो खतरे में थे। वह खुद भी जहाज़ के तख्तों और लट्ठों से बचने

[56] Translated for the word “Reed”. See its picture above.

की कोशिश कर रही थी जो जहाज़ से टूट टूट कर पानी में इधर उधर बह रहे थे।

एक समय पर तो इतना ॲधेरा हो गया कि वह बेचारी कुछ भी नहीं देख सकी पर तभी बिजली चमकी और उसकी रोशनी में उसको सब दिखायी दे गया। उसने देखा कि जहाज़ में सब लोग थे सिवाय राजकुमार के।

जब जहाज़ थोड़ा सा और आगे बढ़ा तो उसने देखा कि राजकुमार तो ऊॅची ऊॅची लहरों में डूब रहा था। यह सोच कर वह बहुत खुश हुई कि अब वह उसके साथ रहेगा पर तभी उसको याद आया कि आदमी लोग तो पानी में रह ही नहीं सकते थे। जब तक वह उसके पिता के पास पहुॅचेगा तब तक तो वह मर ही जायेगा।

सो वह उन तख्तों और लट्ठों के सहारे सहारे तैरती रही जो पानी में इधर उधर तैर रहे थे। उस समय तो वह यह भी भूल गयी थी कि वे उसको कुचल भी सकते थे।

फिर उसने पानी में एक डुबकी लगायी और आखिर राजकुमार के पास पहुॅच ही गयी। राजकुमार बेचारे की उस तूफानी समुद्र में तैरने की ताकत धीरे धीरे खत्म होती जा रही थी।

उसके जोड़ भी काम नहीं कर रहे थे। उसकी सुन्दर ऑखें बन्द होती जा रही थीं। अगर वह छोटी मत्स्यकन्या उसकी सहायता के लिये न पहुॅचती तो वह तो बेचारा मर ही जाता।

उसने राजकुमार का सिर पानी से ऊपर उठा दिया और पानी की लहरें उसके सिर के इधर उधर से जाने लगीं।

सुबह जा कर कहीं वह तूफान थमा पर जहाज़ के किसी टुकड़े का कहीं नामो निशान नहीं था। सूरज निकल आया था और पानी के ऊपर चमक रहा था। उसकी रोशनी की किरनों से राजकुमार के गालों का रंग तो लौट आया था पर उसकी ऑखें अभी भी बन्द थीं।

मत्स्यकन्या ने उसका ऊँचा माथा चूमा और उसके गीले बालों को सहलाया। वह उसको उसके बागीचे में खड़ी हुई संगमरमर की मूर्ति की तरह लग रहा था। उसने उसको एक बार फिर चूमा और प्रार्थना की कि वह लम्बे समय तक ज़िन्दा रहे।

इसी समय उसको जमीन दिखायी देखने लगी थी। उसने बड़े बड़े नीले पहाड़ देखे जिन पर बर्फ पड़ी हुई थी। वह बर्फ उन पर पड़ी हुई ऐसी लग रही थी जैसे उन पर बहुत सारे सफेद हंस लेटे हुए हों।

किनारे के पास ही एक बहुत सुन्दर जंगल था और उसके पास ही एक बहुत बड़ी इमारत खड़ी थी। या तो वह कोई चर्च था या फिर कौनवैन्ट यह वह नहीं बता सकी।

उसके बागीचे में सन्तरे और मौसमी के पेड़ खड़े थे और उसके दरवाजे के सामने बड़े बड़े ताड़ के पेड़ खड़े थे।

यहॉ आ कर समुद्र ने एक खाड़ी बना ली थी। इस खाड़ी में पानी तो बिल्कुल शान्त था पर वह खाड़ी काफी गहरी था सो वह राजकुमार के साथ उस खाड़ी के किनारे तक तैर गयी।

किनारे पर बहुत बारीक सफेद रेत पड़ा हुआ था। उसने राजकुमार को ले जा कर वहॉ लिटा दिया। लिटाते समय उसने उसका सिर उसके बाकी के शरीर से थोड़ा ऊॅचा रखा।

तभी उस बड़ी सफेद इमारत में घंटियॉ बजनी शुरू हुई और बहुत सारी नौजवान लड़कियॉ बागीचे में बाहर निकल आयीं।

उनको देख कर मत्स्यकन्या वहॉ से दूर चली गयी और पानी में खड़ी हुई एक चट्टान के पीछे छिप गयी। उसने अपना चेहरा और गर्दन समुद्र के फेन से ढक लिया ताकि वह किसी को दिखायी न दे सके।

वहीं से वह अब यह देखने की कोशिश करने लगी कि उस बेचारे राजकुमार का अब क्या होगा। उसे देखते ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि उसने देखा कि एक नौजवान लड़की उधर आयी जहॉ वह राजकुमार लेटा हुआ था।

एक पल के लिये तो वह कुछ डरी डरी सी दिखायी दी पर फिर वह वहॉ कई लोगों को बुला लायी। मत्स्यकन्या ने देखा कि राजकुमार ज़िन्दा हो गया था और मुस्कुरा कर अपने चारों तरफ खड़े लोगों की तरफ देख रहा था।

पर उसने उसकी तरफ मुस्कुरा कर नहीं देखा। उसको तो पता ही नहीं था कि उसी ने तो उसको बचाया था। इस बात से वह बहुत दुखी हुई।

जब वह उस बड़ी इमारत में अन्दर चला गया वह दुखी हो कर डुबकी मार कर पानी में नीचे चली गयी और अपने पिता के किले में चली गयी।

वह हमेशा से ही शान्त रहती थी और दूसरों के बारे में सोचती थी और इस घटना के बाद से तो वह कुछ और ज़्यादा ही शान्त हो गयी और कुछ और ज़्यादा ही दूसरों के बारे में सोचने लगी।

उसकी बहिनों ने पूछा कि उसने अपने पहली बार पानी से ऊपर जाने में क्या देखा तो वह कुछ नहीं बोली। कई दिनों और रातों को वह उस जगह तक गयी जहाँ वह राजकुमार को छोड़ कर आयी थी।

वहाँ उसने बागीचे में पके फल देखे जब तक वे तोड़ नहीं लिये गये, पहाड़ों पर पिघलती बर्फ देखी पर उसने राजकुमार को वहाँ फिर कभी नहीं देखा।

वह बार बार वहाँ से निराश हो कर पहले से भी ज़्यादा दुखी हो कर वापस आ जाती और आ कर अपने बागीचे में बैठ जाती। उसका अपना बागीचा ही एक जगह थी जहाँ उसको थोड़ा बहुत आराम मिलता था।

वहाँ आ कर वह अपनी बाँहें उस संगमरमर की मूर्ति के चारों ओर डाल देती जो उसे उस राजकुमार की तरह ही लगती थी जिसको वह समुद्र के किनारे ले कर गयी थी।

पर उसने अपने फूलों की देख भाल करनी छोड़ दी थी। अब वे जंगली पेड़ों की तरह बढ़ गये थे और रास्तों पर फैल गये थे। उनकी डंडियाँ और लम्बे लम्बे पत्ते पेड़ों से जा कर लिपट गये थे जिससे वहाँ कुछ अँधेरा सा हो गया था।

आखिर वह अपना भेद और नहीं छिपा सकी और उसने अपनी एक बहिन से यह सब कह दिया। जल्दी ही उसका यह भेद दूसरी मत्स्यकन्याओं को भी पता लग गया। उनमें से दो मत्स्यकन्याऐं ऐसी थीं जिनके एक दोस्त को यह पता था कि वह राजकुमार कौन था।

उनके दोस्त ने भी उसको उस दिन देखा था। उसको मालूम था कि वह राजकुमार कहाँ से आया था और उसका महल कहाँ था।

सो उसकी बहिनों ने कहा — "आओ बहिन आओ।"

उन्होंने एक दूसरे की बाँहों में बाँहें डालीं और लाइन बना कर सब पानी के ऊपर उसी जगह आ गयीं जहाँ राजकुमार का महल था। राजकुमार का महल चमकीले पीले पत्थर का बना हुआ था जिसमें संगमरमर की बहुत सारी सीढ़ियाँ चली गयीं थीं। उनमें से एक सीढ़ी समुद्र के अन्दर तक चली गयी थी।

उसकी छत पर बहुत सुन्दर सुन्दर छतरियाँ बनी हुई थीं। चारों तरफ खम्भे लगे हुए थे जिनके बीच संगमरमर की मूर्तियाँ बनी हुई

थीं। क्रिस्टल की बड़ी बड़ी खिड़कियाँ थीं जिनमें से कमरे के अन्दर तक का देखा जा सकता था।

उन कमरों में सिल्क के परदे पड़े हुए थे और टैपेस्ट्री लटकी हुई थी। दीवारों पर तस्वीरें लटकी हुई थीं जो देखने में बहुत सुन्दर लग रही थीं।

उसके सबसे बड़े कमरे के सामने एक बहुत बड़ा फव्वारा था जिसमें से पानी निकल निकल कर छत पर बनी शीशे की छतरी तक जा रहा था।

सूरज की रोशनी उस शीशे की छतरी में से छन छन कर नीचे फव्वारे के फर्श पर पड़ रही थी जिसके चारों तरफ सुन्दर सुन्दर पौधे लगे हुए थे।

अब जबकि उसे पता चल गया था कि वह राजकुमार कहाँ रहता था तो वह अपने दिन और रात उसी महल के आस पास गुजारती थी। वह किनारे के काफी पास तक तैर जाती ओर वहाँ से महल को देखती रहती।

एक बार तो वह उस महल की संगमरमर के छज्जे के पास तक तैर गयी। उस छज्जे का साया पानी में काफी दूर तक पड़ रहा था। वह वहाँ बैठ जाती और देर तक राजकुमार को देखती रहती।

उसने देखा कि राजकुमार वहाँ चाँदनी में बैठ कर बहुत अकेलापन महसूस करता था। कई रातों को उसने राजकुमार को

एक नाव में बैठ कर समुद्र में खेते देखा। उसकी नाव में संगीत बजता रहता और झंडे फहराते रहते।

वह हरी हरी झाड़ियों में से अपना सिर बाहर निकाल कर उसको देखती और अगर हवा उसके चेहरे पर से उसका सफेद परदा हटाती तो जो कोई उसको अगर देखता भी तो वह उसको अपने पंख फैलाये हंस की तरह लगती।

कई रातों में जब मछियारे अपनी लालटेनें ले कर मछली पकड़ने के लिये समुद्र में निकलते तो वह उनको राजकुमार के बारे में बहुत अच्छी अच्छी बातें करते सुनती। तब उसको बहुत खुशी होती कि उसने राजकुमार की जान तब बचायी जब वह आधा मरा सा लहरों पर उछल रहा था।

उसको सब याद था कि उस दिन क्या क्या हुआ था पर क्योंकि राजकुमार को तो कुछ पता ही नहीं था इसलिये वह तो उसके बारे में कुछ सोच ही नहीं सकता था।

धीरे धीरे वह आदमियों की तरफ और खिंचती चली गयी और यह चाहने लगी कि वह आदमियों की दुनियाँ में ज़्यादा से ज़्यादा घूम सके जिनकी दुनियाँ उसकी अपनी दुनियाँ से कहीं ज़्यादा बड़ी थी।

वे अपने जहाज़ों से समुद्र के ऊपर उड़ सकते थे, ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ सकते थे जो बादलों से भी ऊँचे होते थे और जमीन पर भी चल सकते थे। उनके जंगल और उनके मैदान तो इतने फैले पड़े थे जहाँ तक उसकी नजर भी नहीं जा पाती थी।

उसको कितना सब जानने की इच्छा थी पर उसकी कोई बहिन उसके सवालों के जवाब ही नहीं दे पा रही थी।

तब उसने अपनी दादी से पूछा जो ऊपर की दुनियाँ के बारे में सब कुछ जानती थी। पर वह भी उस ऊपर वाली दुनियाँ को समुद्र के ऊपर वाली दुनियाँ ही कहती थी उसके बारे में उसको ज़्यादा कुछ नहीं बता पाती थी।

एक दिन छोटी मत्स्यकन्या ने पूछा — "दादी अगर आदमी न डूब जायें तो क्या वे हमेशा के लिये ज़िन्दा रहते हैं? क्या वे कभी नहीं मरते जैसे हम लोग समुद्र में मरते हैं?"

दादी बोली — "नहीं बेटी ऐसा नहीं है। वे भी मरते हैं बल्कि उनकी ज़िन्दगी तो हमारी ज़िन्दगी से भी बहुत कम होती हैं। हम लोग कभी कभी तो तीन सौ साल तक रहते हैं पर जब हम यहाँ मर जाते हैं तब हम समुद्र के ऊपर का फेन बन जाते हैं। इसलिये हम यहाँ नीचे अपने प्रिय लोगों की कोई कब्र भी नहीं बना पाते हैं।

हम कोई अमर आत्मा नहीं हैं। एक बार मरने के बाद हम लोग फिर कभी नहीं रहेंगे। समुद्री हरी घास की तरह जो एक बार काटने के बाद बढ़ जाती है, हम फिर कभी नहीं फलेंगे फूलेंगे।

जबकि आदमी लोगों की आत्मा होती है जो हमेशा रहती है। वह उस समय तक भी रहती है जब तक उनका शरीर धूल में मिल जाता है। उसके बाद वह साफ हवा के सहारे सहारे तारों के ऊपर तक चली जाती है।

जैसे हम पानी के ऊपर उठ कर धरती की जमीन देखते हैं उसी तरह वे भी ऊपर उठ कर अनजानी जगहों पर चले जाते हैं जिन्हें हम कभी नहीं देख पायेंगे।"

छोटी मत्स्यकन्या ने दुखी हो कर पूछा — "हमारी आत्मा अमर क्यों नहीं होती दादी? मैं तो अपनी ज़िन्दगी के सैकड़ों साल एक दिन के लिये आदमी बनने के लिये खुशी से दे दूँगी ताकि मैं सितारों से ऊपर उन अनजानी जगहों को देख सकूँ जहाँ वे मर कर जाते हैं।"

दादी बोली — "ऐसा नहीं कहते बेटी। हम तो अपने आपको आदमियों से कहीं ज़्यादा खुशकिस्मत समझते हैं।"

छोटी मत्स्यकन्या बोली — "तो जब मैं मर जाऊँगी तो समुद्र के पानी के ऊपर का फेन बन जाऊँगी और फिर लहरों का संगीत कभी नहीं सुन पाऊँगी।

और फिर सुन्दर फूल कभी नहीं देख पाऊँगी और न ही लाल सूरज देख पाऊँगी। क्या मैं ऐसा कुछ कर सकती हूँ जिससे मुझे अमर आत्मा मिल जाये?"

दादी बोली — "नहीं बेटी। यह बहुत मुश्किल काम है। जब तक कि कोई आदमी तुमको इतना प्यार न करे कि तुम उसके लिये उसके माता पिता से भी ज़्यादा हो जाओ। उसके सारे विचार और उसका सारा प्यार तुम पर ही न सिमट जाये।

पुजारी उसका दाँया हाथ तुम्हारे हाथ में न रख दे और वह यहाँ और मरने के बाद दूसरी दुनियाँ में तुम्हारा वफादार रहने का वायदा न करे।

तब उसकी आत्मा तुम्हारे शरीर में आ जायेगी और फिर तुम उसके साथ उसकी आगे आने वाली खुशी में हिस्सा बाँट सकोगी। इस तरह वह अपनी आत्मा तुमसे बाँट लेगा पर बेटी ऐसा कभी नहीं हो सकता।

तुम्हारी मछली की पूँछ जो हम सबकी पूँछों में सबसे अच्छी मानी जाती है, धरती पर बहुत ही भद्दी मानी जाती है। वे इससे ज़्यादा भद्दी चीज़ को तो जानते ही नहीं, वे समझते हैं कि सुन्दर दिखायी देखने के लिये दो टाँगों का होना बहुत ज़रूरी है।"

छोटी मत्स्यकन्या ने एक लम्बी साँस भरी और दुख से अपनी पूँछ की तरफ देखा।

उसकी दादी फिर बोली — "हम लोगों को हम जिस हाल में हैं खुश रहना चाहिये और हम लोगों को तीन सौ साल जो भी हम ज़िन्दा रहते हैं आराम से गुजारने चाँहिये। ये तीन सौ साल हमारे लिये काफी हैं। उसके बाद हमको आराम करना चाहिये।

आज शाम को हम दरबार में नाच के लिये जा रहे हैं। यहाँ इतना सुन्दर दृश्य होगा जैसा हम धरती पर कभी देख ही नहीं सकते।"

नाच के कमरे की दीवारें और छत बहुत मोटी थी पर पारदर्शी क्रिस्टल की बनी थी। कुछ गहरे लाल रंग की और कुछ घास के हरे रंग की सैकड़ों बहुत बड़ी बड़ी सीपियाँ वहाँ सब तरफ लाइन बनाये खड़ी थीं।

उनके अन्दर नीले रंग की आग जल रही थी जिससे सारा कमरा जगमगा रहा था। उसकी रोशनी में दीवारों से हो कर बाहर जा रही थी जिससे समुद्र भी चमक रहा था

छोटी बड़ी अनगिनत मछलियाँ उस कमरे की क्रिस्टल की दीवार के आस पास तैर रही थी। उनमें किसी किसी की खाल जामुनी रंग में चमक रही थी जबकि दूसरों की खाल रुपहले और सुनहरे रंग में।

इन कमरों में से हो कर एक पतली सी नदी बह रही थी जिसमें मत्स्यकुमार और मत्स्यकन्याऐं अपने ही संगीत की धुन पर नाच रहे थे। उनकी जैसी मीठी आवाज धरती पर किसी की नहीं थी।

छोटी मत्स्यकन्या ने उन सबमें सबसे मीठा गाया। सारे दरबार ने उसके लिये तालियाँ बजायीं। कुछ देर के लिये तो उसका दिल खुशी से भर गया क्योंकि वह जानती थी कि उसकी आवाज समुद्र और धरती दोनों पर रहने वालों में सबसे अच्छी थी।

पर जल्दी ही वह फिर से पानी के ऊपर की दुनियाँ के बारे में ही सोचने लगी क्योंकि वह उस सुन्दर राजकुमार को भूल ही नहीं पा रही थी। और न ही वह अपने उस दुख को भूल पायी थी जो

राजकुमार की तरह उसे अपने अन्दर अमर आत्मा के न होने का था।

इसलिये वह चुपचाप अपने पिता के महल से खिसक गयी। जबकि अन्दर अभी भी खुशी और गाने का माहौल था पर वह अपने बागीचे में जा कर कुछ दुखी सी अकेली जा कर बैठ गयी।

तभी उसने समुद्र के पानी में कुछ गुड़गुड़ाने की आवाज सुनी तो उसने सोचा "मुझे यकीन है कि ऊपर वही अपनी नाव में जा रहा होगा। वही जिसके ऊपर मेरी इच्छाऐं निर्भर हैं और जिसके हाथों में मैं अपनी ज़िन्दगी भर की खुशियाँ रख देना चाहती हूँ।

अमर आत्मा को पाने के लिये मैं उसको ढूँढूँगी जबकि मेरी बहिनें अपने पिता के महल में नाचती गाती रहेंगी। मैं समुद्र की उस जादूगरनी[57] के पास जाऊँगी जिससे मैं हमेशा ही डरती रही हूँ। वह मुझे जरूर ही कोई सलाह देगी और मेरी सहायता करेगी।"

यही सोच कर वह छोटी मत्स्यकन्या अपने बागीचे में से उठी और फेन वाले भँवर की तरफ चल दी जिसके पीछे वह जादूगरनी रहती थी।

वह उस रास्ते पर पहले कभी नहीं गयी थी। वहाँ न तो कोई फूल खिलता था और न ही कोई घास ही उगती थी केवल भूरे रंग की रेत ही उस भँवर तक फैली पड़ी थी।

[57] Translated for the word "Witch" or "Sorcerer".

वहाँ पहिये के घूमने से पानी में जैसे फेन बनते हैं उसी तरह से फेन बन रहे थे और उनमें जो भी चीज़ आ रही थी वह भी घूमे जा रही थी और उसमें वे सब नीचे की तरफ चली जा रही थीं।

उस जादूगरनी के घर तक पहुँचने के लिये उस छोटी मत्स्यकन्या को इसी रास्ते से हो कर जाना था। उसके बाद का रास्ता गर्म दलदल से हो कर जाता था और जादूगरनी का घर उस दलदल के उस पार एक अजीब से जंगल में था जिसके फूल आधे जानवर और आधे पौधे थे।

वे देखने में साँप जैसे लगते थे जिनके सौ सौ सिर जमीन में से उगे हुए थे। उनकी बाँहें लम्बी लम्बी और गिलगिली थीं और उनकी उँगलियाँ लम्बे लम्बे कीड़ों जैसी थीं। वे नीचे जड़ से ले कर ऊपर तक सारे के सारे हिलते रहते थे।

समुद्र में उनको जो भी मिल जाता वे पौधे उसी को पकड़ लेते थे। उनकी पकड़ इतनी अचूक थी कि कोई उनकी पकड़ से बच नहीं पाता था।

छोटी मत्स्यकन्या ने तो जब यह देखा तो वह तो बहुत डर गयी। डर से उसके दिल की धड़कन बढ़ गयी और उसका रंग साँवला पड़ गया। वह तो वहीं की वहीं खड़ी रह गयी हिल भी नहीं सकी।

पर फिर उसने राजकुमार और आदमी की अमर आत्मा के बारे में सोचा जिनको वह पाना चाहती थी तो उसकी हिम्मत वापस आ गयी।

उसने अपने लम्बे बाल अपने सिर के चारों तरफ बॉध लिये ताकि वे पौधे रूपी जानवर उसको बालों से न पकड़ लें। उसने अपने हाथ अपने आगे मोड़ लिये। बस फिर वह उन बदसूरत जानवरों में से होती हुई एक मछली की तरह से पानी में तैरती आगे बढ़ती चली गयी।

रास्ते में उसने देखा कि उन जानवरों के हाथों में कोई चीज़ थी जैसे कोई लोहे का छल्ला हो। आदमी लोग जो समुद्र में बहुत नीचे डूब कर मर गये थे उनके सफेद हड्डियों के ढॉचे, जमीन के जानवरों के ढॉचे, पतवार, लकड़ी की आलमारियॉ आदि भी उनके लम्बे हाथों में फॅसी हुई थीं।

यहॉ तक कि उनकी पकड़ में एक मत्स्यकन्या भी थी जिसको उन्होंने पकड़ लिया था और उसको उसका गला घोट कर मार दिया था। यह दृश्य देख कर तो उस छोटी राजकुमारी के रोंगटे ही खड़े हो गये।

चलते चलते अब वह उस जंगल के दलदल वाले हिस्से में आ गयी थी जहॉ बहुत बड़े बड़े और मोटे मोटे सॉप इधर से उधर घूम रहे थे। उनके मटमैले शरीर उसके दिल में डर पैदा कर रहे थे।

इसी जगह के बीच में उस जादूगरनी का घर था। उसका यह घर जहाज़ से डूबे हुए लोगों की हड्डियों से बना हुआ था और उसी घर में वह समुद्र की जादूगरनी बैठी हुई थी।

उस समय एक मेंढक उसके मुँह में से खाना खा रहा था जैसे लोग कभी कभी कैनेरी चिड़िया को चीनी का टुकड़ा खिलाते हैं।

वह अपने उन बदसूरत साँपों को अपनी मुर्गियाँ कह कर बुलाती थी और उनको अपने शरीर पर चारों तरफ घूमने देती थी।

समुद्री जादूगरनी ने मत्स्यकन्या को देखते ही कहा — "मुझे मालूम है कि तुमको क्या चाहिये। यह तुम्हारी बहुत बड़ी बेवकूफी है। फिर भी एक रास्ता है पर वह रास्ता तुमको बहुत दुख देगा, मेरी सुन्दर राजकुमारी।

तुम अपनी मछली वाली पूँछ से छुटकारा पाना चाहती हो न और उसकी बजाय दो टाँगें चाहती हो जैसी कि आदमियों की होती हैं ताकि वह नौजवान राजकुमार तुमसे प्यार करने लगे और तुम उसकी तरह से अमर आत्मा पा सको।"

कह कर वह जादूगरनी इतनी ज़ोर से हँसी कि वह मेंढक और साँप उसके शरीर पर से नीचे गिर पड़े और इधर उधर घूमने लगे।

जादूगरनी आगे बोली — "तुम बहुत ठीक समय से आयी हो क्योंकि कल सुबह सूरज निकलने के बाद अगला साल खत्म होने तक फिर मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर पाती।

मैं तुम्हारे लिये एक पेय तैयार करती हूँ जिसको ले कर तुम कल सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले ही धरती पर तैर जाना। और वहाँ जा कर समुद्र के किनारे बैठ कर उसे पी लेना।

कुछ ही देर में तुम्हारी पूँछ गायब हो जायेगी और वह आदमी लोग जिनको टाँगें कहते हैं वहाँ तक सिकुड़ जायेगी। इससे तुमको बहुत दर्द होगा। तुमको ऐसा लगेगा जैसे कोई तलवार तुहारे अन्दर घुस रही है पर बाद में तुम देखोगी कि तुम दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की हो।

तुम उसके बाद भी मछली की तरह से तैरने की शान से चल पाओगी और कोई भी तुम्हारी तरह से हल्के कदमों से नहीं नाच पायेगा। पर जब भी तुम कदम रखोगी तब तुमको ऐसा लगेगा जैसे तुम तेज़ चाकुओं पर चल रही हो और तुम्हारे खून निकल आयेगा।

अगर तुम यह सब सहने के लिये तैयार हो तो मैं तुम्हारी सहायता करने के लिये तैयार हूँ।"

राजकुमारी राजकुमार और अमर आत्मा के बारे में सोचती हुई काँपती आवाज में बोली — "हाँ मैं तैयार हूँ।"

जादूगरनी आगे बोली — "हाँ एक बात और। एक बार तुम आदमी बन गयीं तो फिर तुम कभी मत्स्यकन्या नहीं बन पाओगी। तुम पानी में नहीं आ पाओगी या अपनी बहिनों से नहीं मिल सकोगी या अपने पिता के महल में भी नहीं आ पाओगी।

और अगर तुम राजकुमार का दिल इस तरह नहीं जीत पायीं कि वह तुमको अपने पूरे दिल से प्यार करने के लिये तुम्हारे लिये अपने माता पिता को छोड़ दे। और पुजारी को अपना दॉया हाथ तुम्हारे हाथ में न देने दे ताकि तुम पति पत्नी बन जाओ तब तुमको उसकी अमर आत्मा भी नहीं मिलेगी।

शादी के बाद अगली पहली सुबह को जब वह किसी और से शादी करेगा तो तुम्हारा दिल टूट जायेगा और तुम फेन बन कर समुद्र की लहरों पर बहने लगोगी।"

यह सुन कर छोटी मत्स्यकन्या पीली पड़ गयी और बोली — "मैं समझ गयी।"

समुद्री जादूगरनी बोली — "पर इसके लिये तुम्हें मुझे कुछ देना पड़ेगा और इसके लिये मैं तुमसे कोई बहुत बड़ी चीज़ नहीं मॉगूगी। समुद्र में जितने भी लोग रहते हैं उन सबमें तुम्हारी आवाज सबसे मीठी है।

और तुमको यह भी यकीन है कि तुम अपनी उस मीठी आवाज से राजकुमार का मन मोह लोगी। मैं तुमसे तुम्हारी यही आवाज मॉगती हूॅ।

जो तुम्हारे पास सबसे अच्छी चीज़ है मेरे उस पेय की कीमत वही है। मेरा अपना खून उस पेय से मिल जाना चाहिये ताकि वह पेय दोधारी तलवार की तरह तेज़ हो जाये।

छोटी मत्स्यकन्या बोली — “पर अगर तुम मेरी आवाज ले लोगी तो फिर मेरे पास क्या रह जायेगा?”

“तुम्हारी सुन्दर शक्ल, तुम्हारी सुन्दर चाल, तुम्हारी सुन्दर ऑखें। मुझे यकीन है कि तुम इस सबसे किसी भी आदमी को मोह लोगी।

क्या हुआ? क्या तुम्हारी हिम्मत टूट गयी? निकालो अपनी ज़बान बाहर निकालो ताकि मैं उसे अपने पेय की कीमत की तरह से काट सकॅू। उसके बाद ही तुमको वह पेय मिलेगा।”

छोटी मत्स्यकन्या बोली — “ऐसा ही होगा।”

तब समुद्री जादूगरनी ने पेय बनाने के लिये अपना बर्तन आग पर रखा। उसने कई सॉपों की एक गॉठ बॉधी, और उनसे उस बर्तन को साफ करते हुए बोली — “सफाई अच्छी चीज़ है।”

फिर उसने अपनी छाती में कोई नुकीली चीज़ चुभा कर काला खून निकाला और उसकी बूँद उन सॉपों की गॉठ पर डाल दी। उस खून की भाप से उस बर्तन में कुछ ऐसी भयानक शक्लें बनी कि उनको देख कर डरे बिना कोई रह ही नहीं सकता था।

हर बार जब भी वह जादूगरनी उस बर्तन में कुछ भी डालती और वह उबलता तो उसमें से ऐसी आवाज आती जैसे कोई मगर रो रहा हो। आखिर वह पेय बन गया। जब वह बन कर तैयार हो गया तो उसका रंग बिल्कुल साफ पानी जैसा था।

जादूगरनी ने वह पेय मत्स्यकन्या को देते हुए कहा — "यह लो।" और यह कह कर उसने उसकी जबान काट ली। अब वह न बोल सकती थी और न ही गा सकती थी।

जादूगरनी फिर बोली — "अब जब तुम जंगल में से हो कर वापस जाओगी और अगर तुमको कोई जानवर वाला पौधा पकड़ ले तो तुम उसके ऊपर इस पेय की कुछ बूँदें डाल देना। इससे उसकी उँगलियों के हजारों टुकड़े हो जायेंगे।

पर उस छोटी मत्स्यकन्या को इसकी जरूरत ही नहीं पड़ी क्योंकि जैसे ही उन्होंने उसके हाथों में चमकता हुआ पेय देखा जो उसके हाथों में एक चमकते हुए तारे की तरह चमक रहा था तो वे डर के मारे खुद ही पीछे को हट गये।

इसलिये वह जंगल, दलदल और भँवरों को जल्दी ही पार कर गयी। जब वह अपने पिता के महल में पहुँची तो उसने देखा कि उसके नाच के कमरे में सब मशालें बुझ चुकी थीं और सब सो गये थे।

पर अब वहाँ उसकी जाने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि एक तो अब वह गूँगी हो चुकी थी और दूसरे कल सुबह वह उनको हमेशा के लिये छोड़ कर जाने वाली थी। उसको लगा जैसे उसका दिल टूट जायेगा।

वह बागीचे में चली गयी वहाँ से अपनी हर बहिन के बागीचे से एक एक फूल तोड़ा, फिर उसने अपने हाथ को महल की तरफ कर के हजारों बार चूमा और समुद्र के नीले पानी में ऊपर तैर गयी।

जब वह राजकुमार के महल के पास तक आयी तब तक सूरज नहीं निकला था। पर चाँद अभी भी अपनी पूरी चमक के साथ चमक रहा था।वह संगमरमर की सुन्दर सीढ़ियों के पास तक आयी।

छोटी मत्स्यकन्या ने वह पेय पी लिया। उसको पीते हुए उसे ऐसा लगा जैसे कोई दोधारी तलवार उसके कोमल शरीर को चीरती हुई चली गयी। वह वहीं बेहोश हो गयी और मरी जैसी पड़ गयी।

जब सूरज निकला और समुद्र के ऊपर चमका तब उसको होश आया। उसको बहुत दर्द था। उसने अपने इधर उधर देखा तो सामने उस सुन्दर राजकुमार को खड़े पाया। उसकी कोयले जैसी काली आँखें उसी के ऊपर जमी हुई थीं। उसने अपनी आँखें झुका लीं।

तभी उसको लगा कि उसकी मछली वाली पूँछ तो गायब हो गयी है और दो छोटे छोटे पैरों के साथ उसकी दो टाँगें आ गयी हैं जैसी कि एक बहुत सुन्दर लड़की की होनी चाहिये। पर वह कपड़े तो नहीं पहने थी तो उसने अपने आपको अपने लम्बे घने बालों से ढक लिया।

राजकुमार ने उससे पूछा “तुम कौन हो और कहाँ से आयी हो?” मत्स्यकन्या ने उसको अपनी नीली आँखों से बड़ी कोमलता और दुख भरी दृष्टि से देखा पर वह बोल नहीं सकी।

जैसा कि उस जादूगरनी ने कहा था वह हर कदम जो रखती थी उसको ऐसा लगता था जैसे वह किसी तेज़ चाकू पर रख रही हो। पर वह उसको अपनी इच्छा से सहती रही।

वह राजकुमार के बराबर में इतनी हल्के से चलती रही जैसे वह पानी के बुलबुलों पर चल रही हो। इससे दूसरों को यही लगा कि वह कितनी शान से चल रही है।

जल्दी ही उसको सिल्क और मलमल के कपड़ों में सजा दिया गया और वह सारे महल में सबसे सुन्दर लड़की दिखायी देने लगी। पर वह तो गूँगी थी न, सो न तो वह बोल ही सकी और न गा ही सकी।

राजकुमार की सुन्दर दासियाँ सिल्क ओर सोने में सजी धजी आयीं और उन्होंने राजा रानी और राजकुमार के सामने गाया। एक ने और दूसरी दासियों से अच्छा गाया तो राजकुमार ने उसके लिये ताली बजायी और उसकी तरफ मुस्कुराकर देखा।

इससे छोटी मत्स्यकन्या को बहुत दुख हुआ। उसको मालूम था कि कभी पहले वह कितना मीठा गाती थी। उसने सोचा “काश राजकुमार यह जान पाता कि मैं पहले कितना मीठा गाती थी।

उसके बाद उसके साथ रहने के लिये चाहे मैंने अपनी आवाज हमेशा के लिये दे दी होती।"

उसके बाद दासियों ने संगीत की मीठी आवाज पर फिर कुछ परियों जैसे नाच दिखाये। यह देख कर छोटी मत्स्यकन्या ने अपनी सफेद बाँहें उठायीं और अपने अँगूठों पर खड़ी हो गयी। वह इतनी अच्छी तरह से फर्श पर फिसल रही थी कि अब तक किसी ने वैसा नाच नहीं नाचा था।

हर पल उसकी सुन्दरता और निखरती चली आ रही थी और उसकी सुन्दर आँखें लोगों के दिलों को ज़्यादा असर कर रही थीं बजाय दासियों के गीतों के।

उसके नाच ने सब पर जैसे जादू डाल दिया था, खास कर के राजकुमार पर। राजकुमार तो उसको अपनी छोटा छोड़ा हुआ बच्चा[58] कह कर पुकारता था।

वह राजकुमार को खुश करने के लिये खुशी से फिर नाची। हालाँकि जब भी वह फर्श पर पैर रखती उसको लगता कि वह किसी तेज़ चाकू पर अपना पैर रख रही हो।

राजकुमार ने कहा कि वह हमेशा उसके साथ रहेगी। उसको राजकुमार के कमरे के दरवाजे पर एक मखमल के गद्दे पर सोने की इजाज़त भी मिल गयी।

---

[58] Translated for the word "Foundling" – foundling means an abandoned child

उसने उसके लिये नौकर की एक पोशाक बनवा दी ताकि वह उसके साथ उसके घोड़े पर उसके साथ पीछे बैठ कर जा सके।

अब वे दोनों खुशबूदार जंगलों से हो कर साथ साथ घुड़सवारी करते जहाँ पेड़ों की हरी हरी डालियाँ उनके कन्धों को छूती रहतीं। चिड़ियें उनके ताज़ा पत्तों के बीच से चहचहाती रहतीं।

वह राजकुमार के साथ ऊँचे ऊँचे पहाड़ों की चोटियों पर जाती। हालाँकि उसके कोमल पैरों से खून निकलता और इससे उसके कदमों के निशान बन जाते फिर भी वह हँसती रहती और उसके पीछे चलती रहती जब तक वे अपने नीचे बादलों को नहीं देख लेते।

वे उड़ते हुए बादल उसको ऐसे लगते जैसे चिड़ियों के झुंड के झुंड कहीं दूर जगह जा रहे हों।

राजकुमार के महल में जब सब सो रहे होते वह जा कर संगमरमर की सीढ़ियों पर पानी में पैर लटका कर बैठ जाती। इससे उसके दर्द भरे पैरों को कुछ आराम मिलता। वह वहाँ बैठी बैठी समुद्र के नीचे रहने वालों के बारे में भी सोचती रहती।

एक बार रात को उसकी बहिनें बाँहों में बाँहें डाले दुख से गाती हुई पानी के ऊपर आयीं। जब वे ऊपर आयीं तो उसने उनको पुकारा तो उन्होंने भी उसको पहचान लिया। वे बोलीं कि उसने उनको कितना दुखी किया।

उसके बाद तो वे वहॉ रोज आने लगीं। एक दिन उसने दूर से अपनी दादी को भी देखा जो पिछले बहुत सालों में समुद्र के ऊपर ही नहीं आयी थी।

उसकी बहिनों ने उसकी तरफ हाथ फैलाये पर उसको वे इतने पास नहीं लगे जितने कि उसकी बहिनों को उसके हाथ उनके अपने पास लगे।

जैसे जैसे दिन गुजरते गये छोटी मत्स्यकन्या का प्यार राजकुमार के लिये और बढ़ता गया। उधर राजकुमार उसको ऐसे प्यार करता था जैसे वह किसी बच्ची को प्यार कर रहा हो। उसके दिमाग में यह कभी आया ही नहीं कि वह उसको अपनी पत्नी बना ले।

पर फिर भी जब तक वह उसको अपनी पत्नी नहीं बना लेता वह उसकी अमर आत्मा नहीं ले सकती थी। और अपनी शादी के बाद अगली सुबह राजकुमार जब दूसरी किसी से शादी कर लेगा तब वह समुद्री फेन में बदल जायेगी।

अब वह मत्स्यकन्या बोल तो सकती नहीं थी पर जब भी राजकुमार उसको प्यार से अपनी बॉहों लेता और उसका गोरा माथा चूमता तो उसकी ऑखें राजकुमार से हमेशा पूछती रहतीं "क्या तुम मुझे सबसे ज़्यादा प्यार नहीं करते?"

राजकुमार कहता — "हॉ तुम मुझे बहुत प्यारी हो क्योंकि तुम्हारा दिल बहुत अच्छा है। और तुम भी मुझे बहुत प्यार करती

हो। मेरे लिये तुम उस नौजवान लड़की की तरह हो जिसको मैंने एक बार देखा था पर फिर अब शायद कभी नहीं देखूँगा।

एक बार मैं एक जहाज़ पर था जो तूफान में फँस गया था। लहरों ने मुझे समुद्र के किनारे बने एक मन्दिर के पास ले जा कर पटक दिया था। वहाँ बहुत सारी लड़कियाँ पूजा कर रही थीं। उनमें से जो सबसे छोटी लड़की थी उसने मुझे किनारे पर देखा और मेरी जान बचायी।

मैंने उसको दो बार देखा। दुनियाँ में केवल वही है जिसको मैं प्यार कर सकता हूँ। पर क्योंकि तुम भी करीब करीब वैसी ही दिखायी देती हो इसलिये तुमने मेरे दिमाग से उसकी तस्वीर निकाल दी है।

वह लड़की तो उस मन्दिर की है और मेरी खुशकिस्मती ने उसकी जगह तुमको मेरे पास भेज दिया है। अब हम कभी अलग नहीं होंगे।"

छोटी मत्स्यकन्या ने सोचा कि "क्योंकि इसको तो यह पता ही नहीं है कि मैंने इसकी जान बचायी है। मैंने ही इसको समुद्र के पानी के ऊपर ले जा कर जंगल में मन्दिर के पास लिटाया था।

फिर समुद्र के फेन के नीचे बैठ कर इसको तब तक देखती रही जब तक कि वे लड़कियाँ इसकी सहायता करने के लिये नहीं आ गयीं। इसलिये यह तो उसी लड़की को अपना बचाने वाला समझता

है। मैंने तो उस लड़की को भी देखा है जिसको यह मुझसे ज़्यादा प्यार करता है।"

और मत्स्यकन्या ने एक गहरी उसॉस भरी पर वह ऑसू नहीं बहा सकी। "यह कहता है कि वह लड़की मन्दिर की है इसका मतलब यह हुआ कि वह अब दुनियॉ में कभी नहीं लौटेगी। ये दोनों अब कभी नहीं मिलेंगे जबकि मैं इसके साथ होऊॅगी और इसको रोज देखूॅगी।

मैं इसकी ठीक से देख भाल करूॅगी, इसको प्यार करूॅगी और इसके लिये अपनी जान भी दे दूॅगी।"

बहुत ही जल्दी जैसा कि कहा गया था राजकुमार की शादी हो जायेगी और पड़ोसी देश के राजा की सुन्दर राजकुमारी उसकी पत्नी बन जायेगी। क्योंकि वहॉ एक बहुत ही बढ़िया जहाज़ इसके लिये तैयार किया जा रहा था।

हालॉकि राजकुमार ने यह कह रखा था कि वह उस पड़ोसी राजा से केवल मिलने जा रहा था पर सचमुच में वह उस लड़की को शादी के लिये देखने जा रहा था।

उसके साथ बहुत सारे लोग जाने वाले थे। छोटी मत्स्यकन्या मुस्कुरायी और अपना सिर उसने ना में हिलाया। वह राजकुमार के विचारों को दूसरों के मुकाबले में ज़्यादा अच्छी तरह से जानती थी।

राजकुमार ने मत्स्यकन्या से कहा — "मुझे यात्रा पर जाना है। मुझे इस सुन्दर राजकुमारी को देखना है क्योंकि यह मेरे माता पिता

की इच्छा है। पर यह मैं यकीन के साथ कह सकता हूॅ कि वे मेरी इच्छा के बिना उसको मेरी दुलहिन बना कर नहीं लायेंगे।

मैं उसको प्यार नहीं कर सकता क्योंकि वह उस मन्दिर वाली लड़की की तरह से सुन्दर नहीं है जिससे तुम्हारी शक्ल मिलती है। अगर मुझे दुलहिन पसन्द करने के लिये ज़ोर दिया गया तो मैं तुमको अपनी दुलहिन चुनना ज़्यादा पसन्द करूँगा, ओ मेरी गूॅगी छोड़ी हुई बच्ची।"

यह कहते हुए उसने उसके लम्बे बालों से खेलते हुए उसका गुलाबी मुॅह चूम लिया और अपना सिर उसके सीने पर रख दिया। और मत्स्यकन्या को लगा कि उसको आदमी वाली खुशी और अमर आत्मा मिल रही है

राजकुमार उस जहाज़ के डैक पर बैठता हुआ आगे बोला जो उस राजा के राज्य जाने वाला था — "तुम समुद्र से तो नहीं डरती न मेरी गूॅगी बच्ची?"

फिर उसने उसको तूफानी और शान्त समुद के बारे में, गहरे समुद्र में रहने वाली अजीब मछलियों के बारे में, डुबकी मारने वालों ने समुद्र में नीचे क्या देखा इस सबके बारे में बताया।

वह इस सबके बारे में सुन कर केवल मुस्कुरा दी क्योंकि समुद्र की तली के आश्चर्यों के बारे में उससे ज़्यादा अच्छी तरह से और कौन जान सकता था।

रात को चॉदनी में जब सिवाय मल्लाह के सब लोग डैक पर सो गये तो वह डैक पर बैठ गयी और समुद्र के साफ पानी में नीचे झॉकने लगी। उसको लगा कि वहॉ से वह अपने पिता के महल को देख सकती थी और उसमें बैठी अपनी दादी को जो चॉदी का ताज पहनती थी।

तभी उसकी बहिनें लहरों के ऊपर आयीं और उसकी तरफ अपने सफ़ेद दॉत कटकटाते हुए दुखी नज़रों से देखा। छोटी मत्स्यकन्या ने उनकी तरफ देख कर अपना हाथ हिलाया।

वह उनको बताना चाहती थी कि वह वहॉ कितनी ख़ुश है पर तभी केबिन का नौकर आ गया और तभी उसकी बहिनें नीचे डुबकी लगा गयीं।

जब तक उस केबिन के नौकर ने समुद्र की तरफ देखा तो वहॉ उसको समुद के पानी के ऊपर केवल उसके फेन ही दिखायी दिये।

अगली सुबह वे उस राजा के शहर के बन्दरगाह में आ पहुॅचे जिस राजा के घर उन्हें आना था। वहॉ चर्च में घंटियॉ बज रही थीं और उसकी ऊॅची ऊॅची मीनारों से बिगुल बज रहे थे। वे लोग जिन चट्टानों से हो कर आये थे उन चट्टानों के सामने बहुत सारे सिपाही लाइन लगा कर खड़े थे।

वहॉ हर दिन त्यौहार था, हर दिन नाच होता था और हर दिन मनोरंजन होता था।

पर राजकुमारी का कहीं अता पता नहीं था। लोगों का कहना था कि राजकुमारी किसी धार्मिक घर में बड़ी हुई थी जहाँ उसने शाही तौर तरीके सीखे थे। आखिर वह राजकुमारी वहाँ आ गयी।

छोटी मत्स्यकन्या राजकुमारी को केवल इसलिये देखने के लिये बहुत बैचैन थी कि वह देखना चाहती थी कि वह कितनी सुन्दर थी पर जब उसने राजकुमारी को देखा तो वह भी यह मानने पर मजबूर हो गयी कि हाँ वह राजकुमारी बहुत सुन्दर थी।

उसकी खाल बहुत ही मुलायम थी और उसकी लम्बी पलकों के नीचे उसकी नीली आँखें सच्चाई से चमक रही थीं।

राजकुमार उस राजकुमारी को दिखा कर मत्स्यकन्या से बोला — "यह तुम थीं जिसने मेरी जान बचायी थी जब मैं रेत पर मरे जैसा पड़ा था।" कह कर उसने अपनी शर्मीली दुलहिन को अपनी बाँहों में ले लिया।

फिर उसने छोटी मत्स्यकन्या से कहा — "ओह मैं कितना खुश हूँ। मेरी सब इच्छाऐं पूरी हो गयीं। तुम मेरी खुशियों पर खुश होगी क्योंकि मेरे लिये तुम्हारा प्रेम बहुत ज़्यादा और वफादार है।"

छोटी मत्स्यकन्या ने राजकुमार के हाथ चूमे और उसको लगा कि उसका दिल तो पहले से ही टूट चुका है क्योंकि राजकुमार की शादी की अगली सुबह को तो वह मर ही जायेगी और फिर फेन में बदल जायेगी।

चर्च के सारे घंटे बज उठे। राजा के आदमी सारे शहर में राजकुमार की शादी की खबर फैलाने अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर चले गये। खुशबूदार तेल चॉदी के कीमती लैम्पों और हर वेदी पर जल रहा था। पुजारी लोग धूप हिला रहे थे और दुलहा और दुलहिन एक दूसरे का हाथ पकड़े बिशप का आशीर्वाद ले रहे थे।

छोटी मत्स्यकन्या ने सिल्क और सोना पहना हुआ था और दुलहिन की पोशाक की ट्रेन[59] पकड़ी हुई थी। उसके कानों में केवल उस मौके का संगीत ही गूॅज रहा था। और उसकी ऑखें उस समय केवल शादी की रस्म ही देख रही थीं।

वह उस समय केवल अपनी मौत के बारे में सोच रही थी जो उसे अगली सुबह आने वाली थी और उस सबके बारे में सोच रही थी जो उसने इस दुनियॉ में आ कर खो दिया था।

उसी शाम दुलहा और दुलहिन दोनों जहाज़ पर गये। तोपें छूट रही थीं और झंडे फहरा रहे थे। जहाज़ के बीच में एक जामुनी और सुनहरे रंग का एक खेमा लगा हुआ था। उसमें रात को दुलहिन के स्वागत के लिये शानदार काउच पड़े हुए थे।

[59] Train is the part of a bride's attire which is very long and somebody has to hold it while she is walking forward to save it going astray. See its picture above.

जहाज़ के पाल में हवा भर चुकी थी। हवा अनुकूल थी और जहाज़ समुद्र के पानी पर बहा चला जा रहा था। जब थोड़ा ॲधेरा हुआ तो बहुत सारे रंगीन लैम्प जल उठे। मल्लाह लोग डैक पर खुशी से नाचने लगे।

छोटी मत्स्यकन्या को उस समय अपना पहली बार पानी से बाहर निकलना याद आया जब वह पहली बार पानी से बाहर निकली थी और उसने पहली बार वैसा ही दृश्य देखा था।

उसने भी नाचना शुरू कर दिया। वह हवा में ऐसे कूद रही थी जैसे चिड़िया अपना शिकार पकड़ने के लिये कूदती है। वहॉ सब नाचने वालों ने उसके लिये तालियॉ बजायीं।

वह इतने शानदार तरीके से पहले कभी नहीं नाची थी। उसके कोमल पैर जमीन पर रखने से ऐसा महसूस कर रहे थे जैसे उसने अपना पैर किसी तेज़ चाकू पर रख दिया हो पर उसे इस बात की कोई परवाह नहीं थी क्योंकि इससे ज़्यादा तेज़ चाकू तो उसके सीने में पहले ही घुस चुका था।

उसको मालूम था कि यह शाम उसकी आखिरी शाम थी जब वह अपने उस राजकुमार को देख रही थी जिसके लिये उसने अपनी बहिनें छोड़ीं, अपना घर छोड़ा, अपनी सबसे मीठी आवाज छोड़ी और चुपचाप कितना दर्द सहा। और जबकि उस राजकुमार को तो यह सब मालूम भी नहीं था।

यह उसकी आखिरी शाम थी जब वह उसके साथ उसी हवा में सॉस ले रही थी या उसके साथ तारों भरी रात या गहरा समुद्र देख रही थी।

एक न खत्म होने वाली रात उसका इन्तजार कर रही थी जिसमें न वह कुछ सोच रही होगी और न ही कोई सपना देख रही होगी। उसकी कोई आत्मा नहीं थी और न ही वह कोई आत्मा अब ले पायेगी।

बस अब जहाज़ पर तो आधी रात के बाद तक केवल खुशियॉ ही खुशियॉ होंगी और वह अपने दिल में मौत के बारे में सोचती रही और उन नाचने वालों के साथ नाचती रही।

राजकुमार अपनी सुन्दर पत्नी को देख रहा था जबकि वह उसके काले बालों के साथ खेल रही थी। फिर वह उसके साथ खेमे में बैठने के लिये चला गया।

उसके बाद जहाज़ पर सब कुछ रुक गया और शान्त हो गया। केवल जहाज़ पर काम करने वाले ही जागे रहे और इधर उधर देखते रहे।

छोटी मत्स्यकन्या ने अपनी सफेद बॉहें जहाज़ के किनारे की दीवार से नीचे लटका दीं और पूर्व की तरफ सूरज की पहली किरण निकलने की तरफ देखा क्योंकि यही पहली किरन उसकी मौत बन कर आने वाली थी।

तभी उसने अपनी बहिनों को पानी में से बाहर निकलते देखा। वे भी उसी की तरह पीली पड़ी हुई थीं पर उनके लम्बे काले बाल अब हवा में नहीं हिल रहे थे क्योंकि उनको काट दिया गया था।

उन्होंने अपनी छोटी बहिन को बताया कि उन्होंने अपने बाल उस जादूगरनी को दे दिये थे ताकि वे उसके लिये उससे सहायता ले सकें। ताकि वह आज की रात न मर सके।

उन्होंने बताया कि उसने उनको एक चाकू दिया, "देखो यह रहा वह चाकू। और देखो यह चाकू तेज़ भी बहुत है। सूरज निकलने से पहले पहले तुम राजकुमार के दिल में कूद जाओ।

जब उसका गर्म खून तुम्हारे पैरों पर पड़ेगा तो वे फिर से एक साथ बढ़ कर मछली की पूँछ में बदल जायेंगे और तुम एक बार फिर से मत्स्यकन्या में बदल जाओगी।

और तुम एक बार फिर से मरने से और नमकीन समुद्री फेन बनने से पहले हमारे साथ तीन सौ साल तक रहने के लिये हमारे पास आ जाओगी। जल्दी करो। या तो तुम या फिर वह, तुम दोनों में से एक को सूरज निकलने से पहले मरना है।

हमारी दादी इस बात से बहुत दुखी है कि तुमको मरना पड़ रहा है। उसके सफ़ेद बाल इस दुख से गिर रहे हैं जैसे हमारे बाल उस जादूगरनी ने अपनी कैंची से काट लिये।

तुम जल्दी से जाओ और राजकुमार को मार कर आओ। जल्दी करो, क्या तुमको आसमान में लाल धारी दिखायी नहीं दे रही? कुछ

मिनटों में ही सूरज निकल आयेगा और फिर तुमको मरना ही पड़ेगा।”

कह कर उन्होंने उसको वह चाकू दिया और फिर दुखी हो कर एक गहरी साँस ले कर पानी में नीचे चली गयीं।

चाकू ले कर छोटी मत्स्यकन्या ने राजकुमार के खेमे का लाल परदा खींचा तो देखा कि वह सुन्दर राजकुमारी तो राजकुमार के सीने पर अपना सिर रख कर सो रही थी। वह झुकी और झुक कर उसने राजकुमार की भौंहों को चूमा।

फिर उसने आसमान की तरफ देखा जहाँ गुलाबी सुबह चमकीली और और ज़्यादा चमकीली होती जा रही थी। फिर उसने उस तेज़ चाकू की तरफ देखा। और एक बार फिर राजकुमार की तरफ देखा जो सोते में भी अपनी पत्नी का ही नाम ले रहा था।”

वह सोच रही थी, चाकू उसके हाथ में काँप रहा था कि कुछ सोच कर उसने वह चाकू दूर समुद्र के पानी में फेंक दिया। जहाँ वह जा कर गिरा वहाँ का पानी लाल हो गया। उसके गिरने से पैदा हुई बूँदें ऐसी लग रही थीं जैसे वे खून की बूँदें हों।

उसने राजकुमार की तरफ एक बार और देखा और जहाज़ से यह सोचते हुए समुद्र में कूद पड़ी कि वह अब समुद्री फेन में बदल रही है।

सूरज लहरों के ऊपर उठा और उसकी गर्म किरनें छोटी मत्स्यकन्या के ठंडे फेन के ऊपर पड़ीं पर उसको यह लगा ही नहीं

कि वह मर रही थी। उसने सूरज की तरफ देखा और देखे अपने चारों तरफ तैरते हजारों पारदर्शक लोग।"

वह उनके उस पार आते जाते जहाज़ों के सफेद पाल और आसमान में उड़ते लाल बादल देख सकती थी। उनकी आवाज बहुत मीठी थी पर वह इस दुनियाँ के कानों के सुनने के लिये बहुत दैवीय थी जैसे वे खुद भी इस दुनियाँ की आँखों से नहीं देखे जा सकते थे।

छोटी मत्स्यकन्या ने देखा कि उसका अपना शरीर भी उनके जैसा ही था और वह फेन में से और ऊपर उठती जा रही थी।

वह बोली "मैं कहाँ हूँ।" उसको अपनी ही आवाज वैसी ही दैवीय लगी जैसी कि उसके साथ वालों की थी। उस आवाज को दुनियाँ का कोई भी आदमी नकल नहीं कर सकता था।

जो उसके पास थीं उनमें से एक बोली — "हवा की बेटियों में किसी भी मत्स्यकन्या की अमर आत्मा नहीं हो सकती जब तक कि वह किसी आदमी का प्यार न जीत ले। दूसरे की ताकत पर ही उसके अमर होने की किस्मत निर्भर है।

हालाँकि हवा की बेटियों की अमर आत्मा नहीं होती फिर भी अच्छे काम कर के वे अपने लिये अमर आत्मा पा सकती हैं। हम लोग गर्म देशों में जाते हैं और वहाँ की नमकीन हवा को ठंडी बनाते हैं ताकि वहाँ के लोग उस नमकीन हवा से पैदा हुए कीड़ों से मरें नहीं।

हम उनको तन्दुरुस्त करने और फिर उनको तन्दुरुस्त बनाये रखने के लिये फूलों की खुशबू ले जाते हैं।

जब जो कुछ भी हमारे वश में अच्छा होता है वह हम तीन सौ साल तक करते रहते हैं तब हमको भी अमर आत्मा मिल जाती है और फिर हम भी आदमियों की सेवा कर सकते हैं।

तुम बेचारी मत्स्यकन्या ने भी वह सब करने की अपने पूरे दिल से कोशिश की जो हम कर रहे हैं। तुमने भी बहुत कुछ सह कर अच्छे काम कर के अपने आपको आत्माओं की दुनियाँ तक ऊपर उठा लिया। अब इसी तरह से तीन सौ साल तक अच्छे काम कर के तुम भी अमर आत्मा को पा लोगी।"

छोटी मत्स्यकन्या ने अपनी ऑखें सूरज की तरफ घुमायीं और उसको देख कर पहली बार अपनी ऑखों में ऑसू महसूस किये।

उस जहाज़ पर जहॉ वह मत्स्यकन्या राजकुमार को छोड़ आयी थी वहॉ खूब शोर हो रहा था। उसने देखा कि राजकुमार और उसकी पत्नी उसको ढूँढ रहे थे।

दुखी हो कर उन्होंने समुद्र के मोती जैसे फेन की तरफ देखा जैसे कि वे जानते हों कि वह समुद्र की लहरों में कूद पड़ी थी।

छिपे छिपे रह कर उसने राजकुमार की दुलहिन को उसके माथे पर चूमा, राजकुमार की हवा की और फिर हवा के दूसरे बच्चों के साथ एक गुलाबी बादल की तरफ चली गयी जो आसमान में तैर रहा था।

एक बोली — "इस तरह से तीन सौ साल बाद हम लोग स्वर्ग में तैरेंगे।"

दूसरी बोली — "और यह भी हो सकता है कि हम वहॉ इससे पहले ही पहुँच जायें। हम छिप कर उन आदमियों के मकानों में घुस जायेंगे जहॉ बच्चे होंगे और हर दिन जब भी हम कोई अच्छा बच्चा पायेंगे जो अपने माता पिता की खुशी होगा और उनके प्यार का अधिकारी होगा तो हमारा यह समय कम हो जायेगा।

जब हम उसके कमरे में उड़ेंगे तो बच्चे को तो पता नहीं चलेगा पर हम उसके अच्छे व्यवहार पर खुश होंगे और इस तरह से हमारे तीन सौ सालों में से एक साल कम हो जायेगा।

पर जब हम कोई शैतान और बुरा बच्चा देखेंगे तो हम ऑसू बहायेंगे और हमारे हर एक ऑसू के लिये हमारे उस समय में एक दिन बढ़ जायेगा।"

List of Stories of "Folktales of Denmark"

1. The Best Wish
2. The Wonderful Pot
3. The Toy Goose
4. It is Quite True
5. The Christmas Orange
6. Master Fool
7. Toller's Neighbors
8. Magician's Pupil
9. The Green Knight
10. The Wild Swans
11. The Little Mermaid

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना पारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर कैनेडा
जून **2022**